वेदमन्त्राः

Colophon

This document was typeset using X_1M_EX, and uses the Siddhanta font extensively. It also uses several MEX macros designed by *H. L. Prasād*. Practically all the encoding was done with the help of Ajit Krishnan's mudgala IME (http://www.aupasana.com/).

Acknowledgements

The initial ITRANS encodings of some of these texts were obtained from http://sanskritdocuments.org/ and https://sa.wikisource.org/. Thanks are also due to Ulrich Stiehl (http://sanskritweb.de/) for hosting a wonderful resource for Yajur Veda, and also generously sharing the original Kathaka texts edited by Subramania Sarma.

See also http://stotrasamhita.github.io/about/

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

1

12

19

22

25

26

28

30

33

34

अनुऋमणिका

रुद्रप्रश्नः

चमकप्रश्नः

पुरुषसूक्तम्

नारायणसूक्तम्

विष्णुसूक्तम्

भूसूक्तम्

दुर्गा सूक्तम्

श्रीसूक्तम् मेधासूक्तम्

भाग्यसूक्तम्

| पवमानसूक्तम् | 36 | | | | | | | | | | | |
|--|----|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|
| आयुष्यसूक्तम् | | | | | | | | | | | | |
| नवग्रहसूक्तम् | | | | | | | | | | | | |
| नक्षत्रसूक्तम् | 46 | | | | | | | | | | | |
| गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत् | 56 | | | | | | | | | | | |
| मृत्युञ्जयहोम-मन्त्राः | 61 | | | | | | | | | | | |
| महान्यासः | 65 | | | | | | | | | | | |
| पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् | 65 | | | | | | | | | | | |
| पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम् | 68 | | | | | | | | | | | |
| केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः | 71 | | | | | | | | | | | |
| मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः | 79 | | | | | | | | | | | |
| पादादिमूर्घान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः | 80 | | | | | | | | | | | |
| हंसगायत्री | 81 | | | | | | | | | | | |
| दिक् सम्पुटन्यासः | 82 | | | | | | | | | | | |

| ोडशाङ्गरौद्रीकरणम् | 8 |
|--|----|
| ुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः 9 | 4 |
| भात्मरक्षा | 5 |
| शेवसङ्कल्पः | 7 |
| रुषसूक्तम् | 4 |
| उत्तरनारायणम् | 6 |
| अप्रति रथम् | 7 |
| ातिपूरुषम् (सं०) | 0 |
| ातिपूरुषम् (ब्रा॰) | 11 |
| ातरुद्रीयम् (सं०) | 3 |
| ातरुद्रीयम् (ब्रा०) | 6 |
| ञ्चाङ्गम् | 8 |
| भष्टाङ्ग-नमस्काराः | 9 |
| ठघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम् | 21 |
| ठघुन्यासे देवता-स्थापनम् | |
| ज्लशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम् | |
| ोडशोपचार पूजा | |
| | |

| iv | अनुऋमणिक |
|----|----------|
| | |

| | श्रीरुद्रनाम | त्रिश | ार्त | ή. | | | • | | | | | | | | | | | | | | 127 |
|------------------|----------------|-------|------|------|----|--|---|---|---|--|---|--|-----|---|---|---|---|--|--|---|-----|
| | प्रदक्षिणम् | | | | | | | | • | | • | | • | • | • | • | • | | | • | 136 |
| | नमस्काराः | | | | • | | | | | | | | | | | | | | | | 138 |
| | चमकानुवावै | ते: ! | प्रा | र्थन | Ι. | | • | | • | | | | | | | | | | | | 141 |
| | प्रार्थना . | | | | | | • | | • | | | | | | | | | | | | 148 |
| | श्रीरुद्रजपः | | | | | | | | • | | | | | | | • | • | | | | 148 |
| | ध्यानम् . | | | | | | | | • | | • | | • | • | • | • | • | | | • | 150 |
| | रुद्रप्रश्नः . | | | | | | | | • | | | | | | | • | • | | | | 152 |
| | चमकप्रश्नः | | | | | | | • | • | | • | | • | • | • | | • | | | • | 162 |
| रुद्रपद्पाठः 172 | | | | | | | | | | | | | 172 | | | | | | | | |
| मन | त्रपष्पम | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 188 |

191

दशशान्तयः

॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति हवामहे कविं कवीनामुंपमश्रं-वस्तमम्। ज्येष्ट्रराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमंस्ते रुद्र मृन्यवं उतो त इषंवे नमंः। नमंस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नमंः॥ या त इषुंः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धनुंः। शिवा शंर्व्यां या तव तयां नो रुद्र मृहय॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तनुवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभूष्यस्तेव। शिवां गिरिश्र तां कुरु मा हि सीः पुरुषं जगत्॥ शिवेन वचंसा त्वा गिरिशाच्छांवदामसि। यथां नः सर्वमिञ्जगंदयक्ष्म स् सुमना असंत्॥ अध्यंवोचदिधवृक्ता प्रथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वां श्चम्भयन्त्सर्वांश्च यातुधान्यः॥ असौ यस्ताम्रो अंरुण उत ब्रुः सुमङ्गलंः।

ये चेमा र रुद्रा अभितों दिक्षु श्रिताः संहस्रशोऽवैषा र हेर्ड ईमहे॥ असौ योंऽवसपंति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदशन्नदंशनुदहार्यः॥ उतैनं विश्वां भूतानि स दष्टो मृंडयाति नः। नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषे॥ अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योंऽकरं नमंः। प्र मुंश्र धन्वंनस्त्व-मुभयोरार्ह्नियोर्ज्याम्॥ याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप। अवतत्य धनुस्त्व सहसाक्ष शतेषुधे॥ निशीर्य शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव। विज्यं धनुंः कपर्दिनो विशंल्यो बाणंवा उत्॥ अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निषङ्गिथेः। या तें हेतिर्मींदुष्टम हस्तें बभूवं ते धर्नुः॥ तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिन्युज। नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवे॥ उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने। परि ते धन्वंनो हेतिरुस्मान्वृंणक्तु विश्वतंः॥ अथो य इंषुधिस्तवऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥१॥

नमंस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं

त्रिपुरान्तकार्य त्रिकालाग्निकालार्य कालाग्निरुद्रायं नीलकुण्ठार्य मृत्युञ्जयार्य सर्वेश्वरायं सदाशिवार्य श्रीमन्महादेवाय नर्मः॥

नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्यें दिशां च पत्ये नमो नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पत्ये नमो नमः सस्पिअराय त्विषीमते पथीनां पतंये नमो नमों बस्रुशायं विव्याधिनेऽन्नांनां पतंये नमो नमो हरिंकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतंये नमो नमों भवस्यं हेत्यै जगंतां पतंये नमों नमों रुद्रायांतताविने क्षेत्राणां पत्रये नमो नर्मः सूतायाहंन्त्याय वनानां पत्रये नमो नमो रोहिंताय स्थपतंये वृक्षाणां पतंये नमो नमों मित्रणे वाणिजाय कक्षाणां पत्ये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषंधीनां पतंये नमो नमं उच्चेर्घोषायाऋन्दयंते पत्तीनां पत्तेये नमो नमेः कृत्स्रवीताय धावते सत्वेनां पत्तेये नर्मः॥२॥

नमः सहमानाय निव्याधिनं आव्याधिनीनां पत्तेये नमो नमः

ककुभायं निष्क्षिणें स्तेनानां पतंये नमो नमों निषक्षिणं इषुधिमते तस्केराणां पत्रंये नमो नमो वश्चंते परिवर्श्चते स्तायूनां पतंये नमो नमों निचेरवें परिचरायारंण्यानां पतंये नमो नर्मः सृकाविभ्यो जिघा ५ सन्द्यो मुष्णतां पत्रंये नमो नमों ऽसिमद्र्यो नक्तं चरेद्धः प्रकृन्तानां पतंये नमो नमे उष्णीषिणे गिरिच्रायं कुलुश्चानां पत्ये नमो नम इषुंमन्धो धन्वाविभ्यंश्च वो नमो नमें आतन्वानेभ्यः प्रतिदर्धानेभ्यश्च वो नमो नमं आयच्छंन्द्यो विसृजन्द्यंश्च वो नमो नमोऽस्यंन्द्यो विध्यंत्र्यश्च वो नमो नम आसीनेभ्यः शयांनेभ्यश्च वो नमो नमंः स्वपद्धो जाग्रंद्राश्च वो नमो नमस्तिष्ठंद्र्यो धावंद्राश्च वो नमो नमें सभाभ्यंः सभापंतिभ्यश्च वो नमो नमो अश्वेभ्योऽश्वंपतिभ्यश्च वो नर्मः॥३॥

नमं आव्याधिनींभ्यो विविध्यंन्तीभ्यश्च वो नमो नम् उगंणाभ्यस्तृ १ हृतीभ्यंश्च वो नमो नमों गृत्सेभ्यो गृत्सपंतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेंभ्यो व्रातंपितिभ्यश्च वो नमो नमों गुणेभ्यों गुणपंतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो महन्द्राः, श्रुष्ट्रकेभ्यंश्च वो नमो नमो रिथभ्योऽर्थभ्यंश्च वो नमो नमो रिथभ्योऽर्थभ्यंश्च वो नमो नमो रिथभ्योऽर्थभ्यंश्च वो नमो नमो नमो रिथभ्यो रथपितिभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यंश्च वो नमो नमः, श्रुत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यंश्च वो नमो नमस्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यंश्च वो नमो नमः कुलांलभ्यः कुमिर्भ्यश्च वो नमो नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यंश्च वो नमो नमं इषुकृद्धो धन्वकृद्धांश्च वो नमो नमो मृग्युभ्यः श्विनिभ्यंश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपंतिभ्यश्च वो नमोः॥४॥

नमों भ्वायं च रुद्रायं च नमः श्वांयं च पशुपतंयं च नमो नीलंग्रीवाय च शितिकण्ठांय च नमः कप्रिंने च व्यंप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षायं च श्तधंन्वने च नमो गिरिशायं च शिपिविष्टायं च नमों मीदुष्टंमाय चेषुंमते च नमों हुस्वायं च वामनायं च नमों बृह्ते च वर्षीयसे च नमों वृद्धायं च संवृध्वंने च नमो अग्रियाय च प्रथमायं च नमं आशवं चाजिरायं च नमः शीघ्रंयाय च शीभ्यांय च नमं अम्र्यांय चावस्वन्यांय च नमः स्रोतस्यांय च द्वीप्यांय

च॥५॥

नमों ज्येष्ठायं च किन्छायं च नमः पूर्वजायं चापर्जायं च नमों मध्यमायं चापगुल्भायं च नमों जघन्यांय च बुिंध्रयाय च नमः सोभ्यांय च प्रतिसर्याय च नमो याम्यांय च क्षेम्यांय च नमं उर्व्यांय च खल्यांय च नमः श्लोक्यांय चावसान्यांय च नमो वन्यांय च कक्ष्यांय च नमः श्लवायं च प्रतिश्लवायं च नमे आशुषेणाय चाशुरंथाय च नमः शूरांय चावभिन्दते च नमों वर्मिणे च वर्ष्णथेने च नमों बिल्मने च कव्चिने च नमः श्लतायं च श्रुतसेनायं च॥६॥

नमों दुन्दुभ्यांय चऽऽहन्नयांय च नमों धृष्णवें च प्रमृशायं च नमों दूतायं च प्रहिंताय च नमों निषक्षिणें चेषुधिमतें च नमंस्तीक्ष्णेषंवे चऽऽयुधिनें च नमेः स्वायुधायं च सुधन्वंने च नमः स्रुत्यांय च पथ्यांय च नमेः काट्यांय च नीप्यांय च नमः सूद्यांय च सर्स्यांय च नमों नाद्यायं च वैशन्तायं च नमः कूप्यांय चाव्ट्यांय च नमो वर्ष्यांय चाव्र्ष्यायं च नमों मेध्यांय च विद्युत्यांय च नमं ई्रियांय चऽऽत्प्यांय च नमो वात्यांय च रेष्मियाय च नमों वास्त्व्यांय च वास्तुपायं च॥७॥

नमः सोमाय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुणायं च नमंः शङ्गायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमें अग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमों हुन्ने च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हिरेंकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः शम्भवं च मयोभवं च नमः शङ्करायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च नम्स्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरंणाय चोत्तरंणाय च नमः आतार्याय चऽऽलाद्यांय च नमः शष्यांय च फेन्यांय च नमः सिकत्यांय च प्रवाह्यांय च ॥८॥

नमं इरिण्यांय च प्रपृथ्यांय च नमंः कि शिलायं च क्षयंणाय च नमंः कपर्दिनं च पुलस्तयं च नमो गोष्ठ्यांय च गृह्यांय च नमस्तल्प्यांय च गेह्यांय च नमंः काट्यांय च गह्वरेष्ठायं च नमों हृद्य्याय च निवेष्य्याय च नमेः पारस्व्याय च रजस्याय च नमः शुष्क्याय च हिर्त्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नमें ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमेः पण्याय च पण्शद्याय च नमोऽपगुरमाणाय चाभिघ्नते च नमें आख्विदते च प्रख्विदते च नमों वः किरिकेभ्यो देवाना हृ हृदयेभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमं आनिरहतेभ्यो नमं आमीवत्केभ्यः॥९॥

द्रापे अन्धंसस्पते दिरंद्रज्ञीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेमांऽरो मो एषां किं चनऽऽमंमत्॥ या तें रुद्र शिवा तनः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसें॥ इमा रुद्रायं त्वसें कप्रदिनें क्ष्यद्वीराय प्रभेरामहे मृतिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नों रुद्रोत नो मयंस्कृधि क्षयद्वीराय नमंसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तदंश्याम् तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नो महान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षंन्तमृत मा ने उिथ्वतम्।

मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवो रुद्र रीरिषः॥ मा नंस्तोके तनये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितो वंधीर्हिवष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आरात्तं गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्रमस्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रह्मधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हांः॥ स्तुहि श्रुतं गेर्तुसदं युवानं मृगं न भीममुंपहलुमुग्रम्। मृडा जीरेत्रे रुद्र स्तवानो अन्यं ते अस्मन्नि वंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्त परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मघवंद्रयस्तनुष्व मीढ्वंस्तोकाय तर्नयाय मृडय॥ मीढुंष्टम शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। परमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आ चंर पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र १ हेतयोऽन्यम्स्मन्नि वंपन्तु ताः॥ सहस्रांणि सहस्रधा बांहुवोस्तवं हेतयः। तासामीशांनो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥१०॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषा ५ सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ अस्मिन् महत्यंर्णवेंऽन्तरिक्षे भवा अधि॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठौः शर्वा अधः, क्षंमाचराः॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर् रुद्रा उपंश्रिताः॥ ये वृक्षेषुं सस्पिञ्जरा नीलंग्रीवा विलोहिताः॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासंः कपर्दिनंः॥ ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्॥ ये पथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यव्युधंः॥ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणंः॥ य एतावंन्तश्च भूयार्सश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे॥ तेषा ५ सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ नमों रुद्रेभ्यो ये पृंथिव्यां येंऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामन्नं वातों वर्षमिषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भें दधामि॥११॥

त्र्यंम्बकं यजामहे सुग्नियं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवंनाऽऽविवेश तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु॥ तमुंष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वंस्य क्षयंति भेषजस्यं।

(ऋक्) यक्ष्वामहे सौमन्सायं रुद्रं नमोंभिर्देवमसुंरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो भगवान्यं मे भगवत्तरः। अयं मैं विश्वभैषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

ये ते सहस्रंम्युतं पाशा मृत्यो मर्त्यांय हन्तंवे। तान् यज्ञस्यं मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरिस रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ चमकप्रश्नः॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंधन्तु वां गिरंः। द्युम्नैर्वाजेंभिरागंतम्॥ वाजंश्व मे प्रस्वश्च मे प्रयंतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्चं मे ऋतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं चं म आधीतं च मे वार्क्च मे मनश्च मे चक्षुंश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजंश्च मे सहंश्च म आयुंश्च मे ज्ञरा चं म आत्मा चं मे तुनूश्चं मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानि च मे परूर्ंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठमं च म् आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमंश्च मेऽम्मंश्च मे जेमा चं मे मिहुमा चं मे विर्मा चं मे प्रिथमा चं मे वृष्मा चं मे द्राघुया चं मे वृद्धं चं मे वृद्धिंश्च मे सृत्यं चं मे श्रद्धा चं मे जगंच मे धनं च मे वशंश्च मे त्विषिश्च मे श्रीडा चं मे मोदंश्च मे जातं चं मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं चं मे सुकृतं चं मे वित्तं चं मे वेद्यं च मे भूतं चं मे भविष्यचं मे सुगं चं मे सुपथं च म ऋद्धं चं मृ ऋद्धिश्च मे क्रुप्तं चं मे क्रुप्तिश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥२॥

शं चं में मयंश्व में प्रियं चं मेऽनुकामश्चं में कामंश्व में सौमन्सश्चं में भूद्रं चं में श्रेयंश्व में वस्यंश्व में यशंश्व में भगंश्व में द्रविणं च में यन्ता चं में धूर्ता चं में क्षेमंश्व में धृतिश्व में विश्वं च में महंश्व में स्विचं में ज्ञात्रं च में सूश्चं में प्रसूश्चं में सीरं च में लयश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातुंश्व में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभयं च में सुगं चं में शर्यनं च में सूषा चं में सुदिनं च मे॥३॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पयंश्व मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिग्धंश्व मे सिपीतिश्व मे कृषिश्चं मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च म औद्भिंद्यं च मे रियश्चं मे रायंश्व मे पुष्टं चं मे पुष्टिंश्व मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयंश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षिंतिश्च में कूयंवाश्च मेऽन्नं च मेऽक्षेच में ब्रीहयंश्च में यवाश्च में माषाश्च में तिलाश्च में मुद्राश्चं में खल्वाश्च में गोधूमाश्च में मुसुराश्च में प्रियङ्गंवश्च मेऽणंवश्च में श्यामाकाश्च में नीवाराश्च मे॥४॥

अश्मां च में मृत्तिंका च में गिरयंश्च में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पतियश्च में हिरंण्यं च में ऽयंश्च में सीसं च में त्रपृंश्च में श्यामं चं में लोहं चं में ऽग्निश्चं में आपंश्च में वीरुधंश्च म ओर्षध्यश्च में कृष्टपच्यं चं में ऽकृष्टपच्यं चं में ग्राम्यार्श्चं में प्शवं आर्ण्यार्श्चं युज्ञेनं कल्पन्तां वित्तं चं में वित्तिश्च में भूतं चं में भूतिश्च में वस्तुं च में वस्तिश्चं में कर्म च में शक्तिश्च में ऽर्थश्च म एमंश्च म इतिश्च में गितिश्च मे॥५॥

अग्निश्चं म् इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म् इन्द्रंश्च मे सिवता चं म् इन्द्रंश्च मे सरंस्वती च म् इन्द्रंश्च मे पूषा चं म् इन्द्रंश्च मे बृह्स्पतिश्च म् इन्द्रंश्च मे मित्रश्चं म् इन्द्रंश्च मे वर्रणश्च म् इन्द्रंश्च मे त्वष्टां च म् इन्द्रंश्च मे धाता चं म् इन्द्रंश्च मे विष्णुंश्च म् इन्द्रंश्च मेऽिश्वनौं च म् इन्द्रंश्च मे म्रुतंश्च म् इन्द्रंश्च मे विश्वें च मे देवा इन्द्रंश्च मे पृथिवी च म् इन्द्रंश्च मेऽन्तिरिक्षं च म् इन्द्रंश्च मे द्यौश्चं म् इन्द्रंश्च मे दिशंश्च म् इन्द्रंश्च मे मूर्धा च म् इन्द्रंश्च मे प्रजापंतिश्च म् इन्द्रंश्च मे॥६॥

अर्शुश्चं मे रिश्मिश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽिपंतिश्च म उपार्शुश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्श्चं मे मृन्थी चं म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वानुरश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽितग्राह्माश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वृतीयांश्च मे माह्नेद्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वृतश्चं मे पौष्णश्चं मे पालीवृतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥७॥

इध्मश्चं मे बहिश्चं मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्रुचंश्च मे चमुसाश्चं मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वाश्चं मेऽिध्षवणे च मे द्रोणकलुशश्चं मे वायुव्यांनि च मे पूत्भृचं म आधवनीयंश्च मु आग्नींग्नं च मे हिव्धांनं च मे गृहाश्चं मे सदंश्च मे पुरोडाशांश्च मे पचताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाकारश्चं मे॥८॥

अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यंश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शक्वंरीरङ्गलंयो दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृक्चं मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यज्ञंश्च मे दीक्षा च मे तपंश्च म ऋतुश्चं मे वृतं च मेऽहोरात्रयौवृंष्ट्या बृंहद्रथन्तरे च मे यज्ञेनं कल्पेताम्॥९॥

गर्भाश्च मे वृत्साश्चं मे त्र्यविश्व मे त्र्युवी चं मे दित्युवाचं मे दित्यौही चं मे पश्चाविश्च मे पश्चावी चं मे त्रिवृत्सश्चं मे त्रिवृत्सा चं मे तुर्युवाचं मे तुर्यौही चं मे पष्टुवाचं मे पष्टौही चं म उक्षा चं मे वृशा चं म ऋष्भश्चं मे वेहचं मेऽनृङ्वां चं मे धेनुश्चं म आयुर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेनं कल्पतां चश्चं एयज्ञेनं कल्पतां चश्चं यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतां यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतां यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञोनं वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं

कल्पताम्॥१०॥

एकां च मे तिस्रश्चं मे पश्चं च मे सप्त चं मे नवं च म एकांदश च मे त्रयोंदश च मे पश्चंदश च मे सप्तदंश च मे नवंदश च म एकंवि श्रातिश्च मे त्रयोवि शतिश्च मे पश्चवि शतिश्च मे सप्तवि श्वितिश्च मे नवंवि शातिश्च म एकंत्रि शच मे त्रयंस्त्रि शच मे चतंस्त्रश्च मेऽष्टौ चं मे द्वादंश च मे षोडंश च मे विश्शतिश्चं मे चतुंर्वि १ शतिश्च मेऽष्टावि १ शतिश्च मे द्वात्रि १ शच मे पद्गिरंशच मे चत्वारिर्शचं मे चतुंश्चत्वारिर्शच मेऽष्टाचंत्वारि श्रच मे वाजंश्च प्रसवश्चांपिजश्च ऋतुंश्च सुवंश्व मूर्धा च व्यक्षियश्चान्त्यायनश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवंनश्चार्धिपतिश्च॥११॥

इडां देवहूर्मनुंयज्ञनीर्बृह्स्पतिंरुक्थामदानिं शश्सिषद्विश्वेदेवाः सूँक्तवाचः पृथिवि मातुर्मा मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं वदिष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यासश् शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु 18 चमकप्रश्नः

शोभायै पितरोऽनुंमदन्तु॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ पुरुषसूक्तम् ॥

सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ पुरुष एवेद सर्वम्। यद्भृतं यच् भव्यम्। उतामृतुत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहंति॥ पुतावानस्य महिमा। अतो ज्यायाईश्च पूर्रुषः। पादौंऽस्य विश्वां भूतानिं। त्रिपादंस्यामृतंं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुर्रुषः। पादौंऽस्येहाऽऽभंवात्पुनंः। ततो विश्वङ्कांऋामत्। साशनानशने अभि॥ तस्माँद्विरार्डजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृश्चाद्भृमिमथों पुरः॥ यत्पुरुंषेण हविषाँ। देवा युज्ञमतंन्वत। वुसुन्तो अस्यऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शुरद्धविः॥ सप्तास्यऽऽसन् परिधर्यः। त्रिः सप्त समिर्धः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वानाः। अबंध्रन् पुरुषं पृशुम्॥ तं युज्ञं बुर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमंग्रतः। तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ तस्मौद्यज्ञात्सेर्वहुतः। सम्भृतं पृषद्यज्यम्। पृशू इस्ता इश्चेत्रे

वायुव्यान्। आरुण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ तस्मौद्यज्ञात्संर्वहूतंः। ऋचः सामानि जिज्ञरे। छन्दा रेसि जिज्ञिरे तस्मौत्। यजुस्तस्मादजायत॥ तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोभयादंतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माजाता अंजावयः॥ यत्पुरुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुख्ं किमंस्य कौ बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ ब्राह्मणौंऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यहैश्यः। पुन्धा । शूद्रो अंजायत॥ चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रंश्वाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायत॥ नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समंवर्तत। पद्भां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथां लोकार अंकल्पयन्॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंर्णं तमंसस्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरं। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥ धाता पुरस्ताद्यमुंदाजहारं। शकः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भंवति। नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ यज्ञेनं यज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते ह नाकं महिमानंः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ अद्धः सम्भूतः पृथिव्यै रसाँच। विश्वकर्मणः समवर्तताधि। तस्य त्वष्टां विदधंद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रै॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंणं तमसुः परस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्थां विद्यतेऽयंनाय॥ प्रजापंतिश्चरित गर्भे अन्तः। अजायंमानो बहुधा विजायते। तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदिमच्छन्ति वेधसंः॥ यो देवेभ्य आतंपति। यो देवानां पुरोहिंतः। पूर्वी यो देवेभ्यों जातः। नमों रुचाय ब्राह्मये॥ रुचं ब्राह्मं जनयंन्तः। देवा अग्रे तदंब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्यं देवा असन् वशें॥ ह्रीश्चं ते लक्ष्मीश्च पत्यौं। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षेत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मेनिषाण। अमुं मंनिषाण। सर्वं मनिषाण॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ नारायणसूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् – ४/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – १३)

सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंम्भुवम्। विश्वं नारायंणं देवमक्षरं पर्मं पदम्। विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणः हरिम्। विश्वंमेवेदं पुरुष्ट्रिक्ष्मपुपंजीवित। पितं विश्वंस्यऽऽत्मेश्वंरः शाश्वंतः शिवमंच्युतम्। नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मांनं परायंणम्। नारायणपंरो ज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायण परं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः। नारायण परः। नारायणः परः। यचं किश्चिंश्चंगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा॥

अन्तंर्बहिश्चं तत्स्वं व्याप्य नारायणः स्थितः। अनेन्तमव्यंयं कृवि संमुद्रेऽन्तं विश्वशंम्भुवम्। पृद्यकोश प्रतीकाश्र् हृदयं चाप्यधोमुंखम्। अधो निष्ट्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुंपिर् तिष्ठंति। ज्वालुमालाकुंलं भाती विश्वस्यऽऽयत्नं महत्। सन्तंत शिलाभिंस्तुलम्बत्याकोश्रसन्निंभम्। तस्यान्ते सुष्रिर सूक्ष्मं तस्मिन्त्स्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानं-

ग्निर्विश्वाचिंविश्वतोमुखः। सोऽग्रंभुग्विभंजन्तिष्ठन्नाहांरमज्रः किवः। तिर्यगूर्ध्वमधः शायी रश्मयंस्तस्य सन्तता। सन्तापयंति स्वं देहमापांदतलमस्तंकः। तस्य मध्ये विह्निशिखा अणीयौर्ध्वा व्यवस्थितः। नीलतोयदं-मध्यस्थाद्विद्युष्ठंखेव भास्वंरा। नीवारशूकंवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपंमा। तस्याः शिखाया मध्ये प्रमात्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवः स हिरः सेन्द्रः सोऽक्षंरः पर्मः स्वराट्॥ ऋतः सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गंलम्। ऊर्ध्वरंतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः।

नारायणायं विदाहं वासुदेवायं धीमहि। तन्नों विष्णुः प्रचोदयात्।

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजा रेस् यो अस्कंभायदुत्तर स्थर्स्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुंगायो विष्णोर्राटंमसि विष्णोः पृष्ठमंसि विष्णोः श्रत्रेंस्थो विष्णोः स्यूरेसि विष्णोर्धुवमंसि वैष्णवमंसि विष्णंवे त्वा॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ विष्णुसूक्तम्॥

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवीचं यः पार्थिवानि विमुमे रजार्रस् यो अस्कंभायदुत्तंर स्प्रिं विचक्रमाणस्त्रेधोरुंगायः॥ तदंस्य प्रियम्भिपाथों अश्याम्। नरो यत्रं देवयवो मदंन्ति। उरुक्रमस्य स हि बन्धुंरित्था। विष्णोः पदे पर्मे मध्व उत्थ्यः। प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमंणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वां। परो मात्रया तनुवां वृधान। न ते महित्वमन्वंश्रुवन्ति॥

उभे तें विद्य रजंसी पृथिव्या विष्णों देवत्वम्। प्रमस्यं विथ्मे। विचेक्रमे पृथिवीमेष एताम्। क्षेत्रांय विष्णुर्मनुषे दशस्यन्। ध्रुवासों अस्य की्रयो जनांसः। उरुक्षिति र सुजनिंमाचकार। त्रिर्देवः पृथिवीमेष एताम्। विचंक्रमे शृतर्चंसं महित्वा। प्र विष्णुरस्तु त्वस्स्तवीयान्। त्वेष इद्यंस्य स्थविंरस्य नामं॥

॥भूसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय संहिता काण्डम् - १/प्रपाठकः - ५/अनुवाकः - ३)

भूमिर्भूमा द्यौर्वरिणाऽन्तिरेक्षं महित्वा। उपस्थे ते देव्यदितेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायाऽऽदंधे। आऽयङ्गोः पृश्लिरक्रमीदसंनन्मातरं पुनंः। पितरं च प्रयन्त्सुवंः। त्रिष्शद्धाम् वि रोजित् वाक्पंतङ्गायं शिश्रिये। प्रत्यंस्य वह द्युभिः। अस्य प्राणादंपानृत्यंन्तश्चरित रोचना। व्यंख्यन् महिषः सुवंः॥

यत्त्वं कुद्धः पंरोवपं मृन्युना यदवंत्या। सुकल्पंमग्ने तत्तव पुनस्त्वोद्दीपयामिस। यत्ते मृन्युपंरोप्तस्य पृथिवीमनुं दध्वसे। आदित्या विश्वे तद्देवा वसंवश्च समाभंरन्। मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यं विच्छित्रं यज्ञ समिमं दंधातु। बृहस्पतिंस्तनुतामिमं नो विश्वे देवा इह मांदयन्ताम्। सप्त ते अग्ने समिधंः सप्त जिह्वाः सप्तर्षयः सप्त धामं प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वां यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वा घृतेनं। पुनंक्जां नि वर्तस्व पुनंरग्न इषाऽऽयंषा। पुनंनः पाहि

विश्वतः। सह रय्या नि वेर्तस्वाऽग्रे पिन्वंस्व धारंया। विश्विपस्त्रंया विश्वतस्परिं। लेकः सलेकः सुलेकस्ते नं आदित्या आज्यं जुषाणा विंयन्तु केतः सकेतः सुकेतस्ते नं आदित्या आज्यं जुषाणा विंयन्तु विवंस्वाः अदिंतिर्देवंजूतिस्ते नं आदित्या आज्यं जुषाणा विंयन्तु।

॥दुर्गा सूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् – ४/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – २)

जातवेदसे सुनवाम् सोमं मरातीयतो निर्दहाति वेदः। स नः पर्षदितं दुर्गाणि विश्वां नावेव सिन्धं दुरिताऽत्यग्निः॥१॥ तामृग्निवंणां तपंसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कंर्मफलेषु जुष्टांम्। दुर्गां देवी श्रारंणमृहं प्रपंद्ये सुतरंसि तरसे नमः॥२॥ अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्थस्वस्तिभिरतिं दुर्गाणि विश्वां। पृश्वं पृथ्वी बंहुला नं उर्वी भवां तोकाय तनयाय शं योः॥३॥ विश्वांनि नो दुर्गहां जातवेदः सिन्धं न नावा दंरिताऽतिंपर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनंसा गृणानौंऽस्माकं बोध्यविता तनूनांम्॥४॥

पृत्ना जित्र सहंमानमुग्रम्गि हेवेम पर्माथ्स्थस्थांत्। स नंः पर्षदितं दुर्गाणि विश्वा क्षामंद्देवो अति दुरितात्यग्निः॥५॥

प्रत्नोषिं कुमीड्यों अध्वरेषुं सुनाच्च होता नव्यंश्च सित्सं।

स्वाश्वांग्ने त्नुवं पिप्रयंस्वास्मभ्यं च सौभंगमायंजस्व॥६॥ गोभिर्जुष्टंमयुजो निषिक्तं तवेन्द्र विष्णोरनुसश्चरेम। नाकस्य पृष्ठमभि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम्॥७॥

> कात्यायनायं विद्महें कन्यकुमारिं धीमहि। तन्नों दुर्गिः प्रचोदयाँत्॥

॥श्रीसूक्तम्॥

हिरंण्यवर्णां हिरंणीं सुवर्णरंजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातेवेदो म् आवह॥१॥

तां म् आवंह् जातंवेदो लुक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानुहम्॥२॥

अश्वपूर्वां रंथम्ध्यां ह्स्तिनांदप्रबोधिनीम्। श्रियंं देवीमुपंह्वये श्रीमदिवीर्जुषताम्॥३॥

कां सोऽस्मितां हिर्रण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तर्पयंन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवंणां तामिहोपंह्वये श्रियम्॥४॥ चन्द्रां प्रेभासां यशसा ज्वलंन्तीं श्रियं लोके देवजुंष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शर्रणमहं प्रपंद्येऽलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृणे॥५॥

आदित्यवंर्णे तप्सोऽधिजातो वनस्पितस्तवं वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुंदन्तु मायान्तरायाश्चे बाह्या अलक्ष्मीः॥६॥ उपैतु मां देवस्खः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥

क्षुत्पिपासामेलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नांशयाम्यहम्। अभूतिमसंमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥८॥

गुन्धद्वारां दुंराधर्षां नित्यपुंष्टां करीषिणींम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियम्॥९॥

मनसः काममाकूतिं वाचः स्त्यमंशीमहि। पृश्नां रूपमन्नस्य मिय श्रीः श्रयतां यशः॥१०॥

कुर्दमेन प्रजाभूता मृयि सम्भंव कुर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥११॥

आपंः सृजन्तुं स्निग्धानि चिक्रीत वंस मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियंं वासयं मे कुले॥१२॥

आद्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म् आवह॥१३॥ आर्द्रां यः करिणीं यृष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातवेदो म् आर्वह॥१४॥ तां म् आर्वह् जातवेदो लक्ष्मीमनेपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वांन् विन्देयं पुरुषान्हम्॥१५॥

> मृहादेव्यै चं विद्महें विष्णुपृत्यै चं धीमहि। तन्नों लक्ष्मीः प्रचोदयाँत्॥१६॥

॥ मेधासूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् – ४/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – ४१-४४)

मेधादेवी जुषमांणा न आगाँद्विश्वाची भद्रा सुंमनस्यमाना। त्वया जुष्टां नुदमाना दुरुक्तांन् बृहद्वंदेम विदर्थे सुवीराः। त्वया जुष्टं ऋषिर्भवति देवि त्वया ब्रह्मांऽऽगतश्रींरुत त्वया। त्वया जुष्टश्चित्रं विनदते वसु सानों जुषस्व द्रविणो न मेधे॥ मेधां म इन्द्रों ददातु मेधां देवी सर्रस्वती। मेधां में अश्विनांवुभावार्धत्तां पुष्कंरस्रजा। अप्सरासुं च या मेधा गंन्थर्वेषुं च यन्मनंः। दैवीं मेधा सरस्वती सा मां मेधा सुरभिर्जुषता इ स्वाहाँ॥ आ मां मेधा सुरभिर्विश्वरूपा हिरंण्यवर्णा जगंती जगम्या। ऊर्जस्वती पर्यसा पिन्वंमाना सा मां मेधा सुप्रतींका जुषन्ताम्। मियं मेधां मियं प्रजां मय्यग्निस्तेजों दधातु मियं मेधां मियं प्रजां मयीन्द्रं इन्द्रियं दंधातु मियं मेधां मियं प्रजां मिय सूर्यो भ्राजों दधातु।

॥भाग्यसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् - ३/प्रश्नः - ८/अनुवाकम् - ९)

प्रातर्गि प्रातरिन्द्र १ हवामहे प्रातर्मित्रा वरुणा प्रातरिश्वना। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोमंमुत रुद्र हुवेम॥ प्रातुर्जितं भगंमुग्र हुवेम वयं पुत्रमिदेतेर्यो विधर्ता। आर्द्धश्चिद्यं मन्यंमानस्तुरश्चिद्राजां चिद्यं भगंं भुक्षीत्याहं॥२॥ भग प्रणेतर्भग सत्यंराधो भगेमां धियमुदंवददंन्नः। भगप्रणों जनय गोभिरश्वैर्भगुप्रनृभिनृवन्तः स्याम॥३॥ उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अहाँम्। उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवाना र सुमतौ स्याम॥४॥ भगं एव भगवा । अस्तु देवास्तेनं वयं भगवन्तः स्याम। तं त्वा भग सर्व इञ्जोहवीमि सनो भग पुर एता भेवेह॥५॥

समध्वरायोषसोऽनमन्त दधिकावेव शुचेये प्दायं। अर्वाचीनं वंसुविदं भगन्नो रथमिवाश्वांवाजिन् आंवहन्तु॥६॥ अश्वांवतीगोंमंतीर्न उषासों वीरवंतीः सदंमुच्छन्तु भुद्राः। घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीनायूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥७ यो माँउग्ने भागिन र सन्तमथाभागं चिकीर्षति। अभागमंग्ने तं कुरु मामंग्ने भागिनं कुरु॥८॥

॥ पवमानसूक्तम् ॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् – १/प्रश्नः – ४/अनुवाकः – ८) (तैत्तिरीय संहिता काण्डम् – ५/प्रपाठकः – ६/अनुवाकः – १)

ॐ तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञपंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

द्धिकाव्यणो अकारिषम्। जिष्णोरश्वंस्य वाजिनः। सुर्भिनो मुखांकरत्। प्रण् आयूर्धिष तारिषत्।

आपो हि ष्ठा मंयो भुवस्ता नं ऊर्जे दंधातन। महेरणांय चक्षंसे। यो वंः शिवतमो रसस्तस्यं भाजयते ह नंः। उश्तीरिव मातरंः। तस्मा अरङ्ग मामवो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपो जनयंथा च नः॥

हिरंण्यवर्णाः शुचंयः पावका यासुं जातः कृश्यपो यास्विन्द्रेः। अग्निं या गर्भं दिधेरे विरूपास्ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥ यासा १ राजा वर्रणो याति मध्ये सत्यानृते अंवपश्यं जनानाम्। मधुश्चतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥

यासाँ देवा दिवि कृण्वन्ति भृक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति। याः पृथिवीं पर्यसोन्दन्ति शुक्रास्ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥

शिवनं मा चक्षुंषा पश्यताऽऽपः शिवयां तनुवोपं स्पृशत त्वचंं मे। सर्वारं अग्नीर रंप्सुषदों हुवे वो मिय वर्चो बलुमोजो नि धंत्त॥

पर्वमानः सुवर्जनः। प्वित्रेण् विचंर्षणिः। यः पोता स प्नातु मा। पुनन्तुं मा देवज्नाः। पुनन्तु मनेवो धिया। पुनन्तु विश्वं आयवंः। जातंवेदः प्वित्रंवत्। प्वित्रंण पुनाहि मा। शुक्रेणं देवदीद्यंत्। अग्रे कत्वा कतूर रन्। यत्तं प्वित्रंम्चिषिं। अग्रे वितंतमन्त्रा। ब्रह्म तेनं पुनीमहे। उभाभ्यां देवसवितः। प्वित्रंण स्वेनं च। इदं ब्रह्मं पुनीमहे। वैश्वदेवी पुनती देव्यागांत्। यस्ये बह्वीस्तनुवों वीतपृष्ठाः। तया मदंन्तः सधमाद्येषु। वय एस्यांम पतंयो रयीणाम्। वैश्वानरो रश्मिभिर्मा पुनातु। वार्तः प्राणेनेषिरो मंयो भूः। द्यावापृथिवी पर्यसा पर्योभिः। ऋतावंरी युज्ञिये मा पुनीताम्। बृहद्भिः सवितस्तृभिः। वर्षिष्ठैर्देवमन्मंभिः। अग्ने दक्षैः पुनाहि मा। येनं देवा अपुनत। येनऽऽपी दिव्यङ्कर्शः। तेनं दिव्येन ब्रह्मणा। इदं ब्रह्मं पुनीमहे। यः पांवमानीरध्येतिं। ऋषिंभिः सम्भृंत रसम्। सर्व रस पूतमंश्राति। स्वदितं मांतिरश्वंना। पावमानीर्यो अध्येतिं। ऋषिभिः सम्भृत् रसम्। तस्मै सरस्वती दुहे। क्षीर १ सर्पिर्मधूंदकम्॥ पावमानीः स्वस्त्ययंनीः। सुदुघाहि पर्यस्वतीः। ऋषिंभिः सम्भृतो रसंः। ब्राह्मणेष्वमृत ५ हितम्। पावमानीर्दिशन्तु नः। इमं लोकमथौ अमुम्। कामान्त्समंधयन्तु नः। देवीर्देवैः समाभृताः। पावमानीः स्वस्त्ययंनीः। सुद्घाहि घृंतश्चतंः। ऋषिंभिः सम्भृंतो रसंः। ब्राह्मणेष्वमृत रे हितम्। येनं देवाः पवित्रेण। आत्मानं पुनते सदाँ। तेनं सहस्रंधारेण। पावमान्यः पुनन्तु मा। प्राजापृत्यं पिवत्रम्। श्तोद्यांमः हिर्ण्मयम्। तेनं ब्रह्म विदो व्यम्। पूतं ब्रह्मं पुनीमहे। इन्द्रंः सुनीती सहमां पुनातु। सोमंः स्वस्त्या वरुणः समीच्याँ। यमो राजाँ प्रमृणाभिः पुनातु मा। जातवेदा मोर्जयंन्त्या पुनातु। भूर्भृवः सुवंः। तच्छं योरावृणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदेँ। शं चतुंष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ आयुष्यसूक्तम्॥

यो ब्रह्मा ब्रह्मण उंज्ञहार प्राणैः शिरः कृत्तिवासाँः पिनाकी। ईशानो देवः स न आयुर्दधातु तस्मै जुहोमि हविषां घृतेन॥१॥

विभ्राजमानः सरिरस्य मध्याद्रोचमानो घर्मरुचिर्य आगात्। स मृत्युपाशानपनुंद्य घोरानिहायुषेणो घृतमंत्तु देवः॥२॥

ब्रह्मज्योतिर्ब्रह्मपत्नीषु गुर्भं युमाद्धात् पुरुरूपं जयुन्तम्। सुवर्णरम्भग्रहमंकमुर्च्यं तुमायुषे वर्धयामो घृतेन॥३॥

श्रियं लक्ष्मीमौबलामंम्बिकां गां षष्ठीं च यामिन्द्रसेनेंत्युदाहुः। तां विद्यां ब्रह्मयोनि स्स्पामिहायुषे तर्पयामों घृतेन॥४॥ दाक्षायण्यः सर्वयोन्यः स योन्यः सहस्रशो विश्वरूपां विरूपाः। ससूनवः सपतयः सयूथ्या आयुषेणो घृतमिदं जुष्नताम्॥५॥

दिव्या गणा बहुरूपाँः पुराणा आयुश्छिदो नः प्रमश्नंनतु वीरान्। तेभ्यो जुहोमि बहुधां घृतेन मा नः प्रजा॰ रीरिषो मोत वीरान्॥६॥

एकः पुरस्ताद्य इदं बभूव यतो बभूव भुवनंस्य गोपाः। यमप्येति भुवन॰ साम्पराये स नो हविर्घृतमिहायुषेत्तु देवः॥७॥

वसून् रुद्रांनादित्यान् मरुतोऽथ साध्यान् ऋभून् यक्षान् गन्धर्वाङ्श्च पितृङ्श्च विश्वान्। भृगून् सर्पाङ्श्चाङ्गिरसोऽथ सर्वान् घृत्र् हुत्वा स्वायुष्या महयाम शृश्वत्॥८॥

विष्णो त्वं नो अन्तंमः शर्मं यच्छ सहन्त्य। प्रतेधारां मधुश्रुत उथ्सं दुहते अक्षितम्॥९॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ नवग्रहसूक्तम्॥

आ सत्येन रजंसा वर्तमानो निवेशयंत्रमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो यांति भुवंना विपश्यन्। अग्निं दूतं वृंणीमहे होतांरं विश्ववंदसम्। अस्य यज्ञस्यं सुऋतुम्॥ येषामीशे पशुपतिः पशूनां चतुंष्पदामुत चं द्विपदाँम्। निष्क्रींतोऽयं यज्ञियं भागमेंतु रायस्पोषा यजंमानस्य सन्तु॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय आदित्याय नमः॥१॥ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार रेता रसि जिन्वति। स्योना पृथिवि भवां उनृक्षरा निवेशंनी। यच्छांनः शर्म सप्रथाः। क्षेत्रंस्य पतिना वय हिते नेव जयामसि। गामश्वं पोषयिल्वा स नों मृडातीदशें॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय अङ्गारकाय नमः॥२॥ प्रवंः शुक्रायं भानवें भरध्व हव्यं मृतिं चाग्नये सुपूतम्॥ यो दैव्यांनि मानुषा जन्र्ध्यन्तर्विश्वांनि विद्यं ना जिगांति॥

इन्द्राणीमासु नारिषु सुपत्नीमहमेश्रवम्। न ह्यंस्या अप्रश्चन जरसा मरंते पतिः॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवांमहे जनेंभ्यः। अस्माकंमस्तु केवंलः॥ अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय शुक्राय नमः॥३॥

आप्यांयस्व समेतु ते विश्वतः सोम् वृष्णियम्। भवा वार्जस्य सङ्ग्थे॥ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वांनि भेषजा। अग्निं चं विश्वशंम्भुवमापश्च विश्वभेषजीः। गौरी मिमाय सिल्लानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापदी नवंपदी बभूवृषीं सहस्रांक्षरा पर्मे व्योमन्। अधिदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय सोमाय नमः॥४॥

उद्बंध्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्येनिष्टापूर्ते स॰ सृंजेथाम्यं च। पुनंः कृण्व ॰ स्त्वां पितरं युवांनम्न्वाता ॰ सीत्विय तन्तुंमेतम्॥ इदं विष्णुर्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पदम्। समूंढमस्यपा॰ सुरे॥ विष्णों र्राटंमिस् विष्णों पृष्ठमंसि विष्णोः श्रश्रेंस्थो विष्णोः स्यूरंसि विष्णों र्वां विष्णों अधेदेवता प्रत्यिधदेवता सहिताय बुधाय नमः॥५॥

बृहंस्पते अतियदर्यो अहींद्विमद्विभाति ऋतुंमञ्जनेषु। यद्दीदयच्छवंसर्तप्रजात तदस्मासु द्रविंणं धेहि चित्रम्॥ इन्द्रमरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिंबः सुतस्यं। तव प्रणीती तवं शूरशर्मन्नाविवासन्ति कवयः सुयज्ञाः॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचों वेन आवः। सबुध्नियां उपमा अंस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवंः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बृहस्पतये नमः॥६॥ शं नों देवीरभिष्टंय आपों भवन्तु पीतयें। शंयोरभिस्रंवन्तु नः॥ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों अस्तु वय इस्यांम् पतंयो रयीणाम्। इमं यंमप्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्नौः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषां मादयस्व॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शनैश्चराय नमः॥७॥ कर्या नश्चित्र आभ्वंदूती सुदावृधः सर्खां। कया शचिष्ठया वृता। आऽयङ्गौः पृश्लिरक्रमीदसंनन्मातरं पुनंः। पितरं च प्रयन्त्सुवंः। यत्ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दामं ग्रीवास्वंविचर्त्यम्। इदं ते तद्विष्याम्यायुंषो न मध्यादथांजीवः पितुमंद्धि प्रमुंक्तः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥८॥ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशों मर्या अपेशसें। समुषद्भिरजायथाः॥ ब्रह्मा देवानां पदवीः कंवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणांम्। श्येनो गृध्रांणाः स्वधितिर्वनांनाः सोमः पवित्रमत्यंति रेभन्। (ऋक्) सचित्र चित्रं चितयन् तमस्मे चित्रंक्षत्र चित्रतंमं वयोधाम्। चन्द्रं रियं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रंचन्द्राभिंगृणते युंवस्व॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय केतवे नमः॥९॥ ॥ॐ आदित्यादि नवग्रहदेवंताभ्यो नमो नर्मः॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ नक्षत्रसूक्तम् ॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् – ३/प्रश्नः – १) (तैत्तिरीय संहिता काण्डम् – ३/प्रपाठकः – ५/अनुवाकः –१)

अग्निर्नः पातु कृत्तिकाः। नक्षेत्रं देविमिन्द्रियम्। इदमांसां विचक्षणम्। ह्विरासं जुहोतन। यस्य भान्ति रश्मयो यस्यं कृतविः। यस्येमा विश्वा भुवनानि सर्वाः। स कृत्तिंकाभि-रभिसंवसानः। अग्निर्नो देवः सुविते देधातु॥१॥

प्रजापंते रोहिणी वेंतु पत्नीं। विश्वरूपा बृह्ती चित्रभांनुः। सा नों यज्ञस्यं सुविते दंधातु। यथा जीवेंम श्ररदः सवीराः। रोहिणी देव्युदंगात्पुरस्तांत्। विश्वां रूपाणिं प्रतिमोदंमाना। प्रजापंति हिवषां वर्धयंन्ती। प्रिया देवानामुपंयातु यज्ञम्॥२॥

सोमो राजां मृगशीर्षेण आगर्त्र। शिवं नक्षंत्रं प्रियमंस्य धामं। आप्यायमानो बहुधा जनेषु। रेतः प्रजां यजमाने दधातु। यत्ते नक्षंत्रं मृगशीर्षमस्ति। प्रिय॰ राजन् प्रियतमं प्रियाणांम्। तस्मै ते सोम ह्विषां विधेम। शं नं एधि द्विपदे शं चतुंष्पदे॥३॥

आर्द्रयां रुद्रः प्रथंमा न एति। श्रेष्ठां देवानां पतिंरिघ्नयानांम्। नक्षंत्रमस्य ह्विषां विधेम। मा नः प्रजा रीरिष्नमोत वीरान्। हेती रुद्रस्य परिणो वृणक्तः। आर्द्रा नक्षंत्रं जुषता ह्विनंः। प्रमुश्रमांनौ दुरितानि विश्वाः। अपाघश र सन्नुदतामरांतिम्॥४॥

पुनंनी देव्यदितिः स्पृणोतु। पुनंवसू नः पुन्रेतां यज्ञम्। पुनंनी देवा अभियंन्तु सर्वे। पुनंः पुनर्वो ह्विषां यजामः। एवा न देव्यदितिरन्वा। विश्वंस्य भूत्री जगंतः प्रतिष्ठा। पुनंवसू ह्विषां वर्धयंन्ती। प्रियं देवानामप्येतु पार्थः॥५॥

बृह्स्पतिः प्रथमं जायंमानः। तिष्यं नक्षंत्रम्भि सम्बंभूव। श्रेष्ठो देवानां पृतंनासु जिष्णुः। दिशोऽनु सर्वा अभयं नो अस्तु। तिष्यः पुरस्तांदुत मध्यतो नः। बृह्स्पतिर्नः परिपातु पश्चात्। बाधेतां द्वेषो अभयं कृणुताम्। सुवीर्यस्य पत्तयः

स्याम॥६॥

इद॰ स्पेंभ्यों ह्विरंस्तु जुष्टम्ँ। आश्रेषा येषांमन्यन्ति चेतः। ये अन्तरिक्षं पृथिवीं क्षियन्ति। ते नः स्पिसो हव्मागंमिष्ठाः। ये रोचने सूर्यस्यापिं स्पाः। ये दिवं देवीमनुंस्श्चरंन्ति। येषांमाश्रेषा अनुयन्ति कामम्ं। तेभ्यः स्पेंभ्यो मधुंमज्जहोमि॥७॥

उपहूताः पितरो ये मघासुं। मनोजवसः सुकृतः सुकृत्याः। ते नो नक्षेत्रे हवमार्गमिष्ठाः। स्वधार्भिर्यज्ञं प्रयंतं जुषन्ताम्। ये अग्निद्ग्धा येऽनंग्निदग्धाः। येऽमुं लोकं पितरः क्षियन्ति। याङ्श्चं विद्ययाः उं च न प्रविद्या। मघासुं यज्ञः सुकृतं जुषन्ताम्॥८॥

गवां पितः फल्गुंनीनामिस् त्वम्। तदंर्यमन् वरुणिमत्र चारुं। तं त्वां वयः संनितारः सनीनाम्। जीवा जीवंन्तमुप् संविशेम। येनेमा विश्वा भुवंनािन सञ्जिता। यस्यं देवा अनुसंयन्ति चेतः। अर्यमा राजाऽजर्स्तु विष्मान्। फल्गुंनीनामृष्भो रोरवीति॥९॥ श्रेष्ठों देवानां भगवो भगासि। तत्त्वां विदुः फल्गुंनीस्तस्यं वित्तात्। अस्मभ्यं क्षत्रमृजर् सुवीर्यम्। गोमृदश्वंवदुप्सन्नुंदेह। भगों ह दाता भग इत्प्रंदाता। भगों देवीः फल्गुंनीराविवेश। भगस्येत्तं प्रंसवं गंमेम। यत्रं देवैः संधमादं मदेम॥१०॥

आयांतु देवः संवितोपंयातु। हिर्ण्ययेन सुवृता रथेन। वहन् हस्त र सुभगं विद्यनापंसम्। प्रयच्छंन्तं पपुंरिं पुण्यमच्छं। हस्तः प्रयच्छ त्वमृतं वसीयः। दक्षिणेन प्रतिगृभ्णीम एनत्। दातारम् संविता विदेय। यो नो हस्तांय प्रसुवातिं युज्ञम्॥११॥

त्वष्टा नक्षेत्रम्भ्येति चित्राम्। सुभगं संसं युवृति श्रिचेमानाम्। निवेशयंत्रमृतान्मर्त्या श्रिश्च। रूपाणि पिश्शन् भ्वेनानि विश्वा। तत्रस्त्वष्टा तद् चित्रा विचेष्टाम्। तत्रक्षेत्रं भूरिदा अंस्तु मह्मम्। तत्रं प्रजां वीरवंती स्मनेत्। गोभिनी अश्वैः समनक्तु यज्ञम्॥१२॥

वायुर्नक्षंत्रमभ्येति निष्ट्यांम्। तिग्मशृंङ्गो वृषभो रोरुंवाणः।

समीरयन् भवंना मात्रिश्वां। अप द्वेषा रेसि नुदतामरांतीः। तन्नो वायुस्तद् निष्ट्यां शृणोत्। तन्नक्षंत्रं भूरिदा अंस्तु मह्मम्। तन्नो देवासो अनुजानन्तु कामम्। यथा तरेम दुरितानि विश्वां॥१३॥

दूरम्स्मच्छत्रंवो यन्तु भीताः। तदिन्द्राग्नी कृणतां तद्विशांखे। तत्रो देवा अनुमदन्तु यज्ञम्। पृश्चात् पुरस्तादभयं नो अस्तु। नक्षंत्राणामधिपत्नी विशांखे। श्रेष्ठांविन्द्राग्नी भुवंनस्य गोपौ। विषूचः शत्रूनप्बाधंमानौ। अप क्षुधं नुदतामरांतिम्॥१४॥ पूर्णा पृश्चादुत पूर्णा पुरस्तांत्। उन्मध्यतः पौर्णमासी जिंगाय। तस्यां देवा अधिसंवसंन्तः। उत्तमे नाकं इह मांदयन्ताम्। पृथ्वी सुवर्चा युवृतिः स्जोषाः। पौर्णमास्यदंगांच्छोभंमाना। आप्याययंन्ती दुरितानि विश्वां। उरुं दुहां यजमानाय यज्ञम्॥१५॥

ऋद्यास्मं हुव्यैर्नमंसोप्सद्यं। मित्रं देवं मित्रधेयं नो अस्तु। अनुराधान् हुविषां वर्धयन्तः। शृतं जीवेम श्ररदः सवीराः। चित्रं नक्षेत्रमुदंगात्पुरस्तात्। अनूराधा स इति यद्वदंन्ति। तन्मित्र एति पृथिभिर्देवयानैः। हिर्ण्ययैर्वितंतर्न्तरिक्षे॥१६॥

इन्द्रौ ज्येष्ठामन् नक्षंत्रमेति। यस्मिन् वृत्रं वृत्र् तूर्ये ततारं। तस्मिन्वयम्मृतं दुहानाः। क्षुधं तरेम् दुरितिं दुरिष्टिम्। पुरन्दरायं वृष्भायं धृष्णवें। अषांढाय सहमानाय मीढुषें। इन्द्राय ज्येष्ठा मध्मदुहाना। उरुं कृणोतु यजमानाय लोकम्॥१७॥

मूलं प्रजां वीरवंतीं विदेय। पराँच्येतु निर्ऋतिः पराचा। गोभिर्नक्षंत्रं पशुभिः समंक्तम्। अहंभूयाद्यजमानाय मह्यम्। अहंनी अद्य सुविते देधातु। मूलं नक्षंत्रमिति यद्वदंन्ति। परांचीं वाचा निर्ऋतिं नुदामि। शिवं प्रजाये शिवमंस्तु मह्यम्॥१८॥

या दिव्या आपः पर्यंसा सम्बभूवः। या अन्तरिक्ष उत पार्थिवीर्याः। यासांमषाढा अंनुयन्ति कामम्। ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु। याश्च कूप्या याश्चं नाद्याः समुद्रियाः। याश्चं वैश्-तीरुत प्रांस्चीर्याः। यासांमषाढा मधुं भृक्षयंन्ति। ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥१९॥

तन्नो विश्वे उपं शृण्वन्तु देवाः। तदंषाढा अभिसंयंन्तु यज्ञम्। तन्नक्षंत्रं प्रथतां पृशुभ्यः। कृषिर्वृष्टिर्यजंमानाय कल्पताम्। शुभ्राः कृन्यां युवतयः सुपेशंसः। कृर्मकृतः सुकृतों वीर्यावतीः। विश्वान् देवान् ह्विषां वर्धयंन्तीः। अषाढाः काम्मुपंयान्तु यज्ञम्॥२०॥

यस्मिन् ब्रह्माभ्यजंयत्सर्वमेतत्। अमुं चं लोकमिदमूंच सर्वम्। तन्नो नक्षंत्रमभिजिद्विजित्यं। श्रियं दधात्वहंणीयमानम्। उभौ लोकौ ब्रह्मणा सञ्जितेमौ। तन्नो नक्षंत्रमभिजिद्विचंष्टाम्। तस्मिन्वयं पृतंनाः सञ्जयम। तन्नो देवासो अनुंजानन्तु कामम्॥२१॥

शृण्वन्ति श्रोणाम्मृतंस्य गोपाम्। पुण्यांमस्या उपंश्रणोमि वाचम्। महीं देवीं विष्णुपत्नीमजूर्याम्। प्रतीचीं मेनाः ह्विषां यजामः। त्रेधा विष्णुंरुरुगायो विचंक्रमे। महीं दिवं पृथिवीम्न्तरिक्षम्। तच्छ्रोणैतिश्रवं इच्छमांना। पुण्युः श्लोकं यजंमानाय कृण्वती॥२२॥

अष्टौ देवा वसंवः सोम्यासंः। चतंस्रो देवीर्जराः श्रविष्ठाः। ते यज्ञं पान्तु रजंसः प्रस्तात्। संवृत्सरीणममृत ई स्वस्ति। यज्ञं नंः पान्तु वसंवः पुरस्तात्। दक्षिणतोऽभियंन्तु श्रविष्ठाः। पुण्यं नक्षंत्रम्भि संविष्ठाम। मा नो अरांतिरघश १ साऽगन्नं॥ २३॥

क्षत्रस्य राजा वर्रुणोऽधिराजः। नक्षत्राणाः शतिभेष्वसिष्ठः। तौ देवेभ्यः कृणुतो दीर्घमायुः। शतः सहस्रां भेषजानि धत्तः। यज्ञं नो राजा वर्रुण उपयातु। तन्नो विश्वे अभि संयन्तु देवाः। तन्नो नक्षत्रः शतिभेषग्जुषाणम्। दीर्घमायुः प्रतिरद्धेषजानि॥२४॥

अज एकंपादुदंगात्पुरस्तांत्। विश्वां भूतानिं प्रति मोदंमानः। तस्यं देवाः प्रस्वं यंन्ति सर्वें। प्रोष्ठपदासों अमृतंस्य गोपाः। विभ्राजमानः समिधा न उग्रः। आऽन्तरिक्षमरुहृदगुन्द्याम्। तः सूर्यं देवम्जमेकंपादम्। प्रोष्ठपदासो अनुंयन्ति सर्वे॥२५॥

अहिंबुंध्रियः प्रथंमा न एति। श्रेष्ठों देवानांमुत मानुंषाणाम्। तं ब्राँह्मणाः सोम्पाः सोम्यासंः। प्रोष्ठपदासों अभिरंक्षन्ति सर्वें। चत्वार एकंमभि कर्म देवाः। प्रोष्ठपदा स इति यान् वदंन्ति। ते बुंध्रियं परिषद्य स्तुवन्तः। अहि रक्षन्ति नर्मसोपसद्यं॥२६॥

पूषा रेवत्यन्वेंति पन्थांम्। पुष्टिपतीं पशुपा वाजंबस्त्यौ। इमानि ह्व्या प्रयंता जुषाणा। सुगैर्नो यानैरुपंयातां यज्ञम्। क्षुद्रान् पशून् रंक्षतु रेवतीं नः। गावों नो अश्वार् अन्वेंतु पूषा। अत्रर् रक्षंन्तौ बहुधा विरूपम्। वाजर् सनुतां यजंमानाय यज्ञम्॥२७॥

तद्श्विनांवश्वयुजोपंयाताम्। शुभुङ्गिमिष्ठौ सुयमेभिरश्वैः। स्वं नक्षत्र १ ह्विषा यजंन्तौ। मध्वासम्पृक्तौ यजुंषा समक्तौ। यौ देवानां भिषजौ हव्यवाहौ। विश्वस्य दूतावमृतंस्य गोपौ। तौ नक्षंत्रं जुजुषाणोपंयाताम्। नमोऽश्विभ्यां कृणुमोऽश्वयुग्भ्यांम्॥२८॥

अपं पाप्मानं भरंणीर्भरन्तु। तद्यमो राजा भगंवान् विचंष्टाम्। लोकस्य राजां महतो महान् हि। सुगं नः पन्थामभंयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षंत्रे यम एति राजां। यस्मिन्नेनम्भ्यिषश्चन्त देवाः। तदस्य चित्र रहिवषां यजाम। अपं पाप्मानं भरंणीर्भरन्तु॥२९॥

निवेशंनी सङ्गर्मनी वसूनां विश्वां रूपाणि वसूँन्यावेशयंन्ती। सहस्रपोष र सुभगा रर्गणा सा न आगन्वर्चसा संविदाना॥ यत्ते देवा अदंधुर्भाग्धेयममांवास्ये संवसंन्तो महित्वा। सा नो युज्ञं पिंपृहि विश्ववारे रुयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्॥३०॥

॥ गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत्॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरेरङ्गैं स्तुष्टुवा र संस्तुनूभिः। व्यशेम देविहेतं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नंः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिंदिधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ नर्मस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वंमिस। त्वमेव केवलं कर्तांऽिस। त्वमेव केवलं धर्तांऽिस। त्वमेव केवलं हर्तांऽिस। त्वमेव केवलं हर्तांऽिस। त्वमेव सर्वं खित्वदं ब्रह्मािस। त्वं साक्षादात्मांऽिस नित्यम्॥१॥

ऋतं वचिम। संत्यं वचिम॥२॥

अवं त्वं माम्। अवं वृक्तारम्। अवं श्रोतारम्। अवं दातारम्। अवं धातारम्। अवानूचानमंव शिष्यम्। अवं पश्चात्तात्। अवं पुरस्तात्। अवांत्तरात्तात्। अवं दक्षिणात्तात्। अवं चोर्ध्वात्तात्। अवाध्रात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहिं

समन्तात्॥३॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्म्यः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सचिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मांसि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानंमयोऽसि॥४॥

सर्वं जगदिदं त्वत्वों जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्त्वंस्तिष्ठ्वति। सर्वं जगदिदं त्विय लयंमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वियं प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो न्भः। त्वं चत्वारि वाक्परिमितां पदानि॥५॥

त्वं गुणत्रंयातीतः। त्वम् अवस्थात्रंयातीतः। त्वं देहत्रंयातीतः। त्वं कालत्रंयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रंयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायंन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥६॥

गुणादिं पूर्वमुचार्य वर्णादिं तंदनन्तरम्। अनुस्वारः पंरतुरः। अर्थेन्दुलसितम्। तारेण ऋद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यंमरूपम्। अनुस्वारश्चांन्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तंररूपम्। नादंः सन्धानम्। सर्हिता सुन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणेक ऋषिः। निचृद्गायंत्रीच्छुन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः॥७॥

एकदन्तायं विद्महें वऋतुण्डायं धीमहि। तन्नों दन्ती प्रचोदयाँत्॥८॥

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमंङ्कश्वधारिणम्। रदं च वरंदं हुस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्॥

रक्तं लुम्बोदेरं शूर्पकुर्णकं रेक्तवाससम्। रक्तंगन्धानुंलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्॥

भक्तांनुकम्पिनं देवं ज्गत्कांरणमच्युंतम्। आविर्भूतं चं सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः॥९॥ नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः॥१०॥

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयायं कल्पते। स सर्वविद्रौनं बाध्यते। स सर्वतः सुखंमेधते। स पश्चमहापापात् प्रंमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाश्यति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाश्यति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भ्वति। सर्वत्राधीयानोऽपविद्रों भवति। धर्मार्थकाममोक्षं चं विन्द्ति। इदमथर्वशीर्षमशिष्यायं न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भ्वति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेनं साध्येत्॥११॥

अनेन गणपतिमभिषिश्चिति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति स विद्यावान् भ्वति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न बिभेति कदांचनेति॥१२॥

यो दूर्वाङ्करैर्यजित स वैश्रवणोपंमो भ्वति। यो लाजैर्यजित

स यशोवान् भ्वति स मेधांवान् भ्वति। यो मोदकसहस्रेण यजित स वाञ्छितफलमंवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजिति स सर्वं लभते स सर्वं लभृते॥१३॥

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्रांहयित्वा। सूर्यवर्चस्वीं भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जस्वा सिद्धमन्नों भवति। मृहाविष्नात् प्रमुच्यते। मृहादोषात् प्रमुच्यते। मृहापापात् प्रमुच्यते। मृहाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति। य एवं वेद। इत्युंपनिषंत्॥१४॥

सह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेज्ञस्विनाऽवधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ मृत्युञ्जयहोम-मन्त्राः॥

अपैंतु मृत्युर्मृतंं न आगंन्वैवस्वतो नो अभंयं कृणोतु। पूर्णं वनस्पतेरिवाभिनंः शीयता र रियः स चं तान्नः शचीपितः॥१॥ परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतंरो देवयानात। चक्षुंष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नंः प्रजा रिषेषो मोत वीरान्॥२॥

वातं प्राणं मनंसाऽन्वा रंभामहे प्रजापंतिं यो भुवंनस्य गोपाः। स नो मृत्योस्रायतां पात्व १ हंसो ज्योग्जीवा जुरामंशीमहि॥३॥

अमुत्र भूयादध् यद्यमस्य बृहंस्पते अभिशंस्तेरम्ंश्चः। प्रत्यौहताम्श्विनां मृत्युमंस्माद्देवानांमग्ने भिषजा शचींभिः॥४॥

हरि हर्गन्तमनुंयन्ति देवा विश्वस्येशांनं वृष्मं मंतीनाम्। ब्रह्म सरूपमनुंमेदमागादयंनं मा विवधीर्विक्रमस्व॥५॥ शल्कैरग्निमिन्धान उभौ लोकौ संनेमहम्। उभयौर्लोकयोर्- ऋध्वाऽतिं मृत्युं तराम्यहम्॥६॥

मा छिंदो मृत्यो मा वंधीमां मे बलं विवृंहो मा प्रमोंषीः। प्रजां मा में रीरिष् आयुंरुग्र नृचक्षंसं त्वा हविषां विधेम॥७॥

मा नो महान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवो रुद्र रीरिषः॥८॥ मा नंस्तोके तनये मा न आयंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीरहविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥९॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों अस्तु वयः स्याम् पतंयो रयीणाम्॥१०॥

यतं इन्द्र भयांमहे ततों नो अभयं कृषि। मधंवन्छ्ग्धि तव तन्नं ऊतये विद्विषो विमृधों जिह॥११॥ स्वस्तिदा विशस्पतिंवृत्रहा विमृधों वृशी। वृषेन्द्रंः पुर एंतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः॥१२॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतौत्॥१३॥

अपंमृत्युमपृक्षुधम्। अपेतः शुपर्थं जिह। अधां नो अग्र आर्वह। रायस्पोषर्ं सहस्रिणम्॥१४॥

ये ते स्हस्रम्युतं पाशाः। मृत्यो मर्त्याय हन्तेवे। तान् युज्ञस्यं माययाः। सर्वानवयजामहे॥१५॥

जातवेदसे सुनवाम् सोमं मरातीयतो निदंहाति वेदः। स नः पर्षदितं दुर्गाणि विश्वां नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः॥१६॥

भूर्भुवः स्वंः। ओजो बलम्ँ। ब्रह्मं क्षुत्रम्। यशों महत्। सत्यं तपो नामं। रूपमुमृतम्ँ। चक्षुः श्रोत्रम्ँ। मन् आयुंः। विश्वं यशों महः। समं तपो हरो भाः। जातवेदा यदि वा पावकोऽसिं। वैश्वानरो यदि वा वैद्युतोऽसिं। शं प्रजाभ्यो यजमानाय लोकम्। ऊर्जुं पृष्टिं ददंदभ्यावंवृत्स्व॥१७॥

मृत्युर्नेश्यत्वायुंर्वर्धतां भूः। मृत्युर्नेश्यत्वायुंर्वर्धतां भुवः।

मृत्युर्नश्यत्वायुंर्वर्धता १ सुवंः। मृत्युर्नश्यत्वायुंर्वर्धतां भूर्भृवः सुवंः। मृत्युर्नश्यत्वायुंर्वर्धताम्॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ महान्यासः॥

॥पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम्॥

ओङ्कारमत्रसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं तस्मै नकाराय नमो नमः॥१॥ नमंस्ते रुद्र मृन्यवं उतो तृ इषंवे नमंः। नमंस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यांमुत ते नमंः॥ या तृ इषुंः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धनुंः। शिवा शंरव्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥

(EAST)

कं खं गं घं ङं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गरुद्राय नमः।

> महादेवं महात्मानं महापातकनाशनम्। महापापहरं वन्दे मकाराय नमो नमः॥२॥

अपैतु मृत्युर्मृतंं न आगंन्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु। पूर्णं वनस्पतेरिवाभिनंः शीयता र्योः स चं तान्नः शचीपतिः। चं छं जं झं ञं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवर्ते रुद्राय। दक्षिणाङ्गरुद्राय नमः।

> शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारणम्। शिवमेकं परं वन्दे शिकाराय नमो नमः॥३॥

ॐ। निधंनपतये नमः। निधंनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वायं नमः। ऊर्ध्वलिङ्गायं नमः। हिरण्यायं नमः। हिरण्यालिङ्गायं नमः। दिव्यायं नमः। दिव्यायं नमः। दिव्यायं नमः। दिव्यायं नमः। दिव्यालिङ्गायं नमः। भवलिङ्गायं नमः। शर्वायं नमः। शर्वावलिङ्गायं नमः। शर्वालिङ्गायं नमः। शर्वालिङ्गायं नमः। शर्वालिङ्गायं नमः। शर्वालिङ्गायं नमः। शर्वालिङ्गायं नमः। अत्मायं नमः। अत्मायं नमः। अत्मायं नमः। अत्मायं नमः। अत्मायं नमः। अत्मायं नमः। परमलिङ्गायं नमः। एतत्सोमस्यं सूर्यस्यं सर्वलिङ्गः स्थाप्यति पाणिमः प्रिवत्रम्।

(WEST)

टं ठं डं ढं णं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गरुद्राय नमः। वाहनं वृषभो यस्य वासुिकः कण्ठभूषणम्। वामे शक्तिधरं वन्दे वकाराय नमो नमः॥४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु॥

(NORTH)

तं थं दं धं नं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गरुद्राय नमः।

> यत्र कुत्र स्थितं देवं सर्वव्यापिनमीश्वरम्। यिष्ठङ्गं पूजयेत्रित्यं यकाराय नमो नमः॥५॥

प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनां प्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि।

(UPWARDS)

पं फं बं भं मं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गरुद्राय नमः।

॥ पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम्॥

तत्पुरुंषाय विदाहें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥

संवर्ताग्नि-तिटत्प्रदीप्त-कनक-प्रस्पर्धि-तेजोरुणम् गम्भीरध्वनि-सामवेदजनकं ताम्राधरं सुन्दरम्। अर्धेन्दुद्युति-लोल-पिङ्गल-जटाभार-प्रबोद्धोदकम् वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनिमतं पूर्वं मुखं शूलिनः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गमुखाय नमः। (EAST)

अघोरैंभ्योऽथ् घोरैंभ्यो घोर्घोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वृशर्वेभ्यो नमंस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ कालाभ्रभ्रमराञ्जन-द्युतिनिभं व्यावृत्तपिङ्गेक्षणम् कर्णोद्धासित-भोगिमस्तकमणि-प्रोद्धिन्नदंष्ट्राङ्कुरम्। सर्पप्रोतकपाल-शुक्तिशकल-व्याकीर्णताशेखरम् वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनं चाथर्वनादोदयम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गमुखाय नमः। (SOUTH)

सुद्योजातं प्रंपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भुवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भुवोद्भवाय नर्मः॥

प्रालेयाचलिमन्दुकुन्द-धवलं गोक्षीरफेनप्रभम् भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहन-ज्वालावली-लोचनम् । विष्णु-ब्रह्म-मरुद्गणार्चितपदं ऋग्वेदनादोदयम् वन्देऽहं सकलं कलङ्करितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गमुखाय नमः। (WEST)

वामदेवाय नमौ ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय

नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मुनोन्मनाय नमः॥ गौरं कुङ्कुमपङ्कितं सुतिलकं व्यापाण्डुमण्डस्थलम् भूविक्षेप-कटाक्षवीक्षण-लसत्-संसक्तकर्णोत्पलम्। स्निग्धं विम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतम् वन्दे याजुषवेदघोषजनकं वक्रं हरस्योत्तरम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गमुखाय नमः। (NORTH)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिब्रह्मणोऽधिपतिब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

व्यक्ताव्यक्तनिरूपितं च परमं षिट्नंशतत्त्वाधिकम् तस्मादुत्तर-तत्त्वमक्षरिमिति ध्येयं सदा योगिभिः। ओङ्कारादि समस्तमन्त्रजनकं सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम् वन्दे पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गमुखाय नमः। (UPWARDS)

॥ केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः॥

या ते रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥ शिखाये नमः॥ (TUFT)

अस्मिन् मंहृत्यंर्ण्वं ऽन्तरिक्षे भ्वा अधि। तेषा र् सहस्रयोज्ने ऽवधन्वांनि तन्मसि॥ शिरसे नमः॥ (TOP OF HEAD)

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याँम्। तेषा ५ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ ललाटाय नमः॥ (FOREHEAD)

ह् भाः श्रुंचिषद्वसुंरन्तिरक्ष्यसद्धोतां वेदिषदितिथिर्दुरोण्सत्। नृषद्वं रसदंत्सद्धोम्सद्बा गोजा ऋत्जा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥ भ्रवोर्मध्याय नमः॥ (MIDDLE OF EYEBROWS)

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वार्किमिव बन्धेनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतौत्॥ नेत्राभ्यां नमः॥ (EYES)

नमः सुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च सर्स्याय च नमो नाद्यायं च वैशन्तायं च। कर्णाभ्यां नमः॥ (EARS)

मा नंस्तोके तनंये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।

वीरान्मा नों रुद्र भामितोऽवंधीर्ह्विष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥

नासिकायै नमः॥ (NOSE)

अवतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेषुधे॥ निशीर्य शृल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव। मुखाय नमः॥ (FACE)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शुर्वा अधः, क्षंमाचराः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ कण्ठाय नमः॥ (NECK)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर् रुद्रा उपंश्रिताः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ उपकण्ठाय नमः॥ (LOWER NECK)

नर्मस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवें। उभाभ्यांमृत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ बाहुभ्यां नमः॥ (SHOULDERS)

या ते हेतिर्मीं दुष्टम् हस्ते बुभूवं ते धर्नुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिञ्जुज॥ उपबाहुभ्यां नमः॥ (ELBOW TO WRIST)

परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मुघवंद्र्यस्तनुष्व मीढ्वंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मणिबन्धाभ्यां नमः॥ (WRISTS)

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निष्क्षिणंः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

हस्ताभ्यां नमः॥ (HANDS)

स्द्योजातं प्रपद्यामि स्द्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ (ROLL RING FINGERS ON THUMBS)

वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥ तर्जनीभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON INDEX FINGERS)

अघोरैंभ्योऽथ घोरैंभ्यो घोर्घोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वृशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ मध्यमाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON MIDDLE FINGERS)

तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ अनामिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON RING FINGERS) ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिब्रह्मणो-ऽधिपतिब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON LITTLE FINGERS)

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये-ऽम्बिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः॥ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥(RUB PALMS OVER ONE ANOTHER, FRONT

AND BACK)

नमो वः किरिकेभ्यो देवाना १ हृदंयेभ्यः॥ हृदयाय नमः॥ (HEART)

नमो गुणेभ्यो गुणपंतिभ्यश्च वो नमः॥ पृष्ठाय नमः॥ (BACK)

नम्स्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यंश्च वो नर्मः॥ कक्षाभ्यां नमः॥ (ARMPIT TO WAIST)

नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्थे दिशां च पतंये नमः॥ पार्श्वाभ्यां नमः॥ (TRUNK)

विज्यं धर्नुः कपूर्दिनो विशंल्यो बार्णवा उत। अनेशत्रस्येषेव आभुरस्य निष्क्षथिः॥ जठराय नमः॥ (STOMACH)

हिर्ण्यगर्भः समंवर्तताग्रे भूतस्यं जातः पितरेकं आसीत्। सदांधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मैं देवायं हिवर्षां विधेम॥ नाभ्ये नमः॥ (NAVEL)

मीढुंष्टम् शिवंतम शिवो नः सुमनां भव। प्रमे वृक्ष आयुंधन्निधाय कृत्तिं वसान् आ चंर् पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ कट्यै नमः॥ (WAIST)

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कप्रदिनः। तेषारं सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ गुह्याय नमः॥ (UPPER REPRODUCTIVE ORGANS)

ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषा १ सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ अण्डाभ्यां नमः॥ (LOWER REPRODUCTIVE ORGANS)

स शिरा जातवेदा अक्षरं पर्मं प्दम्। वेदाना शिरंसि माता आयुष्मन्तं करोतु माम्॥ अपानाय नमः॥ (ANUS)

मा नो महान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षेन्तमुत मा ने उक्षितम्।

मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥

ऊरुभ्यां नमः॥ (THIGHS)

एष ते रुद्रभागस्तं जुंषस्व तेनांवसेनं परो मूर्जवतोऽती-द्यवंततधन्वा पिनांकहस्तः कृत्तिंवासाः॥ जानुभ्यां नमः॥ (KNEES)

स्रमृष्ट्रजिथ्सोम्पा बांहुश्रध्यूर्ध्वधंन्वा प्रतिहिताभिरस्तां। बृहंस्पते परिदीया रथेन रक्षोहाऽमित्रारं अपुबाधमानः॥ जङ्घाभ्यां नमः॥ (KNEE TO ANKLES) विश्वं भूतं भुवंनं चित्रं बंहुधा जातं जायंमानं च यत्। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥ गुल्फाभ्यां नमः॥ (ANKLES)

ये पृथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युधंः। तेषा रे सहस्रयोज्नेऽवधन्वांनि तन्मसि॥ पादाभ्यां नमः॥ (FEET)

अध्येवोचदिधवृक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अही ईश्च सर्वाञ्चम्भयन्त्सर्वीश्च यातुधान्यः॥ कवचाय हुम्॥ (CROSS HANDS ACROSS CHEST WITH TIPS OF FINGERS

TOUCHING SHOULDERS)

नमों बिल्मिनें च कव्चिनें च नमः श्रुतायं च श्रुतस्नायं च॥

उपकवचाय हुम्॥ (REPEAT THE ABOVE AT ELBOW LEVEL)
नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषें।
अथो ये अस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योंऽकरं नमंः॥

नेत्रत्रयाय वौषट्॥ (TOUCH INDEX, MIDDLE, RING FINGERSACROSS THE THREE EYES)

प्र मुंश्च धन्वंन्स्त्वमुभयो्रार्ह्मियो्र्ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ अस्त्राय फट्॥ (SLAP INDEXAND MIDDLE FINGERS OF RIGHT HAND ON LEFT PALM)

य पुतावंन्तश्च भूया रेसश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे। तेषा रे सहस्रयोजने ऽवधन्वांनि तन्मसि॥ इति दिग्बन्धः॥ (SNAP MIDDLE AND THUMB WITH CLICKING SOUNDS AROUND SELF)



॥ मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः॥

ॐ मूर्भे नमः। नं नासिकाय नमः। मों ललाटाय नमः। भं मुखाय नमः। गं कण्ठाय नमः। वं हृदयाय नमः। तें दक्षिणहस्ताय नमः। रुं वामहस्ताय नमः। द्रां नाभ्यै नमः।

यं पादाभ्यां नमः।

॥पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः॥

सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ पादाभ्यां नमः॥

वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमें श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥

ऊरुभ्यां नमः॥

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वैभ्यः सर्वशर्वैभ्यो नमंस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ हृदयाय नमः॥

तत्पुरुषाय विदाहें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ मुखाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिब्रह्मणो-ऽधिपतिब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ हंस हंस मूर्ध्ने नमः॥



॥ हंसगायत्री ॥

अस्य श्री हंसगायत्री महामन्नस्य। अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः। अव्यक्त गायत्री छन्दः। परमहंसो देवता॥ हंसां बीजम्। हंसीं शक्तिः। हंसूं कीलकम्॥ परमहंस-प्रसाद-सिद्धार्थे जपे विनियोगः॥

हंसां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हंसीं तर्जनीभ्यां नमः। हंसूं मध्यमाभ्यां नमः। हंसैं अनामिकाभ्यां नमः। हंसीं किनिष्ठिकाभ्यां नमः। हंसः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। हंसां हृदयाय नमः। हंसीं शिरसे स्वाहा। हंसूं शिखायै वषट्। हंसैं कवचाय हुम्। हंसीं नेत्रत्रयाय वौषट्। हंसः अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोम् इति दिग्बन्धः॥ ॥ध्यानम्॥

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं तिमिरापहारम्। पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम्॥

> हंसहंसात् परमहंसः सोऽहं हंसः॥ हुंस् हुंसायं विद्महें परमहुंसायं धीमहि। तन्नों हंसः प्रचोदयाँत्॥ (एवं किः)

हंस हंसेति यो ब्रूयाद्धंसो नाम सदाशिवः। एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः सम्पुटमारभेत्॥

॥दिक् सम्पुटन्यासः॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।
[ॐ] लं। त्रातार्मिन्द्रंमिवतार्मिन्द्रः हवेंहवे सुहव्रः
शूरमिन्द्रम्।
हुवे नु शुक्रं पुंरुहूतमिन्द्रः स्वस्ति नो मुघवां धात्विन्द्रः॥

लं भूर्भुवः सुवंः। इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतय ऐरावतवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

सवालङ्कारभूषिताय उमामहश्वरपाषदाय नमः। पूर्वदिग्भागे ललाटस्थाने लं इन्द्राय नमः। इन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [इन्द्रः संरक्षतु॥]॥१॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[नं] रं। त्वन्नों अग्ने वर्रणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवं यासिसीष्ठाः।

यजिष्ठो वहितमः शोशुंचानो विश्वा द्वेषा रेसि प्रमुंमुग्ध्यस्मत्॥

रं भूर्भुवः सुवंः। अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतयेऽजवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

आग्नेयदिग्भागे नेत्रयोः स्थाने रं अग्नये नमः। अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [अग्निः संरक्षतु॥]॥ ॥२॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[मों] हं। सुगं नः पन्थामभेयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षेत्रे यम एति राजाँ। यस्मिन्नेनम्भ्यषिश्चन्त देवाः। तदंस्य चित्र॰ ह्विषां यजाम॥ हं भूर्भुवः सुवंः। यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

दक्षिणदिग्भागे कर्णयोः स्थाने हं यमाय नमः। यमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [यमः संरक्षतु॥]॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[भं] षं। असुंन्वन्तमयंजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यां तस्करस्यान्वेषि।

अन्यम्स्मिदिंच्छ् सा तं इत्या नमों देवि निर्ऋते तुभ्यंमस्तु॥

षं भूर्भुवः सुवंः। निर्ऋतये खङ्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। निर्ऋतिदिग्भागे मुखस्थाने षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [निर्ऋतिः संरक्षतु॥]॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्।

[गं] वं। तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दंमान्स्तदा शाँस्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेंडमानो वरुणेह बोध्युरुंशश्स मा न आयुः प्रमोधीः॥ वं भूर्भुवः सुवंः। वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पश्चिमदिग्भागे बाह्वोः स्थाने वं वरुणाय नमः। वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वरुणः संरक्षतु॥] ॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[वं] यं। आ नों नियुद्धिः श्वितनींभिरध्वरम्। सहस्रिणींभिरुपंयाहि युज्ञम्।

वायों अस्मिन् ह्विषिं मादयस्व। यूयं पात स्वस्तिभिः

सदां नः॥

यं भूर्भृवः सुवंः। वायवे साङ्कुशध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। वायव्यदिग्भागे नासिकास्थाने यं वायवे नमः। वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वायुः संरक्षतु॥]॥६॥

ॐ भूर्भृवः सुवरोम्।
[तं] सं। वयः सोम व्रते तवं। मनंस्तृनूषु बिभ्रंतः।
प्रजावंन्तो अशीमिह॥
सं भूर्भृवः सुवंः। सोमाय अमृतकलशहस्ताय नक्षत्राधिपतये
अश्ववाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय
सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।
उत्तरदिग्भागे हृदयस्थाने सं सोमाय नमः। सोमः सुप्रीतो

वरदो भवतु॥ [सोमः संरक्षतु॥]॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[रुं] शं। (ऋक्) तमीशाँनुं जर्गतस्तस्थुष्स्पतिम्। धियुं

जिन्वमवंसे हूमहे व्यम्।

पूषा नो यथा वेदेसामसंद्वृधे रेक्षिता पायुरदेब्धः स्वस्तयै॥ शं भूर्भुवः सुवेः। ईशानाय त्रिशूलहस्ताय भूताधिपतये वृषभवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ईशानिदग्भागे नाभिस्थाने शं ईशानाय नमः। ईशानः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ईशानः संरक्षत्॥] ॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[द्रां] खं। (ऋक्) अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरंहतौ सजोषाः ।

यः शंसीते स्तुवते धार्यि पुज्र इन्द्रंज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः॥

खं भूर्भुवः सुवंः। ब्रह्मणे पद्महस्ताय विद्याधिपतये हंसवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ऊर्ध्वदिग्भागे मूर्ध्निस्थाने खं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा सुप्रीतो

वरदो भवतु॥ [ब्रह्मा संरक्षतु॥]

11911

ॐ भूर्भुवः सुव्रोम्। [यं] ह्रीं। स्योना पंथिवि भवाऽनः

[यं] ह्रीं। स्योना पृथिवि भवांऽनृक्ष्रा निवेशंनी।

यच्छांनुः शर्म सुप्रथाः॥

हीं भूर्भुवः सुर्वः। विष्णवे चऋहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। अधोदिग्भागे पादयोः स्थाने हीं विष्णवे नमः। विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [विष्णुः संरक्षतु॥] ॥१०॥

॥ षोडशाङ्गरौद्रीकरणम्॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ अं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ विभूरंसि प्रवाहंणो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ अं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। शिखास्थाने

रुद्राय नमः॥१॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ आं। नर्मः शम्भवं च मयोभवं च नर्मः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतंराय च॥ विह्रंरिस हव्यवाहंनो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ आं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। शिरस्थाने रुद्राय नमः॥२॥

ॐ भूर्भृवस्सुवं:।ॐ इं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्क्रायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ श्वात्रोंऽसि प्रचेता रौद्रेणानींकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ इं ॐ भूर्भृवस्सुवरोम्। मूर्प्निस्थाने रुद्राय नमः॥३॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ईं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ तुथोऽसि विश्ववंदा रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ ईं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। ललाटस्थाने

रुद्राय नमः॥४॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ उं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्क्रायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ उशिगंसि क्वी रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ उं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। नेत्रयोः स्थाने रुद्राय नमः॥५॥

ॐ भूर्भृवस्सुवं:।ॐ ऊं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ अङ्घारिरसि बम्भारी रौद्रेणानीकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऊं ॐ भूर्भृवस्सुवरोम्। कर्णयोः स्थाने रुद्राय नमः॥६॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ऋं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ अवस्युरंसि दुवंस्वान् रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ ऋं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। मुखस्थाने

रुद्राय नमः॥७॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ऋं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ शुन्थ्यूरंसि मार्जा्ठीयो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऋं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। कण्ठस्थाने रुद्राय नमः॥८॥

ॐ भूर्भृवस्सुवं:।ॐ लं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ सम्राडंसि कृशानू रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ लं ॐ भूर्भृवस्सुवरोम्। बाह्वोः स्थाने रुद्राय नमः॥९॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ॡं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ परिषद्योऽसि पवंमानो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ॡं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। हृदयस्थाने

रुद्राय नमः॥१०॥

ॐ भूर्भृवस्सुवं:।ॐ एं। नर्मः शम्भवं च मयोभवं च नर्मः शङ्करायं च मयस्क्रायं च नर्मः शिवायं च शिवतंराय च॥ प्रतक्षांऽसि नर्भस्वान् रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मा हिश्सीः॥ एं ॐ भूर्भृवस्सुवरोम्। नाभिस्थाने रुद्राय नमः॥११॥

ॐ भूर्भृवस्सुवं:।ॐ ऐं। नर्मः शम्भवं च मयोभवं च नर्मः शङ्करायं च मयस्क्रायं च नर्मः शिवायं च शिवतंराय च॥ असंम्मृष्टोऽसि हव्यसूदो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ऐं ॐ भूर्भृवस्सुवरोम्। कटिस्थाने रुद्राय नमः॥१२॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ॐ। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ ऋतधांमाऽसि सुवंज्यीती रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ ॐ ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्।

ऊरुस्थाने रुद्राय नमः॥१३॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ औं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ ब्रह्मंज्योतिरिस् सुवंधामा रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ औं ॐ भूर्भुवस्सुव्रोम्। जानुस्थाने रुद्राय नमः॥१४॥

ॐ भूर्भृवस्सुवं:।ॐ अं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्क्रायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ अजौंऽस्येकंपाद्रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ अं ॐ भूर्भृवस्सुवरोम्। जङ्घास्थाने रुद्राय नमः॥१५॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ अः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ अहिंरिस बुिध्रयो रौद्रेणानींकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हि॰सीः॥ अः ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। पादयोः स्थाने रुद्राय नमः॥१६॥

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते। सर्वभूतेष्वपराजितो भवति।

ततो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शािकनी-डािकनी-सर्प-श्वापद-वृश्चिक-तस्कराद्युपद्रवाद्युपघाताः। सर्वे ज्वलन्तं पश्यन्तु। मां रक्षन्तु। यजमानं रक्षन्तु। सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु॥



॥ गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थी) न्यासः॥

मनो ज्योतिंर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं युज्ञः सिम्मं देधातु। या इष्टा उषसो निम्नुचेश्च ताः सन्देधामि ह्विषां घृतेनं॥ गुह्याय नमः॥१॥

अबौध्यग्निः स्मिधा जनानां प्रति धेनुमिवाऽऽयतीमुषासम्। यह्वा इव प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवेः सिस्रते नाकमच्छे॥ नाभ्यै नमः॥२॥ अग्निर्मूर्द्धा दिवः कुकुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार रेतारेसि जिन्वति॥ हृदयाय नमः॥३॥

मूर्धानं दिवो अंरतिं पृथिव्या वैश्वान्रमृतायं जातम्ग्निम्। क्वि॰ सम्राज्मितिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ कण्ठाय नमः॥४॥

मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमंस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवंस्ताम् उरोवंरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं त्वामन् मदन्तु देवाः॥ मुखाय नमः॥५॥

जातवेदा यदि वा पावकोऽसिं। वैश्वान्रो यदि वा वैद्युतोऽसिं।

शं प्रजाभ्यो यजंमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं ददंदभ्यावंवृत्स्व॥ शिरसे नमः॥६॥



॥ आत्मरक्षा॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - २/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - ११)

ब्रह्मौत्मन्वदंसृजत। तदंकामयत। समात्मनां पद्येयेतिं। आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मैं दश्म १ हूतः प्रत्यंश्रणोत्। स दशंहूतोऽभवत्। दशंहूतो हु वै नामैषः। तं वा एतं दशंहूत १ सन्तम्। दशंहोतेत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मैं सप्तम हूतः प्रत्यंश्रणोत्। स स्प्तहूतोऽभवत्। सप्तहूतो हु वै नामैषः। तं वा एत श् सप्तहूत् श्रू सन्तम्। स्प्तहोतेत्याचं क्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै षष्ठ हूतः प्रत्यंश्वणोत्। स षड्ढंतोऽभवत्। षड्ढंतो ह् वै नामैषः। तं वा एत १ षड्ढंतर् सन्तम्। षड्ढोतेत्याचंक्षते प्रोक्षंण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै पश्चम १ हूतः प्रत्यंशृणोत्। स पश्चंहूतोऽभवत्। पश्चंहूतो हु वै नामैषः। तं वा एतं पश्चंहूत्र सन्तम्। पश्चंहोतेत्याचंक्षते प्रोक्षंण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मैं चतुर्थ हृतः प्रत्यंश्वणोत्। स चतुंर्हृतोऽभवत्। चतुंर्हृतो हु वै नामैषः। तं वा एतं चतुंर्हृत्र सन्तम्। चतुंर्होतेत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥

तमंब्रवीत्। त्वं वै में नेदिष्ठ हूतः प्रत्यंश्रौषीः। त्वयैनानाख्यातार् इतिं। तस्मान्नु हैना श्रुश्चतुं रहोतार् इत्याचंक्षते। तस्मांच्छुश्रूषुः पुत्राणा हह्यंतमः। नेदिष्ठो हृद्यंतमः। नेदिष्ठो हृद्यंतमः। नेदिष्ठो अत्मने नमः॥

॥ शिवसङ्कल्पः॥

येनेदं भूतं भुवेनं भविष्यत् परिंगृहीतम्मृतेन सर्वम्। येनं युज्ञस्त्रायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१॥ येन् कर्माणि प्रचरन्ति धीरा यतो वाचा मनसा चारु यन्ति। यत्सुम्मित्मनुंसुंयन्तिं प्राणिनस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥ येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदर्थेषु धीराः। यदंपूर्वं यक्षम्नतः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३ यत्प्रज्ञानंमुत चेतो धृतिंश्च यञ्चोतिंरन्तर्मृतंं प्र यस्मान्न ऋते किं च न कर्म क्रियते तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्प सुषार्थिरश्वांनिव यन्मंनुष्यांन्नेनीयतेऽभीशुंभिर्वाजिनं इव। हत्प्रतिष्ठं यदंजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमंस्तु॥५॥ यस्मिनृचः साम् यजू ५ षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवारा यस्मि ईश्चित्तर सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्त यदत्रं षष्ठं त्रिशत र सुवीरं यज्ञस्यं गुह्यं नवंनावमाय्यम्। दशं पश्च त्रिष्शतं यत्परं च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥७ यञ्जाग्रंतो दूरमुदैति दैवं तद्ं सुप्तस्य तथैवैतिं। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥८

येनेदं विश्वं जगंतो बुभूव ये देवापि मह्तो जातवेदाः। तदेवाग्निस्तमंसो ज्योतिरेकं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥९॥

येन द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षं च ये पर्वताः प्रदिशो दिशंश्च। येनेदं जगुद्धाप्तं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१०

ये मनो हर्दयं ये चं देवा ये दिव्या आपो ये सूँर्यर्शिमः। ते श्रोत्रे चक्षुंषी स्श्ररंन्तं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥११

अचिन्त्यं चाप्रमियं च व्यक्ताव्यक्तंपरं च यत्। सूक्ष्मौत्सूक्ष्मतंरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१२॥

एकां च दश शृतं चं सृहस्रं चायुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यंबुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तंश्च परार्धश्च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥१३॥

ये पश्च पश्चाद्श श्तर सहस्रम्युतं न्यंर्बुदं च। ते अग्निचित्येष्टंकास्तर शरीरं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवंणं तमंसः परंस्तात्। यस्य योनिं परिपश्यंन्ति धीरास्तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥ यस्येदं धीराः पुनन्तिं कवयो ब्रह्माणंमेतं त्वां वृणत इन्दुंम्। स्थावरं जङ्गमं द्यौरांकाशं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥ परौत्परतंरं चैव यत्पराँचैव यत्परम्। यत्परौत्परंतो ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१७॥ परौत्परतंरो ब्रह्मा तृत्परौत्पर्तो हंरिः। तत्परात्परंतोऽधीशस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१८॥ या वेदादिषुं गायत्री सर्वव्यापी महेश्वरी। ऋग्यजुः सामाथवैश्च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥१९॥ यो वै देवं महादेवं प्रणवं परमेश्वरम्। यः सर्वे सर्ववेदेश्च तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२०॥ प्रयंतुः प्रणंवोङ्कारं प्रणवं पुरुषोत्तंमम्। ओङ्कारं प्रणंवात्मानं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२१॥

योऽसौं स्वेषुं वेदेषु प्ठातें ह्यज् इश्वरः। अकायों निर्गुणो ह्यात्मा तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२२॥

गोभिर्जुष्टं धर्नेन् ह्यायुंषा च बर्लेन च। प्रजयां पृशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२३॥

कैलांस्शिखंरे रम्ये शङ्करंस्य शिवालंये। देवतांस्तत्रं मोदन्ते तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२४॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमेव बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२५॥

विश्वतंश्वक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोहस्त उत विश्वतंस्पात्। सम्बाहुभ्यां नमंति सम्पतंत्रैर्द्यावापृथिवी जनयंन्देव एकस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२६॥

चतुरों वेदानंधीयीत सर्वशास्त्रम्यं विंदुः। इतिहासपुराणानां तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥२७॥ मा नों महान्तंमुत मा नों अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तुनवों रुद्र रीरिष्स्तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२८॥

मा नंस्तोके तनंये मा न आयंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्ह्विष्मंन्तो नमंसा विधेम ते तन्मे मनंः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२९॥

> ऋत र सत्यं पेरं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गेलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमस्तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३०॥

कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टंमाय तव्यंसे। वो चेम शन्तंम १ हृदे। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु तन्मे मनंः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३१॥

ब्रह्मंजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुची वेन आवः। सबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सुतश्च योनिमसंतश्च विवस्तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३२॥
यः प्राणितो निमिषतो मंहित्वैक इद्राजा जगेतो बुभूवं।
य ईशें अस्य द्विपद्श्वतुष्पदः कस्मै देवायं
हिवषां विधेम तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३३॥
य औत्मदा बंलदा यस्य विश्वं उपासंते प्रशिष्ं यस्यं
देवाः।

यस्यं छायाऽमृतं यस्यं मृत्युः कस्मैं देवायं हिवषां विधेम तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३४॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवंनाऽऽविवेश तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु तन्मे मनंः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३५॥

गुन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपृष्टां करीषिणीम्। ईश्वरी र सर्वभूतानां तामिहोपेह्वये श्रियं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥३६॥ य इद शिवंसङ्कल्प र सदा ध्यायंन्ति ब्राह्मणाः। ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥ हृदयाय नमः॥



॥ पुरुषसूक्तम्॥

ॐ सहस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ पुरुष पृवेद सर्वम्॥ यद्भृतं यच् भव्यम्। उतामृत्त्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहंति॥ पुतावांनस्य महिमा। अतो ज्याया ईश्च पूर्रुषः। पादौंऽस्य विश्वां भूतानिं। त्रिपादंस्यामृतंं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुंषः। पादौँ उस्येहा ऽऽभंवात्पुनंः। ततो विश्वङ्कांकामत्। साशनानशने अभि॥ तस्माँद्विराडंजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृश्चाद्भूमिमथों पुरः॥ यत्पुरुंषेण हविषां। देवा युज्ञमतंन्वत। वसन्तो अंस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः श्ररद्धविः॥ सप्तास्यऽऽंसन्परिधः त्रिः सप्त समिर्धः कृताः। देवा यद्यज्ञं तंन्वानाः। अबंध्रन्पुरुषं पृशुम्॥ तं युज्ञं बुर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमंग्रतः।

तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये॥ तस्माँ द्यज्ञात्सं वृहुतंः। सम्भृतं पृषदाज्यम्। पृशू श्रस्ता श्लेके वायव्यान्। आर्ण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ तस्माँ द्यज्ञात्सं वृहुतंः। ऋचः सामां नि जित्रे। छन्दा श्रेस जित्रेरे तस्माँत्।

यजुस्तस्मांदजायत॥ तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोभ्यादंतः। गावों ह जिज्ञेर तस्मांत्। तस्मांज्ञाता अंजावयः॥ यत्पुरुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमंस्य को बाहू। कावूरू पादांवुच्येते॥ ब्राह्मणोंऽस्य मुखंमासीत्। बाहू रांजन्यः कृतः।

ऊरू तर्दस्य यद्वैश्यः। पुद्धाः शूद्रो अंजायत॥ चुन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चे। प्राणाद्वायुरंजायत॥ नाभ्यां आसीद्नतरिक्षम्। शीष्णो द्योः समेवर्तत। पद्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रौत्। तथां लोकाः अंकल्पयन्॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंर्णं तमंस्स्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरेः। नामानि कृत्वाऽभिवद्न् यदास्ते॥ धाता पुरस्ताद्यमुंदाज्ञहारं। श्रऋः प्रविद्वान्प्रदिश्रश्चतंस्रः। तमेवं विद्वान्मृतं इह भंवति। नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते॥ यज्ञेनं यज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ शिरसे स्वाहा॥



॥ उत्तरनारायणम्॥

अद्भः सम्भूतः पृथिव्यै रसाँच। विश्वकंर्मणः समंवर्तताधि। तस्य त्वष्टां विदधंद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजान्मग्रै॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्॥ आदित्यवंर्णं तमंसः परस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्थां विद्यतेयंऽनाय॥ प्रजापंतिश्वरित गर्भे अन्तः। अजायंमानो बहुधा विजायते। तस्य धीराः परिजानित् योनिम्। मरीचीनां पदिमच्छिन्ति वेधसंः॥ यो देवेभ्य आतंपित। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मये॥ रुचं ब्राह्मं जनयंन्तः। देवा अग्रे तदंबुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्यं देवा असन् वशें॥ हीश्चं ते लक्ष्मीश्च पत्र्यौं। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्ं। इष्टं मनिषाण। अमुं मनिषाण। सर्वं मनिषाण॥

शिखायै वषट्॥



॥ अप्रतिरथम्॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - ४/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - ४)

आशुः शिशांनो वृष्भो न युध्मो घंनाघनः क्षोभंणश्चर्षणीनाम्। सङ्कन्दंनोऽनिमिष एंकवीरः शृतः सेनां अजयत् साकिमन्द्रंः। सङ्कन्देनेनानिमिषेणं जिष्णुनां युत्कारेणं दुश्च्यवनेनं धृष्णुनां। तदिन्द्रंण जयत् तत्संहध्वं युधों नर् इषुंहस्तेन वृष्णां। स इषुंहस्तैः सनिष्ङ्गिभिर्वशी सङ्स्रंष्टा स युध् इन्द्रों गुणेनं। स्र्मृष्ट्जिथ्सोम्पा बांहुश्ध्यूर्ध्वधंन्वा प्रतिंहिताभिरस्तां।

बृहंस्पते परि दीया रथेन रक्षोहाऽमित्रा अप्बार्धमानः।
प्रभुअन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयंत्रस्माकंमेध्यविता रथांनाम्।
गोत्रभिदं गोविदं वर्ज्रबाहुं जयंन्तमज्मं प्रमृणन्तमोजंसा।
इम स् संजाता अनुं वीरयध्वमिन्द्र सखायोऽनु स र्मध्यम्। बलुविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहंस्वान् वाजी सहंमान उग्रः। अभिवीरो अभिसंत्त्वा सहोजा जैत्रीमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्। अभि गोत्राणि सहंसा गाहंमानोऽदायो वीरः शृतमंन्युरिन्द्रः।

दुश्चवनः पृंतनाषाडंयुध्यों ऽस्माक् सेनां अवतु प्र युत्सु। इन्द्रं आसां नेता बृह्स्पित्दिक्षिणा यज्ञः पुर एंतु सोमः। देवसेनानांमिभिभञ्जतीनां जयंन्तीनां मुरुतों यन्त्वग्रें। इन्द्रंस्य

वृष्णो वर्रणस्य राज्ञं आदित्यानां म्रुर्ता शर्षं उग्रम्।
महामंनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयंतामुदंस्थात्।
अस्माक्मिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषंवस्ता जंयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मानुं देवा अवता हवेषु।
उद्धंर्षय मघवन्नायुंधान्युत् सत्त्वनां मामकानां महा हिस।
उद्घंत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयंतामेतु घोषंः। उप् प्रेत जयंता नरः स्थिरा वंः सन्तु बाहवंः। इन्द्रों वः शर्म यच्छत्त्वनाधृष्या यथाऽसंथ। अवसृष्टा परां पत् शरंव्ये ब्रह्मंस शिता।

गच्छामित्रान् प्रविश मैषां कं चनोच्छिषः। मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमंस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवंस्ताम्। उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जयंन्तं त्वामन् मदन्तु देवाः। यत्रं बाणाः सम्पतिन्तं कुमारा विशिखा इंव। इन्द्रों नस्तत्रं वृत्रहा विश्वाहा शर्मं यच्छतु॥ कवचाय हुम्॥

॥ प्रतिपूरुषम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ८/अनुवाकः - ६)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निर्वपत्येकमतिरिक्तं यावंन्तो गृह्याः स्मस्तेभ्यः कर्मकरं पशूना शर्मासि शर्म यर्जमानस्य शर्म मे यच्छैकं एव रुद्रो न द्वितीयांय तस्थ आखुस्तें रुद्र पशुस्तं जुंषस्वैष तें रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिकया तं ज्रुंषस्व भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजमथों अस्मभ्यं भेषज्ञ सुभेषजं यथाऽसंति। सुगं मेषायं मेष्यां अवाम्ब रुद्रमंदिमह्यवं देवं त्र्यम्बकम्। यथां नः श्रेयंसः करद्यथां नो वस्यंसः करद्यथां नः पशुमतः करद्यथां नो व्यवसाययात्। त्र्यंम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुंष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमंव बन्धंनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतांत्॥ एष तें रुद्रभागस्तं ज्रुंषस्व तेनांवसेनं परो मूजंवतोऽतीह्यवंततधन्वा पिनांकहस्तः कृत्तिंवासाः॥

॥ प्रतिपूरुषम् (ब्रा०) ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - १/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - १०)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निवंपति। जाता एव प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एकमितंरिक्तम्। जनिष्यमांणा एव प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एकंकपाला भवन्ति। एकधैव रुद्रं निरवंदयते। नाभिघांरयति। यदंभिघारयेंत्। अन्तर्वचारिण ५ रुद्रं कुर्यात्। एकोल्मुकेनं यन्ति। तिष्क रुद्रस्यं भागुधेयम्। इमां दिशं यन्ति। एषा वै रुद्रस्य दिक्। स्वायांमेव दिशि रुद्रं निरवंदयते। रुद्रो वा अपशुकाया आहुत्यै नातिष्ठत। असौ ते पृशुरिति निर्दिशेद्यं द्विष्यात्। यमेव द्वेष्टिं। तमंस्मै पशुं निर्दिशति। यदि न द्विष्यात्। आखुस्ते पशुरितिं ब्रूयात्। न ग्राम्यान् पशून् हिनस्तिं। नऽऽरण्यान्। चतुष्पथे जुंहोति। एष वा अंग्रीनां पड्ढींशो नामं। अग्निवत्येव जुंहोति। मध्यमेनं पूर्णनं जुहोति। सुग्ध्यंषा। अथो खलुं। अन्तमेनैव होतव्यम्। अन्तत एव रुद्रं निरवदयते। एष ते रुद्र

भागः सह स्वस्राऽम्बिकयेत्यांह। शरद्वा अस्याम्बिका स्वसां। तया वा एष हिनस्ति। य हिनस्ति। तयेवैन र सह शंमयति। भेषजं गव इत्याह। यावन्त एव ग्राम्याः पुशर्वः। तेभ्यों भेषुजं करोति। अवाम्ब रुद्रमंदिमहीत्यांह। आशिषंमेवैतामाशाँस्ते। त्र्यंम्बकं यजामह इत्यांह। मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतादिति वावैतदांह। उत्किरन्ति। भगंस्य लीफ्सन्ते। मूर्ते कृत्वाऽऽसंजन्ति। यथा जनं यतेऽवसं करोतिं। ताद्दगेव तत्। एष तें रुद्र भाग इत्यांह निरवंत्यै। अप्रंतीक्षमायंन्ति। अपः परिंषिश्चति। रुद्रस्यान्तर्हेत्यै। प्र वा एतें स्माल्लोकाच्यवन्ते। ये त्र्यम्बकैश्चरन्ति। आदित्यं चरुं पुनरेत्य निर्वपति। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतितिष्ठन्ति।

नेत्रत्रयाय वौषट्॥

॥ शतरुद्रीयम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - १४)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्व शर्धो मार्रतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यासि शङ्ग्यस्त्वं पूषा विधतः पांसि नु त्मना। आ वो राजानमध्वरस्य रुद्र होतार सत्ययज् र रोदंस्योः। अग्निं पुरा तनिय्नोर्चित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्। अग्निरहोता नि षंसादा यजीयानुपस्थे मातुः सुर्भावं लोके। युवां क्विः पुरुनिष्ठ ऋतावां धर्ता कृष्टीनामृत मध्यं इद्धः।

साध्वीमंकर्देववीतिं नो अद्य यज्ञस्यं जिह्नामंविदाम् गृह्याम्। स आयुराऽगांत्सुर्भिवसानो भृद्रामंकर्देवहूंतिं नो अद्य। अर्ऋन्दद्गिः स्तुनयंत्रिव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधंः सम्अत्र। सद्यो जंज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदंसी भानुनां भात्यन्तः। त्वे वसूंनि पुर्वणीक होतर्दोषा वस्तोरेरिरे य्जियांसः।

क्षामेंव विश्वा भ्वंनानि यस्मिन्त्स सौभंगानि दिधेरे पावके। तुभ्यं ता अंङ्गिरस्तम् विश्वाः सुक्षितयः पृथंक्। अग्ने कामांय येमिरे। अश्याम् तं कामंमग्ने तवोत्यंश्यामं रियेश् रियवः सुवीरम्। अश्याम् वाजंम्भि वाजयंन्तोऽश्यामं द्युम्नमंजराऽजरंन्ते। श्रेष्ठं यविष्ठ भारताऽग्ने द्युमन्तुमा भंर।

वसो पुरुस्पृह १ र्यिम्। स श्वितानस्तंन्यतू रोचन्स्था अजरेभिनानिदद्भिर्यविष्ठः। यः पावकः पुरुतमेः पुरूणि पृथून्यग्निरेनुयाति भर्वन्नं। आयृष्टे विश्वतो दधद्यम्ग्निर्वरेण्यः। पुनस्ते प्राण आयंति परा यक्ष्म १ सुवामि ते। आयुर्दा अग्ने ह्विषो जुषाणो घृतप्रंतीको घृतयोनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेवं पुत्रम्भिरंक्षतादिमम्।

तस्मैं ते प्रतिहर्यते जातंवेदो विचंर्षणे। अग्ने जनांमि सुष्टुतिम्। दिवस्परिं प्रथमं जंज्ञे अग्निर्स्मिद्धितीयं परिं जातवेदाः। तृतीयंमुप्सु नृमणा अजंस्रमिन्धांन एनं जरते स्वाधीः। शुचिः पावक् वन्द्योऽग्ने बृहद्विरोचसे। त्वं घृतिभिराहुंतः। दृशानो रुका उर्व्या व्यंद्यौदुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निर्मृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजंनयत्सुरेताः। आग्निरमृतो तज् आनृद्धृचि रेतो निषिक्तं द्यौरभीकै। अग्निः शर्धमनवद्यं युवानः स्वाधियं जनयत्सूदयंच। स्वतंत्रीयसा मनसा त्वोतं उत शिक्ष स्वपृत्यस्यं शिक्षोः। अग्ने रायो नृतंमस्य प्रभूतौ भूयामं ते सुष्टुतयंश्च वस्वंः। अग्ने सहन्तमा भर द्युम्रस्यं प्रासहां र्यिम्।

विश्वा यश्चर्षणीर्भ्यांसा वाजेषु सासहंत्। तमंग्ने पृतना सह रे र्यि र सहस्व आ भेर। त्व र हि सृत्यो अद्भुतो दाता वाजंस्य गोमंतः। उक्षान्नांय वृशान्नांय सोमंपृष्ठाय वेधसें। स्तोमैंविधेमाग्नयें। वृद्मा हि सूनो अस्यद्मसद्वां चुके अग्निर्जनुषाऽज्माऽन्नम्ं। स त्वं नं ऊर्जसन् ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेष्यन्तः।

अग्न आयू रेषि पवस आ सुवोर्जुमिषं च नः। आरे बांधस्व

दुच्छुनाँम्। अग्ने पर्वस्व स्वपां अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दध्त्पोष र्रे र्यिं मिये। अग्ने पावक रोचिषां मृन्द्रयां देव जिह्नयां। आ देवान् विश्व यिक्षं च। स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवा इहऽऽवंह। उपं यज्ञ हिवश्चं नः। अग्निः शुचिं व्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कृविः। शुचीं रोचत् आहुंतः। उदंग्ने शुचंयस्तवं शुक्रा भ्राजंन्त ईरते। तव ज्योती इंष्यर्चयः॥

॥ शतरुद्रीयम् (ब्रा०)॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे काठके प्रश्नः - २/अनुवाकः - २)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवः। त्व शर्धो मार्रतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यास शङ्गयः। त्वं पूषा विधतः पासि न त्मनां। देवां देवेषुं श्रयध्वम्। प्रथंमा द्वितीयेषु श्रयध्वम्। द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वम्। तृतीयाश्चतुर्थेषुं श्रयध्वम्। चतुर्थाः पश्चमेषुं श्रयध्वम्। पश्चमाः षृष्ठेषुं श्रयध्वम्॥ षृष्ठाः संप्तमेषुं श्रयध्वम्। सप्तमा अष्टमेषुं

अष्टमा नंवमेषुं श्रयध्वम्। नवमा दंशमेषुं श्रयध्वम्। दशमा एंकादशेषुं श्रयध्वम्। एकादशा द्वांदशेषुं श्रयध्वम्। श्रयध्वम्। द्वादशास्त्रयोदशेषुं श्रयध्वम्। त्रयोदशाश्चंतुर्दशेषुं श्रयध्वम्। चतुर्दशाः पेश्चदशेषुं श्रयध्वम्। पश्चदशाः षोंडशेषुं श्रयध्वम्॥ षोडशाः संप्तदशेषुं श्रयध्वम्। सप्तदशा अष्टादशेषुं श्रयध्वम्। अष्टादशा एंकान्नवि शेषुं श्रयध्वम्। पुकान्नविर्शा विर्शेषुं श्रयध्वम्। विरशा एंकवि शेषुं श्रयध्वम्। एकवि शा द्वांवि शेषुं श्रयध्वम्। द्वावि शास्त्रंयोवि शेषु श्रयध्वम्। त्रयोवि शाश्चंतुर्वि शेषुं श्रयध्वम्। चतुर्वि १ शाः पंश्रवि १ शेषुं श्रयध्वम्। पश्रवि १ शाः षंड्वि १ शेषुं श्रयध्वम्॥ षड्वि १ शाः संप्तवि १ शेषुं श्रयध्वम्। सप्तविश्शा अष्टाविश्शेषुं श्रयध्वम्। अष्टाविश्शा एंकान्नत्रि शेषुं श्रयध्वम्। एकान्नत्रि शास्त्रि शेषुं श्रयध्वम्। त्रिष्शा एंकत्रिष्शेषुं श्रयध्वम्। एकत्रिष्शा द्वांत्रि १ शेषुं श्रयध्वम्। द्वात्रि १ शास्त्रंयस्त्रि १ शेषुं श्रयध्वम्। देवाँ स्त्रिरेकादशास्त्रिस्त्रंयस्त्रि १ शाः। उत्तरे भवत। उत्तरवर्त्मान उत्तरसत्वानः। यत्काम इदं जुहोिमा। तन्मे समृध्यताम्। वयः स्याम् पत्यो रयीणाम्। भूर्भुवः स्वः स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः॥ अस्त्राय फट्॥

॥पञ्चाङ्गम्॥

ह्र्सः शुंचिषद्वसुंरन्तिरक्ष्यसद्धोतां वेदिषदितिंथिर्दुरोण्सत्। नृषद्वंरुसदंत्सद्योम्सद्बा गोजा ऋत्जा अंद्रिजा ऋतं बृहत्॥

प्रतिष्ठण्णं स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमंणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥ व्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ तत्संवितुर्वृणीमहे। व्यं देवस्य भोजनम्। श्रेष्ठ सर्वधात्मम्। तुरं भगस्य धीमहि॥

विष्णुर्योनिं कल्पयतु। त्वष्टां रूपाणिं पि शतु।

आसिंश्चतु प्रजापंतिः। धाता गर्भं दधातु ते॥



॥ अष्टाङ्ग-नमस्काराः॥

हिर्ण्यगर्भः समंवर्तताग्रे भूतस्यं जातः पितरेकं आसीत्। सदांधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवायं हिवषां विधेम॥ [उरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥१॥

यः प्राणितो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगेतो बुभूवे। य ईशे अस्य द्विपद्श्वतुष्पदः कस्मै देवायं हिवर्षा विधेम॥ [शिरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥२॥

ब्रह्मंजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचो वेन आवः। सबुध्नियां उपमा अस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमसंतश्च विवेः॥१। [दृष्ट्या] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥३॥

मही द्योः पृथिवी चं न इमं युज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥

[मनसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥४॥

उपश्वासय पृथिवीमुत द्यां पुंरुत्रा ते मनुतां विष्ठितं जगत्। स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्दवीयो अपसेध शत्रून्॥ [वचसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥५॥

अग्ने नयं सुपर्था राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् युयोध्यंस्मञ्जहराणमेनो भूयिष्ठां ते नमं उक्तिं विधेग [पद्माम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥६॥

या तें अग्ने रुद्रिया तुनूस्तयां नः पाहि तस्याँस्ते स्वाहाँ॥ [कराभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥७॥

इमं यंमप्रस्त्रमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः आत्वा मन्नाः कविश्वस्ता वहन्त्वेना राजन् ह्विषां मादयस्व [कर्णाभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥८॥



॥लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम्॥

अथऽऽत्मानं शिवात्मानं श्री रुद्र रूपं ध्यायेत्॥ शृद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पश्चवऋकम्। गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥ नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्। व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥ कमण्डल्वक्षसूत्राणां धारिणं शूलपाणिनम्। ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखामुद्योतधारिणम्॥ वृषस्कन्धसमारूढम् उमादेहार्धधारिणम्। अमृते नाप्नतं शान्तं दिव्यभोगसमन्वितम्॥ दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्। नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥ सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्। एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥ अथातो रुद्र स्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः। आदित एव तीर्थे स्नात्वा उदेत्य शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्रवासा ईशानस्य प्रतिकृतिं कृत्वा तस्य दक्षिणप्रत्यग्देशे देवाभिमुखः स्थित्वा आत्मिन देवताः स्थापयेत्॥

॥लघुन्यासे देवता-स्थापनम्॥

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठत्। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु। बाह्वोरिन्द्रस्तिष्ठतु। जठरे अग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु। कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु। वक्रे सरस्वती तिष्ठत्। नासिकयोर्वायुस्तिष्ठत्। नयनयोश्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेताम्। कर्णयोरिश्वनौ तिष्ठेताम्। ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु। मुर्ध्यादित्यास्तिष्ठन्त्। शिरसि महादेवस्तिष्ठतु। शिखायां वामदेवस्तिष्ठत्। पृष्ठे पिनाकी तिष्ठत्। पुरतः शूली तिष्ठत्। पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठेताम्। सर्वतो वायुस्तिष्ठत्। ततो बहिः सर्वतोऽग्निर्ज्वालामाला-परिवृतस्तिष्ठत्। सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवता यथास्थानं तिष्ठन्त्। मां रक्षन्तु। [सर्वान् महाजनान् सकुट्म्बं रक्षन्त्॥]

अग्निर्मे वाचि श्रितः। वाग्घृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतुं ब्रह्मणि। (जिह्वा)

वायुर्में प्राणे श्रितः। प्राणो हृदये। हृदयं मिये। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (नासिका)

सूर्यो मे चक्षुंषि श्रितः। चक्षुर्ह्रदेये। हृदेयं मिये। अहम्मृते। अमृतं ब्रह्मंणि। (नेत्रे)

चन्द्रमां मे मनंसि श्रितः। मनो हृदये। हृदयं मिये। अहमुमृते। अमृतं ब्रह्मणि। (वक्षः)

दिशों मे श्रोत्रें श्रिताः। श्रोत्र हदंये। हदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (श्रोत्रे)

आपों मे रेतंसि श्रिताः। रेतो हृदंये। हृदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (गुह्मम्)

पृथिवी मे शरीरे श्रिता। शरीर् हदंये। हदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (शरीरम्)

ओ्षिध्वनस्पतयों में लोमंसु श्रिताः। लोमांनि हृदये। हृदयं

मियं। अहमुमृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (लोमानि)

इन्द्रों में बलें श्रितः। बलु हदंये। हदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (बाहू)

पुर्जन्यों मे मूर्प्नि श्रितः। मूर्धा हृदये। हृदयं मिये। अहम्मृते। अमृतं ब्रह्मणि। (शिरः)

ईशांनो मे मुन्यौ श्रितः। मृन्युर्ह्दये। हृदयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

आत्मा मं आत्मिनं श्रितः। आत्मा हृदंये। हृदंयं मियं। अहमुमृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

पुनंर्म आत्मा पुन्रायुरागाँत्। पुनंः प्राणः पुन्राकूंत्मागाँत्। वैश्वान्रो रिश्मिभिवीवृधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतंस्य गोपाः॥ (सर्वाण्यङ्गानि संस्पृश्य स्थापनं कृत्वा मानसैराराधयेत्॥)

॥ कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम्॥

ध्यायेन्निरामयं वस्तुं सर्गस्थितिलयादिकम्। निर्गुणं निष्कलं नित्यं मनोवाचामगोचरम्॥१॥ गङ्गाधरं शशिधरं जटामकुटशोभितम्। श्वेतभूतित्रिपुण्ड्रेण विराजितललाटकम्॥२॥ लोचनत्रयसम्पन्नं स्वर्णकुण्डलशोभितम्। स्मेराननं चतुर्बाहुं मुक्ताहारोपशोभितम्॥३॥ अक्षमालां स्धाकुम्भं चिन्मयीं मुद्रिकामपि। पुस्तकं च भुजैर्दिव्यैर्दधानं पार्वतीपतिम्॥४॥ श्वेताम्बरधरं श्वेतं रत्नसिंहासनस्थितम्। सर्वाभीष्टप्रदातारं वटमूलनिवासिनम्॥५॥ [वामाङ्कसंस्थितां गौरीं बालार्कायुतसन्निभाम्।] जपाकुस्मसाहस्रसमानश्रियमीश्वरीम्। स्वर्णरत्रखचितमकुटेन विराजिताम्॥६॥ ललाटपट्टसंराजत्संलग्नतिलकाश्चिताम् । राजीवायतनेत्रान्तां नीलोत्पलदलेक्षणाम्॥७॥

सन्तप्तहेमखचित ताटङ्काभरणान्विताम्। ताम्बूलचर्वणरतरक्तजिह्वाविराजिताम् ॥८॥

पताकाभरणोपेतां मुक्ताहारोपशोभिताम्। स्वर्णकङ्कणसंयुक्तैश्चतुर्भिर्बाहुभिर्युताम् ॥९॥

सुवर्णरत्नखचित-काश्चीदामविराजिताम् । कदलीललितस्तम्भ-सन्निभोरुयुगान्विताम्॥१०॥

श्रिया विराजितपदां भक्तत्राणपरायणाम्। अन्योन्याश्लिष्टहृद्वाहू गौरीशङ्करसंज्ञकम्॥११॥

सनातनं परं ब्रह्म परमात्मानमव्ययम्। आवाहयामि जगतामीश्वरं परमेश्वरम्॥१२॥



॥ षोडशोपचार पूजा॥



॥श्रीरुद्रनाम त्रिशती॥

नमो हिरंण्यबाहवे नमंः। सेनान्यें नमंः। दिशां च पत्तंये नर्मः। नर्मो वृक्षेभ्यो नर्मः। हरिकेशेभ्यो नर्मः। पशूनां पत्ये नर्मः। नमंः सस्पिञ्जराय नमंः। त्विषीमते नमंः। पथीनां पर्तये नमंः। नमों बभुशाय नमंः। विव्याधिने नर्मः। अन्नानां पत्ये नर्मः। नमो हरिकेशाय नमंः। उपवीतिने नमंः। पुष्टानां पतंये नर्मः। नर्मो भवस्य हेत्यै नर्मः। जर्गतां पतिये नर्मः। नर्मो रुद्राय नर्मः। आतताविने नर्मः। क्षेत्राणां पतंये नर्मः। नमः सूताय नमः। अहंन्त्याय नमः। वनानां पत्रंये नमः। नमो रोहिताय नमः। स्थपतेये नर्मः। वृक्षाणां पतेये नर्मः। नमों मन्त्रिणे नमंः। वाणिजाय नमंः। कक्षांणां पत्ये नर्मः। नर्मा भुवन्तये नर्मः।

वारिवस्कृताय नर्मः। ओषंधीनां पत्ये नर्मः। नर्म उच्चेघींषाय नर्मः। आऋन्दयंते नर्मः। पत्तीनां पत्ये नर्मः। नर्मः कृत्स्रवीताय नर्मः। धावते नर्मः। सत्त्वनां पत्ये नर्मः॥

नमः सहमानाय नमः। निव्याधिने नमः। आव्याधिनीनां पत्तेये नर्मः। नर्मः ककुभाय नर्मः। निषङ्गिणे नर्मः। स्तेनानां पत्तंये नर्मः। नमो निषङ्गिणे नमः। इषुधिमते नमः। तस्कराणां पत्ये नर्मः। नमो वश्चेते नर्मः। परिवर्श्वते नर्मः। स्तायूनां पत्तेये नर्मः। नमों निचेरवे नमंः। परिचराय नमंः। अरंण्यानां पतंये नर्मः। नर्मः सृकाविभ्यो नर्मः। जिघा रसद्यो नर्मः। मुष्णतां पतंये नर्मः। नमोऽसिमद्भो नर्मः। नक्तं चर्रद्भो नर्मः। प्रकृन्तानां पत्ये नर्मः। नर्म उष्णीषिने नर्मः।

गिरिचराय नर्मः। कुलुश्चानां पत्ये नर्मः।
नम् इषुंमद्र्यो नर्मः। धन्वाविभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः।
नर्म आतन्वानेभ्यो नर्मः। प्रितिदर्धानेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः।
नर्म आयच्छद्र्यो नर्मः। विसृजद्धंश्च नर्मः। वो नर्मः।
नर्मा अस्पिनेभ्यो नर्मः। विध्यंद्धश्च नर्मः। वो नर्मः।
नर्म आसीनेभ्यो नर्मः। शर्यानेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः।
नर्मः स्वपद्धो नर्मः। आयंत्रध्य नर्मः। वो नर्मः।
नर्मास्तष्ठद्यो नर्मः। धावंद्धश्च नर्मः। वो नर्मः।
नर्माः स्माभ्यो नर्मः। स्भापंतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः।
नर्मो अश्वभ्यो नर्मः। अश्वंपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः।

नमं आव्याधिनींभ्यो नमंः। विविध्यंन्तीभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नम् उर्गणाभ्यो नमंः। तृष्ह्तीभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमो गृत्सेभ्यो नमंः। गृत्सपंतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमो व्रातेंभ्यो नमंः। व्रातंपतिभ्यश्च नमंः। वो नमंः। नमों गणेभ्यो नर्मः। गणपंतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो विरूपेभ्यो नर्मः। विश्वरूपेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमों महद्यो नमंः। क्षुल्लकेभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमों रथिभ्यो नमंः। अरथेभ्यंश्च नमंः। वो नमंः। नमो रथेंभ्यो नर्मः। रथंपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः सेनाभ्यो नमः। सेनानिभ्यंश्च नमः। वो नमः। नर्मः क्षुत्तृभ्यो नर्मः। सङ्ग्रहीतृभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमस्तक्षंभ्यो नर्मः। रथकारेभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः कुलालेभ्यो नमः। कमरिभ्यश्च नमः। वो नमः। नर्मः पुञ्जिष्टेभ्यो नर्मः। निषादेभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमं इपुकृद्धो नमः। धन्वकृद्धश्च नमः। वो नमः। नमों मृगयुभ्यो नमः। श्वनिभ्यंश्च नमः। वो नमः। नमः श्वभ्यो नमः। श्वपंतिभ्यश्च नमः। वो नमः॥

नमों भवायं च नमंः। रुद्रायं च नमंः। नमंः शुर्वायं च नमंः। पुशुपतंये च नमंः। नमो नीलंग्रीवाय च नमंः। शितिकण्ठांय च नमंः। नर्मः कपर्दिने च नर्मः। व्युप्तकेशाय च नर्मः। नमः सहस्राक्षायं च नमः। शतधंन्वने च नमः। नमों गिरिशायं च नमंः। शिपिविष्टायं च नमंः। नमों मीदुष्टंमाय च नमंः। इषुंमते च नमंः। नमों ह्रस्वायं च नमंः। वामनायं च नमंः। नमों बृहते च नमंः। वर्षीयसे च नमंः। नमो वृद्धार्यं च नमः। संवृध्वेने च नमः। नमो अग्नियाय च नमः। प्रथमाय च नमः। नमं आशवें च नमंः। अजिरायं च नमंः। नमः शीघ्रियाय च नमः। शीभ्याय च नमः। नमें ऊर्म्याय च नमेः। अवस्वन्याय च नमेः। नर्मः स्रोतस्याय च नर्मः। द्वीप्याय च नर्मः॥

नमौ ज्येष्ठायं च नमंः। कृनिष्ठायं च नमंः। नमंः पूर्वजायं च नमंः। अपुरुजायं च नमंः। नमों मध्यमायं च नमंः। अपगल्भायं च नमंः। नमों जघन्यांय च नमंः। बुध्नियाय च नमंः। नमः सोभ्याय च नमः। प्रतिसर्याय च नमः। नमो याम्याय च नमः। क्षेम्याय च नमः। नमं उर्वर्याय च नमंः। खल्याय च नमंः। नमः श्लोक्याय च नमः। अवसान्याय च नमः। नमो वन्याय च नमः। कक्ष्याय च नमः। नमः श्रवायं च नमः। प्रतिश्रवायं च नमः। नमं आशुषेणाय च नमंः। आश्र्रथाय च नमंः। नमः शूराय च नमः। अवभिन्दते च नमः। नमों वर्मिणें च नमंः। वरूथिने च नमंः। नमों बिल्मिनें च नमंः। कवचिनें च नमंः। नमः श्रुतायं च नमः। श्रुतसेनायं च नमः॥

नमो दुन्दुभ्याय च नमः। आहुन्न्याय च नमः। नमो धृष्णवे च नमः। प्रमुशाय च नमः। नमों दूतायं च नमंः। प्रहिताय च नमंः। नमों निषङ्गिणे च नमंः। इषुधिमतें च नमंः। नमस्तीक्ष्णेषंवे च नमंः। आयुधिनं च नमंः। नमः स्वायुधायं च नमः। सुधन्वंने च नमः। नमः स्रुत्योय च नर्मः। पथ्योय च नर्मः। नमः काट्यांय च नमः। नीप्यांय च नमः। नमः सूद्याय च नमः। सरस्याय च नमः। नमों नाद्यायं च नमंः। वैशन्तायं च नमंः। नमः कूप्याय च नमः। अवट्याय च नमः। नमो वर्ष्याय च नमंः। अवर्ष्यायं च नमंः। नमों मेघ्यांय च नमंः। विद्युत्यांय च नमंः। नमं ईप्रियांय च नमंः। आतप्यांय च नमंः। नमो वात्यांय च नमंः। रेष्मियाय च नमंः। नमों वास्तव्याय च नमंः। वास्तुपाय च नमंः॥

नमः सोमाय च नमः। रुद्रायं च नमः।

नर्मस्ताम्रायं च नर्मः। अरुणायं च नर्मः। नमः शङ्गायं च नमः। पशुपतंये च नमः। नमं उग्रायं च नमंः। भीमायं च नमंः। नमों अग्रेवधायं च नमंः। दूरेवधायं च नमंः। नमों हन्ने च नमंः। हनीयसे च नमंः। नमों वृक्षेभ्यो नमंः। हरिकेशेभ्यो नमंः। नमंस्ताराय नमंः। नमंः शम्भवे च नमंः। मयोभवें च नर्मः। नर्मः शङ्करायं च नर्मः। मयस्करायं च नमंः। नमंः शिवायं च नमंः। शिवतंराय च नमंः। नमस्तीर्थ्याय च नमंः। कूल्याय च नमंः। नमंः पार्याय च नमंः। अवार्याय च नर्मः। नर्मः प्रतरंणाय च नर्मः। उत्तरंणाय च नर्मः। नर्म आतार्याय च नर्मः। आलाद्यांय च नर्मः। नमः शष्य्यांय च नर्मः। फेन्याय च नर्मः। नर्मः सिकत्याय च नर्मः। प्रवाह्यांय च नमंः॥

नमं इरिण्यांय च नमंः। प्रपथ्यांय च नमंः। नर्मः कि शिलायं च नर्मः। क्षयंणाय च नर्मः। नमः कपर्दिने च नमः। पुलस्तये च नमः। नमो गोष्ठाय च नमः। गृह्याय च नमः। नमस्तल्प्याय च नर्मः। गेह्याय च नर्मः। नमः काट्याय च नमः। गह्वरेष्ठायं च नमः। नमों हृद्य्याय च नमंः। निवेष्याय च नमंः। नर्मः पारस्त्रयाय च नर्मः। रजस्याय च नर्मः। नमः शुष्क्यांय च नमः। हरित्यांय च नमः। नमो लोप्याय च नमंः। उलप्याय च नमंः। नमं ऊर्व्याय च नमंः। सूर्म्याय च नमंः। नमः पर्ण्याय च नमः। पर्णशद्याय च नमः। नमोऽपगुरमाणाय च नमः। अभिघ्नते च नमः। नमं आख्खिदते च नमंः। प्रख्खिदते च नमंः। नमों वो नमंः।

किरिकेभ्यो नर्मः। देवाना् हृदयेभ्यो नर्मः। नर्मो विक्षीणकेभ्यो नर्मः। नर्मो विचिन्वत्केभ्यो नर्मः। नर्म आनिर्हृतेभ्यो नर्मः। नर्म आमीवत्केभ्यो नर्मः।



॥ प्रदक्षिणम्॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिंद्रज्ञीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनऽऽमंमत्॥ या ते रुद्र शिवा तृनः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसें॥ इमा रुद्रायं तृवसें कपूर्दिनें क्षयद्वीराय प्रभरामहे मृतिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नो रुद्रोत नो मयंस्कृधि क्षयद्वीराय नमंसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तदंश्याम् तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नो मृहान्तंमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥

मा नंस्तोके तनंये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवंधीर्हविष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आरात्तें गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्रम्समे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्यधां च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं गेर्तुसद् युवानं मृगं न भीममुंपहलुमुग्रम्। मृडा जंरित्रे रुंद्र स्तवांनो अन्यन्ते अस्मन्निवंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मुघवंद्र्यस्तनुष्व मीढ्वंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीढुंष्टम शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। परमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आ चर पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद विलोहित नर्मस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र हेतयोऽन्यम्स्मन्निवंपन्तु ताः॥ सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तव हेत्यः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥ प्रदक्षिणं कृत्वा॥

॥ नमस्काराः॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याँम्। तेषा १ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१॥

अस्मिन् मंहृत्यंर्ण्वें उन्तरिक्षे भवा अधि। तेषा रे सहस्रयोजने ऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥२॥

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शुर्वा अधः, क्षंमाचराः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥३॥

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर् रुद्रा उपंश्रिताः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥४॥

ये वृक्षेषुं स्स्पिञ्जंरा नीलंग्रीवा विलोहिताः। तेषा १ सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥५॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥६॥

ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥७॥

ये पृथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यृव्युर्धः। तेषा १ सहस्रयोज्ने-ऽव्धन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥८॥

ये तीर्थानि प्रचरंन्ति सृकावंन्तो निष्क्षिणंः। तेषा र सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥९॥

य एतावंन्तश्च भूया ५ सश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे। तेषा ५ सहस्रयोजने ऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१०॥ नमों रुद्रेभ्यो ये पृंथिव्यां येषामन्नमिषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नम्स्ते नों मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भें दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥११॥

नमों रुद्रेभ्यो येंऽन्तिरिक्षे येषां वात् इषंवस्तेभ्यो दश् प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नम्स्ते नों मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१२॥

नमों रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षिमधंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दिक्षणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोध्वस्तिभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१३॥

नमस्कारान् कृत्वा॥



॥ चमकानुवाकैः प्रार्थना॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंधन्तु वां गिरंः। द्युम्नैर्वाजंभिरागंतम्॥ वाजंश्व मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्चं मे ऋतुंश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं चं म आधीतं च मे वार्क्च मे मनंश्च मे चक्षुंश्च मे श्लोत्रं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजंश्च मे सहंश्च म आयुंश्च मे ज्ञरा चं म आत्मा चं मे त्नूर्श्चं मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानि च मे परूर्ंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठमं च म आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमंश्च मेऽम्मंश्च मे जेमा चं मे मिहुमा चं मे विर्मा चं मे प्रिथमा चं मे वर्ष्मा चं मे द्राघुया चं मे वृद्धं चं मे वृद्धिंश्च मे सृत्यं चं मे श्रद्धा चं मे जगंच मे धनं च मे वशंश्च मे त्विषिश्च मे ऋीडा चं मे मोदंश्च मे जातं चं मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं चं मे सुकृतं चं मे वित्तं चं मे वेद्यं च मे भूतं चं मे भविष्यचं मे सुगं चं मे सुपथं च म ऋद्धं चं म ऋदिंश्व मे क्रुप्तं चं मे क्रुप्तिंश्व मे मृतिश्वं मे सुमृतिश्वं मे॥२॥

शं चं मे मयंश्व मे प्रियं चं मेऽनुकामश्चं मे कामंश्व मे सौमन्सश्चं मे भूद्रं चं मे श्रेयंश्व मे वस्यंश्व मे यशंश्व मे भगंश्व मे द्रविणं च मे यन्ता चं मे धूर्ता चं मे क्षेमंश्व मे धृतिश्व मे विश्वं च मे महंश्व मे स्विचं मे ज्ञात्रं च मे सूश्चं मे प्रसूश्चं मे सीरं च मे ल्यश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनांमयच मे जीवातुंश्व मे दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च मे सुगं चं मे शर्यनं च मे सूषा चं मे सुदिनं च मे॥३॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पयंश्व मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिग्धंश्व मे सिपीतिश्व मे कृषिश्चं मे वृष्टिश्व मे जैत्रं च म औद्भिंद्यं च मे रियश्चं मे रायंश्व मे पुष्टं चं मे पुष्टिंश्व मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयंश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षिंतिश्च में कूर्यवाश्च मेऽन्नं च मेऽक्षेच में ब्रीहर्यश्च में यवाश्च में मार्षाश्च में तिलाश्च में मुद्राश्चं में खल्वाश्च में गोधूमाश्च में मुसुराश्च में प्रियङ्गंवश्च मेऽणंवश्च में श्यामाकाश्च में नीवाराश्च मे॥४॥

अश्मां च में मृत्तिंका च में गिरयंश्च में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पतियश्च में हिरंण्यं च में ऽयंश्च में सीसं च में त्रपृंश्च में श्यामं चं में लोहं चं में ऽग्निश्चं में आपंश्च में वीरुधंश्च म ओर्षधयश्च में कृष्टपच्यं चं में ऽकृष्टपच्यं चं में ग्राम्याश्चं में प्शवं आर्ण्याश्चं युज्ञेनं कल्पन्तां वित्तं चं में वित्तिंश्च में भूतं चं में भूतिश्च में वस्तुं च में वस्तिश्चं में कर्म च में शक्तिश्च में ऽर्थश्च म एमंश्च म इतिश्च में गितिश्च में॥५॥

अग्निश्चं म् इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म् इन्द्रंश्च मे सिवृता चं म् इन्द्रंश्च मे सरंस्वती च म् इन्द्रंश्च मे पूषा चं म् इन्द्रंश्च मे बृह्स्पतिश्च म् इन्द्रंश्च मे मित्रश्चं म् इन्द्रंश्च मे वर्रुणश्च म् इन्द्रंश्च मे त्वष्टां च म् इन्द्रंश्च मे धाता चं म् इन्द्रंश्च मे विष्णुंश्च म् इन्द्रंश्च मेऽिश्वनौं च म् इन्द्रंश्च मे म्रुतंश्च म् इन्द्रंश्च मे विश्वें च मे देवा इन्द्रंश्च मे पृथिवी च म् इन्द्रंश्च मेऽन्तिरिक्षं च म् इन्द्रंश्च मे द्यौश्चं म् इन्द्रंश्च मे दिशंश्च म् इन्द्रंश्च मे मूर्धा च म् इन्द्रंश्च मे प्रजापंतिश्च म् इन्द्रंश्च मे॥६॥

अर्शुश्चं मे र्शिमश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिंपतिश्च म उपार्शुश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानंश्च मे शुक्तश्चं मे मृन्थी चं म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वान्रश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वतीयांश्च मे माह्नेद्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पालीवतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥७॥

इध्मर्श्व मे बहिश्वं मे वेदिश्व मे धिष्णियाश्व मे स्नुचंश्व मे चमुसार्श्व मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वार्श्व मेऽधिषवणे च मे द्रोणकलृशश्चं मे वायव्यांनि च मे पूत्भृचं म आधवनीयंश्च म् आग्नींग्नं च मे हिव्धानं च मे गृहार्श्व मे सर्दश्च मे पुरोडाशाँश्व मे पचतार्श्व मेऽवभृथर्श्व मे स्वगाकारश्च मे॥८॥

अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यंश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शक्वंरीरङ्गुलंयो दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृक्चं मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यज्ञंश्च मे दीक्षा चं मे तपंश्च म ऋतुश्चं मे ब्रतं चं मेऽहोरात्रयौंवृंष्ट्या बृंहद्रथन्तरे चं मे यज्ञेनं कल्पेताम्॥९॥

गर्भांश्च मे वृत्साश्चं मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पश्चांविश्च मे पश्चांवी चं मे त्रिवृत्सश्चं मे त्रिवृत्सा चं मे तुर्यवाचं मे तुर्यौही चं मे पष्टवाचं मे पष्टौही चं म उक्षा चं मे वृशा चं म ऋष्भश्चं मे वेहचं मेऽनृङ्वां चं मे धेनुश्चं म आयुर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेनं कल्पतां चश्चंयज्ञेनं कल्पतां चश्चंयज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतां यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञोनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं

कल्पताम्॥१०॥

एकां च मे तिस्रश्चं मे पर्श्वं च मे सप्त चं मे नवं च म एकांदश च मे त्रयोंदश च मे पश्चंदश च मे सप्तदंश च मे नवंदश च म एकंवि श्रातिश्च मे त्रयोवि शतिश्च मे पश्चवि शतिश्च मे सप्तवि श्रातिश्च मे नवंवि शातिश्च म एकंत्रि शच मे त्रयंस्नि शच मे चतंस्रश्च मेऽष्टौ चं मे द्वादंश च मे षोडंश च मे विश्शतिश्चं मे चतुंर्वि १ शतिश्व मे ऽष्टावि १ शतिश्व मे द्वात्रि १ शच मे पद्गिरंशच मे चत्वारिर्शर्च मे चतुंश्चत्वारिर्शच मेऽष्टाचेत्वारि शच मे वार्जेश्च प्रस्वश्चांपिजश्च ऋतुंश्च सुवंश्व मूर्धा च व्यक्षियश्चान्त्यायनश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवंनश्चार्धिपतिश्च॥११॥

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥

इडां देवहूर्मनुंर्यज्ञनीर्बृह्स्पतिंरुक्थामदानिं शश्सिष्द्विश्वेंदेवाः सूँक्तवाचः पृथिवि मातुर्मा मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं वदिष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वार्चमुद्यासः शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमंस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवायं धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-ऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

तत्पुरुषाय विदाहें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥ (दशवारं जपेत्।)

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥



॥ प्रार्थना ॥



॥श्रीरुद्रजपः॥

अस्य श्री रुद्राध्याय-प्रश्न-महामन्नस्य। अघोर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सङ्कर्षणमूर्तिस्वरूपो योऽसावादित्यः परमपुरुषः स एष रुद्रो देवता॥

नमः शिवायेति बीजम्। शिवतरायेति शक्तिः। महादेवायेति कीलकम्। श्री साम्बसदाशिवप्रसादसिद्धार्थे जपे विनियोगः॥

॥करन्यासः॥

ॐ अग्निहोत्रात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः। चातुर्मास्यात्मने मध्यमाभ्यां नमः। निरूढपशुबन्धात्मने अनामिकाभ्यां नमः। ज्योतिष्टोमात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सर्वऋत्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥अङ्गन्यासः॥

अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः। दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा। चातुर्मास्यात्मने शिखायै वषट्। निरूढपशुबन्धात्मने कवचाय हुं। ज्योतिष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वक्रत्वात्मने अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

॥ध्यानम्॥

आपाताल-नभः-स्थलान्त-भुवन-ब्रह्माण्डमाविस्फुरत् ज्योतिः स्फाटिक-लिङ्ग-मौलि-विलसत्-पूर्णेन्दु-वान्तामृतै अस्तोकाप्नुतमेकमीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन् ध्यायेदीप्सितसिद्धये ध्रुवपदं विप्रोऽभिषिश्चेच्छिवम् ब्रह्माण्ड-व्याप्त-देहा भित्त-हिमरुचा भासमाना भुजङ्गेः कण्ठे कालाः कपर्दा-कलित-शिश-कलाश्चण्ड-कोदण्ड-हर् त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रकटित-विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः रुद्राः श्रीरुद्रसूक्त-प्रकटित-विभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्॥पश्चपूजा॥

लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि। हं आकाशात्मने पूष्पैः पूजयामि। यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि। रं अग्र्यात्मने दीपं दर्शयामि। वं अमृतात्मने अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि। सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि। ॐ गृणानां त्वा गृणपंति १ हवामहे क्विं केवीनामुंप्मश्रंवस्तमः ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नंः शृण्वन्नृतिभिः सीद् सादनम्॥

ॐ महागणपतये नमः॥

शं चं मे मयंश्व मे प्रियं चं मेऽनुकामश्चं मे कामंश्च मे सौमन्सश्चं मे भुद्रं चं मे श्रेयंश्च मे वस्यंश्च मे यशंश्च मे भगंश्च मे द्रविणं च मे यन्ता चं मे धृता चं मे क्षेमंश्च मे धृतिंश्च मे विश्वं च मे महंश्च मे सुंविचं मे ज्ञात्रं च मे सूश्चं मे प्रसूश्चं मे सीरं च मे ल्यश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच मे जीवातुंश्च मे दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च मे सुगं चं मे श्वयंनं च मे सूषा चं मे सुदिनं च मे॥३॥ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥ नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो तु इषंवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वंने बाहुभ्यामुत ते नमंः॥ या त इषुंः शिवतंमा शिवं बभूवं ते धनुः। शिवा शंरव्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥ या तें रुद्र शिवा तनूरघोराऽपांपकाशिनी। तयां नस्तनुवा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभुष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि सी: पुरुषं जगंत्॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छांवदामसि। यथां प्रंथमो दैव्यों भिषक्। अही ईश्च सर्वां अम्भयन्त्सर्वांश्च यातुधान्यः॥ असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बभुः सुंमङ्गलेः। ये चेमा र रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा र हेर्ड ईमहे॥ असौ योंऽवसपंति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदशन्नदंशनुदहार्यः॥ उतेनं विश्वां भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः। नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषे॥ अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमंः। प्र मुंश्र धन्वनुस्त्वमुभयोगर्बियोज्याम्॥ याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप। अवृतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष शतेंषुधे॥ निशीर्य शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव। विज्यं धनुः कपर्दिनो विशंल्यो बाणंवा उत्॥ अनेशन्नस्येषंव आभुरंस्य निषङ्गिथेः। या तें हेतिर्मीं दुष्टम हस्तें बभूवं ते धर्नुः॥ तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिब्युज। नमंस्ते अस्त्वायुंधायानांतताय धृष्णवें॥ उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तब धन्वंने। परि ते धन्वंनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतंः॥ अथो य इंषुधिस्तव्ऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥१॥

[नमंस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिका[ला]ग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकुण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय नमंः॥] नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्यें दिशां च पतंये नमो नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पत्तेये नमो नर्मः सुस्पिअंराय त्विषींमते पथीनां पत्रये नमो नमों बसुशायं विव्याधिनेऽन्नांनां पत्रये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पत्ये नमो नमो भवस्यं हेत्यै जगंतां पतंये नमो नमों रुद्रायांतताविने क्षेत्राणां पत्ये नमो नर्मः सूतायाहंन्त्याय वनानां पत्ये नमो नमो रोहिंताय स्थपतंये वृक्षाणां पतंये नमो नमों मित्रणे वाणिजाय कक्षाणां पत्ये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषंधीनां पतंये नमो नमं उच्चैर्घोषायाऋन्दयंते पत्तीनां पत्तेये नमो नमः कृत्स्रवीताय धावंते सत्वंनां पत्तेये नर्मः॥२॥

नमः सहंमानाय निव्याधिनं आव्याधिनीनां पतंये नमो नमेः ककुभायं निष्क्षिणं स्तेनानां पतंये नमो नमो निष्क्षिणं इषुधिमते तस्कराणां पतंये नमो नमो वश्चते परिवर्श्वते स्तायूनां पतंये नमो नमों निचेरवे परिचरायारंण्यानां पतंये नमो नमेः सृकाविभ्यो जिघा रसद्भी मुष्णतां पतंये नमो नमं आव्याधिनींभ्यो विविध्यंन्तीभ्यश्च वो नमो नम् उगंणाभ्यस्तृ १ हृतीभ्यंश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपंतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेंभ्यो व्रातंपितिभ्यश्च वो नमो नमों गृणेभ्यो गृणपंतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमों महद्भाः, श्रुष्ठकेभ्यंश्च वो नमो नमों रिथभ्योऽर्थेभ्यंश्च वो नमो नमो रथेभ्यो रथंपतिभ्यश्च वो नमो नमः सेनांभ्यः सेनानिभ्यंश्च वो नमो नमः, श्रुत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यंश्च वो नमो नम्स्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यंश्च वो नमो नमः कुलांलेभ्यः कुमिरेभ्यश्च वो नमो नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यंश्च वो नमो नमं इषुकृद्धो धन्वकृद्धांश्च वो नमो नमो मृग्युभ्यः श्वनिभ्यंश्च वो नमो नमो नमः श्वभ्यः श्वपंतिभ्यश्च वो नमः॥४॥

नमों भ्वायं च रुद्रायं च नमः श्वायं च पशुपतंये च नमो नीलंग्रीवाय च शितिकण्ठांय च नमः कप्रदिनं च व्यंप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षायं च श्तधंन्वने च नमो गिरिशायं च शिपिविष्टायं च नमों मीदुष्टंमाय चेषुंमते च नमों हुस्वायं च वामनायं च नमों बृह्ते च वर्षीयसे च नमों वृद्धायं च संवृध्वंने च नमो अग्नियाय च प्रथमायं च नमं आशवें चाजिरायं च नमः शीप्तियाय च शीभ्याय च नमं ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च॥५॥

नमों ज्येष्ठायं च किन्छायं च नमेः पूर्वजायं चापर्जायं च नमों मध्यमायं चापगल्भायं च नमों जघन्यांय च बुध्नियाय च नमः सोभ्यांय च प्रतिस्यांय च नमो याम्यांय च क्षेम्यांय च नमं उर्व्यांय च खल्यांय च नमः श्लोक्यांय चावसान्यांय च नमो वन्यांय च कक्ष्यांय च नमः श्रुवायं च प्रतिश्रुवायं च नमं आशुषंणाय चाशुरंथाय च नमः शूरांय चावभिन्दते च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमो बिल्मिने च कव्चिने च नमः श्रुतायं च श्रुतसेनायं च॥६॥

नमों दुन्दुभ्यांय चऽऽहन्न्यांय च नमों धृष्णवें च प्रमृशायं च नमों दूतायं च प्रहिंताय च नमों निष्क्रिणें चेष्धिमतें च नमंस्तीक्ष्णेषंवे चऽऽयुधिनें च नमेः स्वायुधायं च सुधन्वंने च नमः स्रुत्यांय च पथ्यांय च नमेः काट्यांय च नीप्यांय च नमः सूद्यांय च सर्स्यांय च नमों नाद्यायं च वैश्वन्तायं च नमः कूप्यांय चाव्ट्यांय च नमो वर्ष्यांय चाव्र्ष्यायं च नमों मेघ्यांय च विद्युत्यांय च नमें ईप्रियांय चऽऽतप्यांय च नमो वात्यांय च रेष्मियाय च नमों वास्त्व्यांय च वास्तुपायं च॥७॥ नमः सोमाय च रुद्रायं च नमंस्ताम्रायं चारुणायं च नमंः शङ्गायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों अग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमों हुन्ने च हनींयसे च नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमंस्ताराय नमः शम्भवं च मयोभवं च नमः शङ्करायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतंराय च नम्स्तीर्थ्याय च कूल्यांय च नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरंणाय चोत्तरंणाय च नमः आतार्याय चऽऽलाद्यांय च नमः शष्यांय च फेन्यांय च नमः सिक्त्यांय च प्रवाह्यांय च ॥८॥

नमं इरिण्याय च प्रपृथ्याय च नमः कि शिलायं च क्षयंणाय च नमः कपर्दिनं च पुलस्तयं च नमो गोष्ठ्याय च गृह्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमः काट्याय च गहरेष्ठायं च नमो हद्य्याय च निवेष्य्याय च नमः पाश्सव्याय च रजस्याय च नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमो लोप्याय चोलुप्याय च नमं ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमं पुर्णाय च पर्णशृद्यांय च नमों ऽपगुरमांणाय चाभिघ्नते च नमं आख्खिदते चं प्रिख्खिदते च नमों वः किरिकेभ्यों देवाना ह हदयेभ्यो नमों विक्षीणकेभ्यो नमों विचिन्वत्केभ्यो नमं आनिरहतेभ्यो नमं आमीवत्केभ्यः॥९॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिंद्रज्ञीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एंषां किं चनऽऽमंमत्॥ या तें रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसें॥ इमार रुद्रायं तुवसें कपूर्दिनें क्षयद्वीराय प्रभेरामहे मृतिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामें अस्मिन्ननांतुरम्॥ मृडा नों रुद्रोत नो मयंस्कृषि क्षयद्वीराय नमंसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुंरायजे पिता तदंश्याम तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नों महान्तंमुत मा नों अर्भुकं मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥ मा नंस्तोके तनये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितो वंधीर्हिवष्मंन्तो नमंसा विधेम ते॥ आ्रात्तं गोघ्न उत पूरुष्घे क्षयद्वीराय सुम्रम्समे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रह्मधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हां॥ स्तुहि श्रुतं गर्तुसद् युवानं मृगं न भीममुंपहलुमुग्रम्। मृडा जीरेत्रे रुद्र स्तवानो अन्यं ते अस्मन्नि वंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मघवंद्र्यस्तनुष्व मीढ्वंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीढुंष्टम शिवंतम शिवो नंः सुमनां भव। परमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आ चंर पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद विलोहित नमंस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र १ हेतयोऽन्यमस्मन्नि वंपन्तु ताः॥ सहस्रांणि सहस्रधा बांहुवोस्तवं हेतयः। तासामीशांनो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥१०॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याँम्। तेषा र सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ अस्मिन् मंहृत्यंर्णवेँऽन्तरिक्षे भवा अधि॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शुर्वा अधः,

क्षंमाचराः॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्५ रुद्रा उपंश्रिताः॥ ये वृक्षेषुं सस्पिञ्जरा नीलंग्रीवा विलोहिताः॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपूर्दिनः॥ ये अन्नेषु विविध्यंन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्॥ ये पथां पंथिरक्षंय ऐलबृदा यव्युधंः॥ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावंन्तो निषङ्गिणंः॥ य एतावंन्तश्च भूया रसश्च दिशों रुद्रा विंतस्थिरे॥ तेषा ५ सहस्रयोजनेऽव धन्वांनि तन्मसि॥ नमों रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येंऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामन्नं वातों वर्षमिषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भें दधामि॥११॥

[त्र्यंम्बकं यजामहे सुग्नियं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव् बन्धनान्मृत्योर्मृक्षीय माऽमृतात्॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओष्धीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥ तमृष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वंस्य क्षयंति भेषजस्यं। (ऋक्) यक्ष्वामहे सौमन्सायं रुद्रं नमोंभिर्देवमसुंरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो भगवान्यं मे भगवत्तरः। अयं मै विश्वभैषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

ये ते सहस्रंम्युतं पाशा मृत्यो मर्त्यांय हन्तंवे। तान् यज्ञस्यं मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि॥]

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



॥ चमकप्रश्नः॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसेमा वंधन्तु वां गिरंः। द्युम्नैर्वाजेंभिरागंतम्॥ वाजंश्व मे प्रस्वर्श्व मे प्रयंतिश्व मे प्रसितिश्व मे धीतिश्वं मे ऋतुंश्व मे स्वरंश्व मे श्लोकंश्व मे श्रावर्श्व मे श्रुतिंश्व मे ज्योतिंश्व मे सुवंश्व मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽस्ंश्च मे चित्तं च म् आधीतं च मे वाक्रं मे मनंश्च मे चक्षुंश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षंश्च मे बलं च म् ओजंश्च मे सहंश्च म् आयुंश्च मे जरा च म आत्मा च मे त्नूर्श्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गांनि च मेऽस्थानि च मे परूर्षि च मे शरीराणि च मे॥

यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियों रुद्रो महर्षिः। हिर्ण्यगर्भं पंश्यत जायंमान् स नो देवः शुभया स्मृत्याः संयुनक्तु॥

अनेन प्रथम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>महादेवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

ज्यैष्ठमं च म् आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमंश्च मेऽम्मंश्च मे जेमा चं मे मिहुमा चं मे विर्मा चं मे प्रिथमा चं मे वृष्मा चं मे द्राघुया चं मे वृद्धं चं मे वृद्धिंश्च मे सृत्यं चं मे श्रद्धा चं मे जगंच मे धनं च मे वशंश्च मे त्विषिश्च मे श्रीडा चं मे मोदंश्च मे जातं चं मे जिन्ष्यमाणं च मे सूक्तं चं मे सुकृतं चं मे वित्तं चं मे वेद्यं च मे भूतं चं मे भविष्यचं मे सुगं चं मे सुपर्थं च म ऋद्धं चं म ऋद्धिंश्व मे कृतं चं मे कृतिंश्व मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥

यस्मात्परं नापर्मस्ति किश्चिद्यस्मान्नाणीयो न ज्यायौस्ति किश्चित्।

वृक्ष इंव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येक्स्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण् सर्वम्॥ अनेन द्वितीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः शिवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥२॥

शं चं में मयंश्व में प्रियं चं मेऽनुकामश्चं में कामंश्व में सौमनसश्चं में भूद्रं चं में श्रेयंश्व में वस्यंश्व में यशंश्व में भगंश्व में द्रविणं च में युन्ता चं में धूर्ता चं में क्षेमंश्व में धृतिश्व में विश्वं च में महंश्व में सुविचं में ज्ञात्रं च में सूश्चं में प्रसूश्वं में सीरं च में लयश्चं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनांमयच में जीवातुंश्व में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृत्रं च मेऽभंयं च में सुगं चं में शर्यनं च में सूषा चं मे सुदिनं च मे॥

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैक अमृत्त्वमांनृशुः। परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजंदेतद्यतंयो विशन्ति॥ अनेन तृतीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥३॥

ऊर्क मे सूनृतां च मे पयंश्व मे रसंश्व मे घृतं चं मे मधुं च मे सिग्धंश्व मे सिपीतिश्व मे कृषिश्वं मे वृष्टिश्व मे जैत्रं च म औद्धिंद्यं च मे रियश्वं मे रायंश्व मे पूष्टं चं मे पृष्टिंश्व मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयंश्व मे पूर्णं चं मे पूर्णतंरं च मेऽक्षिंतिश्व मे कूयंवाश्व मेऽत्रं च मेऽक्षंच मे ब्राह्मंश्व मे यवांश्व मे माषांश्व मे तिलांश्व मे मुद्राश्वं मे खल्वांश्व मे गोधूमांश्व मे मुसुरांश्व मे प्रियङ्गंवश्व मेऽणंवश्व मे श्यामकांश्व मे नीवारांश्व मे॥

वेदान्तविज्ञान्स्निश्चितार्थाः सन्त्रांस योगाद्यतंयः शुद्धसत्त्वाः। ते ब्रंह्मलोके तु पराँन्तकाले परांमृतात्परिंमुच्यन्ति सर्वे॥ अनेन चतुर्थ-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः शङ्करः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥४॥

अश्मां च मे मृत्तिंका च मे गिरयंश्च मे पर्वताश्च मे सिकंताश्च मे वनस्पतंयश्च मे हिरंण्यं च मेऽयश्च मे सीसं च मे त्रपुंश्च में श्यामं चं में लोहं चं में ऽग्निश्चं म आपंश्च में वीरुधंश्च म ओर्षधयश्च मे कृष्टपच्यं चे मेऽकृष्टपच्यं चे मे ग्राम्यार्श्च मे पशर्व आरण्याश्चं यज्ञेनं कल्पन्तां वित्तं चं मे वित्तिंश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे वस् च मे वस्तिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इतिश्च मे गतिश्च मे॥ दहं विपापं पुरमें ऽश्मभूतं यत्पुंण्डरीकं पुरमध्यस् इस्थम्। तत्रापि दहं गगनं विशोकस्तस्मिन् यदन्तस्तदुपांसितव्यम्॥ अनेन पश्चम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः नीललोहितः स्प्रीतः स्प्रसन्नो वरदो भवतु॥५॥

अग्निश्चं म् इन्द्रंश्च मे सोमंश्च म् इन्द्रंश्च मे सिवृता चं म्

इन्द्रंश्च मे सरंस्वती च म इन्द्रंश्च मे पूषा चं म इन्द्रंश्च मे वृह्स्पतिश्च म इन्द्रंश्च मे मित्रश्चं म इन्द्रंश्च मे वरुणश्च म इन्द्रंश्च मे खणां च म इन्द्रंश्च मे धाता चं म इन्द्रंश्च मे विष्णुंश्च म इन्द्रंश्च मेऽश्विनौं च म इन्द्रंश्च मे मुरुतंश्च म इन्द्रंश्च मे विश्वं च मे देवा इन्द्रंश्च मे पृथिवी चं म इन्द्रंश्च मे प्रिन्तरिक्षं च म इन्द्रंश्च मे द्रोश्चं म इन्द्रंश्च मे द्रांश्च म इन्द्रंश्च मे पूर्धा चं म इन्द्रंश्च मे प्रजापंतिश्च म इन्द्रंश्च मे॥

यो वेदादौ स्वंरः प्रोक्तो वेदान्तें च प्रतिष्ठिंतः। तस्यं प्रकृतिंलीनस्य यः परंः स महेश्वंरः॥ अनेन षष्ठम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>ईशानः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥६॥

अर्शुश्चं मे र्श्मिश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपार्शुश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्तश्चं मे मृन्थी चं म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वान्रश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्यांश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वृतीयांश्च मे माह्नेन्द्रश्च म आदित्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पौष्णश्च मे पात्नीवृतश्च मे हारियोजनश्च मे॥ सद्योजातं प्रंपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।

भ्वे भंवे नाति भवे भवस्व माम्। भ्वोद्भवाय नर्मः॥ अनेन सप्तम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>विजयः</u> सुप्रीतः

सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥७॥

इध्मश्चं मे बहिश्चं मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्त्रचंश्च मे चम्साश्चं मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वाश्चं मेऽधिषवंणे च मे द्रोणकलृशश्चं मे वायव्यांनि च मे पूतभृचं म आधवनीयंश्च म आग्नींग्नं च मे हिव्धांनं च मे गृहाश्चं मे सदंश्च मे पुरोडाशांश्च मे पचताश्चं मेऽवभृथश्चं मे स्वगाकारश्चं मे॥

वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालाय नमः कलंविकरणाय नमो बलंविकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥ अनेन अष्टम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>भीमः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥८॥

अग्निश्चं मे घर्मश्चं मेऽर्कश्चं मे सूर्यश्च मे प्राणश्चं मेऽश्वमेधश्चं मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्चं मे शक्चंरीर्ङ्गुलंयो दिशंश्च मे यज्ञेनं कल्पन्तामृक्चं मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यज्ञंश्च मे दीक्षा चं मे तपश्च म ऋतुश्चं मे व्रतं चं मेऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृंहद्रथन्तरे चं मे यज्ञेनं कल्पेताम्॥

अघोरैंभ्योऽथ् घोरेंभ्यो घोर्घोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्व्शर्वेभ्यो नमंस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ अनेन नवम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>देवदेवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥९॥

गर्भांश्च मे वृत्साश्चं मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पश्चांविश्च मे पश्चावी चं मे त्रिवृत्सश्चं मे त्रिवृत्सा चं मे तुर्यवाचं मे तुर्यौही चं मे पष्टवाचं मे पष्टौही चं म उक्षा चं मे वृशा चं म ऋष्भश्चं मे वेहचं मेऽनुङ्वां चं मे धेनुश्चं म् आयुर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतामपानो यज्ञेनं कल्पतां व्यानो यज्ञेनं कल्पतां चक्षुंर्यज्ञेनं कल्पता्ड् श्रोत्रं यज्ञेनं कल्पतां मनों यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतां यज्ञो यज्ञेनं कल्पताम्॥

तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥

अनेन दशम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>भवोद्भवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१०॥

एकां च मे तिस्रश्चं मे पश्चं च मे स्प्त चं मे नवं च म् एकांदश च मे त्रयोंदश च मे पश्चंदश च मे स्प्तदंश च मे नवंदश च म् एकंवि॰शतिश्च मे त्रयोंवि॰शतिश्च मे पश्चंवि॰शतिश्च मे स्प्तवि॰शतिश्च मे नवंवि॰शतिश्च म् एकंति॰शच मे त्रयंस्त्रि॰शच मे चतंस्रश्च मेऽष्टौ चं मे द्वादंश च मे षोडंश च मे वि॰शतिश्च मे चतुंविं॰शतिश्च मेऽष्टावि॰शितिश्च मे द्वातिश्च मे पद्वि॰शितिश्च मे

चत्वारि १ शर्च मे चतुं श्वत्वारि १ शर्च मे ऽष्टाचंत्वारि १ शर्च मे वार्जश्च प्रस्वश्चांपि जश्च ऋतुंश्च सुवंश्च मूर्धा च् व्यश्चियश्चान्त्यायनश्चान्त्यंश्च भौवनश्च भुवं नश्चाधिपतिश्च॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्वह्मणो-ऽधिपतिर्ब्वह्मां शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ अनेन एकादश-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः आदित्यात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवत्॥११॥

[इडां देवहूर्मनुंर्यज्ञनीर्बृह्स्पतिंरुक्थामदानिं शश्सिष्द्विश्वेंदेवाः सूँक्तवाचः पृथिंवि मातुर्मा मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जिन्छे मधुं वक्ष्यामि मधुं विद्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यासश् शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अंवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥]

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ रुद्रपद्पाठः ॥

ॐ। गणानाम्। त्वा। गुणपंतिमितिं गुण-पतिम्। हवामुहे। कविम्। कवीनाम्। उपमश्रंवस्तम्मित्युंपुमश्रंवः-तुमुम्॥ ज्येष्ठराजमितिं ज्येष्ठ-राजम्ं। ब्रह्मणाम्। ब्रह्मणः। पते। एतिं। नः। शृण्वन्। ऊतिभिरित्यूति-भिः। सीद्। सादंनम्॥ नर्मः। ते। रुद्र। मन्यवैं। उतो इतिं। ते। इषेवे। नर्मः॥ नर्मः। ते। अस्तु। धन्वंने। बाहुभ्यामितिं बाहु-भ्याम्। उत। ते। नमंः॥ या। ते। इषुंः। शिवतमेतिं शिव-तमा। शिवम्। बभूवं। ते। धनुं:॥ शिवा। शरव्यां। या। तवं। तयां। नः। रुद्र। मृडय॥ या। ते। रुद्र। शिवा। तुनूः। अघोरा। शन्तंमयेति शम्-तमया। गिरिंशन्तेति गिरिं-शन्त। अभीतिं। चाकशीहि॥ याम्। इषुम्। गिरिशन्तेति गिरि-शन्त। हस्तै। (8)

बिर्मर्षि। अस्तंवे॥ शिवाम्। गिरित्रेतिं गिरि-त्र। ताम्। कुरु। मा। हिर्सीः। पुरुषम्। जगत्॥ शिवेनं। वर्चसा। त्वा। गिरिंश। अच्छां। वृदामसि॥ यथां। नः। सर्वम्ं। इत्। जगंत्। अयक्ष्मम्। सुमना इति सु-मनाः । असंत्॥ अधीतिं। अवोचत्। अधिवक्तेत्यंधि-वक्ता। प्रथमः। दैव्यः। भिषक्॥ अहीन्। च। सर्वान्। जम्भयन्। सर्वाः। च। यातुधान्यं इति यातु-धान्यः॥ असौ। यः। ताम्रः। अरुणः। उत। बभुः। सुमङ्गल इति सु-मङ्गलः॥ ये। च। इमाम्। रुद्राः। अभितः। दिक्षु। (२)

श्रिताः। सहस्रश इति सहस्र-शः। अवेति। एषाम्। हेर्डः। ईमहे॥ असौ। यः। अवसर्पतीत्यंव-सर्पति। नीलंग्रीव इति नीलं-ग्रीवः। विलोहित इति वि-लोहितः॥ उत। एनम्। गोपा इति गो-पाः। अदृशन्। अदृशन्। उदहार्य इत्युंद-हार्यः॥ उत। एनम्। विश्वाः। भूतानि। सः। दृष्टः। मृड्याति। नः॥ नमः। अस्तु। नीलंग्रीवायेति नीलं-ग्रीवाय। सहस्राक्षायेति सहस्र-अक्षाये। मीढुषे॥ अथो इति। ये। अस्य। सत्वानः। अहम्। तेभ्यः। अकर्म्। नमः॥ प्रेति। मृश्च। धन्वंनः। त्वम्। अहम्। तेभ्यः। अकर्म्। नमः॥ प्रेति। मृश्च। धन्वंनः। त्वम्।

उभयोः। आर्बियोः। ज्याम्॥ याः। चृ। ते। हस्तैं। इषंवः। (३)

परेति। ताः। भगव इति भग-वः। वपु॥ अवतत्येत्यव-तत्यं। धनुंः। त्वम्। सहंस्राक्षेति सहंस्र-अक्ष। शतंषुध इति शतं-इषुधे॥ निशीर्येतिं नि-शीर्यं। शल्यानांम्। मुखां। शिवः। नः। सुमना इति सु-मनाः। भव॥ विज्यमिति वि-ज्यम्। धनुः। कपर्दिनंः। विशंल्य इति वि-शल्यः। बाणंवानिति बाणं-वान्। उत्। अनेशन्। अस्य। इषंवः। आभुः। अस्य। निषङ्गिर्थः॥ या। ते। हेतिः। मीढुष्टमेतिं मीढुः-तम्। हस्तें। बभूवं। ते। धर्नुः॥ तयौ। अस्मान्। विश्वतंः। त्वम्। अयक्ष्मयौ। परीति। भुज्॥ नर्मः। ते। अस्तु। आयुंधाय। अनांततायेत्यनां-तृताय। भृष्णवें॥ उभाभ्यांम्। उता ते। नमंः। बाहुभ्यामितिं बाहु-भ्याम्। तर्व। धन्वने॥ परीति। ते। धन्वनः। हेतिः। अस्मान्। वृण्कु। विश्वतं:॥ अथो इतिं। यः। इषुधिरितींषु-धिः। तवं। आरे। अस्मत्। नीतिं। धेहि। तम्॥ (४)

नमंः। हिरंण्यबाहव इति हिरंण्य-बाहवे। सेनान्यं इति सेना-न्यै। दिशाम्। च। पत्ये। नर्मः। नर्मः। वृक्षेभ्यः। हरिकेशेभ्य इति हरि-केशेभ्यः। पशूनाम्। पत्ये। नर्मः। नमंः। सस्पिञ्जराय। त्विषीमत् इति त्विषी-मृते। पृथीनाम्। पतंये। नमंः। नमंः। बुभुशायं। विव्याधिन इतिं वि-व्याधिनैं। अन्नानाम्। पतंये। नर्मः। नर्मः। हरिकेशायेति हरि-केशाय। उपवीतिन इत्युंप-वीतिनैं। पुष्टानाम्। पत्ये। नमं। नमं। भवस्यं। हेत्यै। जगताम्। पत्ये। नमंः। नमंः। रुद्रायं। आतताविन इत्याँ-तताविनें। क्षेत्रांणाम्। पतंये। नमंः। नर्मः। सूतायं। अहंन्त्याय। वनांनाम्। पतंये। नर्मः। नर्मः। (4)

रोहिंताय। स्थपतंये। वृक्षाणांम्। पतंये। नमंः। नमंः। मित्रिणें। वाणिजायं। कक्षांणाम्। पतंये। नमंः। नमंः। भुवन्तयें। वारिवस्कृतायेतिं वारिवः-कृतायं। ओषंधीनाम्। पतंये। नमंः। नमंः। उच्चेर्घांषायेत्युचैः-घोषाय। आक्रन्दयंत इत्यां-क्रन्दयंते। पत्तीनाम्। पतंये। नमंः। नमंः। कृत्स्रवीतायेति कृत्स्र-वीतायं। धावंते। सत्वंनाम्। पतंये। नमंः॥ (६)

नमंः। सहंमानाय। निव्याधिन इतिं नि-व्याधिनैं। आव्याधिनीनामित्यां-व्याधिनीनाम्। पतंये। नमंः। नमंः। ककुभायं। निषङ्गिण इति नि-सङ्गिनैं। स्तेनानाम्। पत्रये। नमंः। नमंः। निषङ्गिण इतिं नि-सङ्गिनें। इषुधिमत इतीषुधि-मतें। तस्कंराणाम्। पतंये। नमंः। नमंः। वश्चंते। परिवर्श्वत इति परि-वर्श्वते। स्तायूनाम्। पत्तये। नर्मः। नमंः। निचेरव इतिं नि-चेरवें। परिचरायेतिं परि-चरायं। अरंण्यानाम्। पतंये। नमंः। नमंः। सृकाविभ्य इतिं सृकावि-भ्यः। जिघा रंसद्भ इति जिघा रंसत्-भ्यः। मुष्णताम्। पतेये। नमंः। नमंः। असिमन्न्य इत्यंसिमत्-भ्यः। नक्तम्। चरंद्र्य इति चरंत्-भ्यः। प्रकृन्तानामितिं प्र-कृन्तानाम्। पतंये। नर्मः। नर्मः। उष्णीषिणै। गिरिचरायेतिं गिरि-चरायं। कुलुश्चानाम्। पतंये। नर्मः। नर्मः। (७)

इषुंमद्भा इतीषुंमत्-भ्यः। धुन्वाविभ्य इति धन्वावि-भ्यः।

च। वः। नर्मः। नर्मः। आतन्वानेभ्य इत्यां-तुन्वानेभ्यः। प्रतिद्धांनेभ्य इति प्रति-द्धांनेभ्यः। च। वः। नर्मः। नमंः। आयच्छंन्च इत्यायच्छंत्-भ्यः। विसृजन्च इतिं विसृजत्-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। अस्यन्ध्र इत्यस्यंत्-भ्यः। विध्यंत्र्य इति विध्यंत्-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। आसीनेभ्यः। शयानेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। स्वपद्ध इति स्वपत्-भ्यः। जाग्रंद्ध इति जाग्रंत्-भ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। तिष्ठंद्र्य इति तिष्ठंत्-भ्यः। धावंद्र्य इति धावंत्-भ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। सभाभ्यंः। सभापंतिभ्य इति सभापति-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। अश्वेभ्यः। अर्श्वपतिभ्य इत्यर्श्वपति-भ्यः। च। वः। नर्मः॥ (८)

नमंः। आव्याधिनींभ्य इत्यां-व्याधिनींभ्यः। विविध्यंन्तीभ्यः इति वि-विध्यंन्तीभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। उगंणाभ्यः। तृष्ट्तीभ्यंः। च। वः। नमंः। नमंः। गृत्सेभ्यंः। गृत्सपंतिभ्यः इति गृत्सपंति-भ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। व्रातेंभ्यः। व्रातंपतिभ्य इति व्रातंपति-भ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। गुणेभ्यः। गुणपंतिभ्य इति गुणपंति-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। विरूपेभ्यः। विश्वरूपेभ्य इति विश्व-रूपेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। महन्च इति महत्-भ्यः। क्षुष्ठकेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। रथिभ्य इति र्थि-भ्यः। अर्थेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। रथैभ्यः। (९)

रथंपतिभ्य इति रथंपति-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। सेनाभ्यः। सेनानिभ्य इति सेनानि-भ्यः। च। वः। नर्मः। नमंः। क्षुत्तभ्य इति क्षुतृ-भ्यः। सङ्ग्रहीतृभ्य इति सङ्ग्रहीतृ-भ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। तक्षंभ्य इति तक्षं-भ्यः। रथकारेभ्य इति रथ-कारेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। कुलालेभ्यः। कुमरिभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। पुञ्जिष्टेभ्यः। निषादेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। इषुकुद्ध इतीषुकृत्-भ्यः। धन्वकृत्य इति धन्वकृत्-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। मृगयुभ्य इति मृगयु-भ्यः। श्वनिभ्य इति श्वनि-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। श्वभ्य इति श्व-भ्यः। श्वपंतिभ्य इति श्वपंति-भ्यः। च। वः। नर्मः॥ (१०)

नमंः। भ्वायं। च्। रुद्रायं। च। नमंः। श्वायं। च। प्शुपतंय् इतिं पश्-पतंये। च। नमंः। नीलंग्रीवायेति नीलं-ग्रीवाय। च। शितिकण्ठायेतिं शिति-कण्ठांय। च। नमंः। कप्रिंनें। च। व्युप्तकेशायेति व्युप्त-केशाय। च। नमंः। सहस्राक्षायेतिं सहस्र-अक्षायं। च। शृत्यंन्वन् इतिं श्त-धन्वने। च। नमंः। गिरिशायं। च। शिपिविष्टायेतिं शिपि-विष्टायं। च। नमंः। मीद्रुष्टंमायेतिं मीद्रः-त्माय। च। इषुंमत् इतीष्ं-मृते। च। नमंः। हस्वायं। च। वामनायं। च। नमंः। बृह्ते। च। वर्षायसे। च। नमंः। वृद्धायं। च। संवृध्वंन इतिं सम्-वृध्वंन। च। (११)

नर्मः। अग्रियाय। च। प्रथमायं। च। नर्मः। आशवें। च। अजिरायं। च। नर्मः। शीघ्रियाय। च। शीभ्यांय। च। नर्मः। ऊर्म्याय। च। अवस्वन्यांयेत्यंव-स्वन्यांय। च। नर्मः। स्रोतस्याय। च। द्वीप्याय। च॥ (१२)

नर्मः। ज्येष्ठायं। च्। क्निष्ठायं। च। नर्मः। पूर्वजायेतिं पूर्व-जायं। च। अपुरुजायेत्यंपर-जायं। च। नर्मः। मध्यमायं। च। अपगल्भायेत्यंप-गल्भायं। च। नमंः। ज्घन्यांय। च। बुध्नियाय। च। नमंः। सोभ्यांय। च। प्रतिसर्यायितिं प्रति-सर्याय। च। नमंः। याम्यांय। च। क्षेम्यांय। च। नमंः। उर्वर्याय। च। खल्यांय। च। नमंः। श्लोक्यांय। च। अवसान्यांयेत्यंव-सान्यांय। च। नमंः। वन्यांय। च। कक्ष्यांय। च। नमंः। श्रुवायं। च। प्रतिश्रुवायेतिं प्रति-श्रुवायं। च। (१३)

नमंः। आशुषेणायेत्याशु-सेनाय। च। आशुरंथायेत्याशु-रथाय। च। नमंः। शूराय। च। अविभिन्दत इत्यंव-भिन्दते। च। नमंः। वर्मिणे। च। वरूथिने। च। नमंः। बिल्मिने। च। क्वचिने। च। नमंः। श्रुतायं। च। श्रुतसेनायेति श्रुत-सेनायं। च॥ (१४)

नर्मः। दुन्दुभ्याय। च। आह्नन्यायेत्याँ-ह्नन्याय। च। नर्मः। धृष्णवेँ। च। प्रमृशायेतिं प्र-मृशायं। च। नर्मः। दूतायं। च। प्रहितायेति प्र-हिताय। च। नर्मः। निषक्षिण इतिं नि-सङ्गिनै।

च। इषुधिमत् इतीषुधि-मतें। च। नमंः। तीक्ष्णेषंव इतिं तीक्ष्ण-इषवे। च। आयुधिनें। च। नमंः। स्वायुधायेतिं सु-आयुधायं। च। सुधन्वंन इतिं सु-धन्वंने। च। नमंः। सुत्यांय। च। पथ्यांय। च। नमंः। काट्यांय। च। नीप्यांय। च। नमंः। सूद्यांय। च। सर्स्यांय। च। नमंः। नाद्यायं। च। वैश्वन्तायं। च। (१५)

नर्मः। कूप्याय। च। अवट्याय। च। नर्मः। वर्ष्याय। च। अवर्ष्याय। च। नर्मः। मेघ्याय। च। विद्युत्यायितिं वि-द्युत्याय। च। नर्मः। ईप्रियाय। च। आतप्यायत्या-तप्याय। च। नर्मः। वात्याय। च। रेष्मियाय। च। नर्मः। वास्तव्याय। च। वास्तुपायेतिं वास्तु-पायं। च॥ (१६)

नर्मः। सोमाय। च। रुद्रायं। च। नर्मः। ताम्रायं। च। अरुणायं। च। नर्मः। शङ्गायं। च। पशुपतंय इति पशु-पतंये। च। नर्मः। उग्रायं। च। भीमायं। च। नर्मः। अग्रेवधायेत्यंग्रे-वधायं। च। दूरेवधायेति दूरे-वधायं। च। नर्मः। हन्ने। च। हनीयसे। च। नर्मः। वृक्षेभ्यः। हरिकेशेभ्य

इति हरि-केशेभ्यः। नमंः। तारायं। नमंः। शम्भव इतिं शम्-भवें। च। मयोभव इतिं मयः-भवें। च। नमंः। शङ्करायेतिं शम्-करायं। च। मयस्करायेतिं मयः-करायं। च। नमंः। शिवायं। च। शिवतंरायेतिं शिव-त्राय। च। (१७)

नमः। तीर्थ्याय। च। कूल्याय। च। नमः। पार्याय। च। अवार्याय। च। नमः। प्रतरंणायेतिं प्र-तरंणाय। च। उत्तरंणायेत्युंत्-तरंणाय। च। नमः। आतार्यायेत्याँ-तार्याय। च। आलाद्यायेत्याँ-लाद्याय। च। नमः। शष्य्याय। च। फेन्याय। च। नमः। सिक्त्याय। च। प्रवाह्यायेतिं प्र-वाह्याय। च॥ (१८)

नर्मः। इरिण्याय। च। प्रपथ्यायिति प्र-पथ्याय। च। नर्मः। किर्शिलायं। च। क्षयंणाय। च। नर्मः। कपर्दिनैं। च। पुलस्तयैं। च। नर्मः। गोष्ठ्यायेति गो-स्थ्याय। च। गृह्याय। च। नर्मः। तल्प्याय। च। गेह्याय। च। नर्मः। काट्याय। च। गृह्वरेष्ठायेति गह्वरे-स्थायं। च। नर्मः। हृद्य्याय। च। निवेष्यायिति नि-वेष्याय। च। नर्मः। पार्स्याय। च। रजस्याय। च। नर्मः। शुष्क्याय। च। हृरित्याय। च। नर्मः। लोप्याय। च। उलप्याय। च। (१९)

नर्मः। ऊर्व्याय। च। सूर्म्याय। च। नर्मः। पुण्याय। च। पर्णशद्यांयेतिं पर्ण-शद्यांयः। च। नर्मः। अपगुरमांणायेत्यंप-गुरमाणाय। च। अभिघ्नत इत्यंभि-घ्नते। च। नर्मः। आख्खिदत इत्याँ-खिदते। च। प्रख्खिदत इतिं प्र-खिदते। च। नर्मः। वः। किरिकेभ्यः। देवानाम्। हृदंयेभ्यः। नर्मः। विक्षीणकेभ्य इति वि-क्षीणकेभ्यः। नर्मः। विचिन्वत्केभ्य इति वि-चिन्वत्केभ्यः। नर्मः। आनिर्हतेभ्य इत्यांनिः-हतेभ्यः। नर्मः। आमीवत्केभ्य इत्याँ-मीवत्केभ्यः॥ (२०) द्रापें। अन्धंसः। पते। दरिंद्रत्। निलंलोहितेति नीलं-लोहित्॥ एषाम्। पुरुषाणाम्। एषाम्। पृशूनाम्। मा। भेः। मा। अरः। मो इति। एषाम्। किम्। चन। आमुमुत्॥ या। ते। रुद्र। शिवा। तनूः। शिवा। विश्वाहंभेषजीतिं विश्वाहं-भेषजी॥ शिवा। रुद्रस्यं। भेषजी। तयाँ। नः। मृड।

जीवसें॥ इमाम्। रुद्रायं। त्वसें। कुप्रिनें। क्ष्यद्वीरायेतिं क्षयत्-वीराया प्रेति। भरामहे। मृतिम्॥ यथां। नः। शम्। असंत्। द्विपद् इतिं द्वि-पदें। चतुंष्पद् इति चतुं:-पदे। विश्वम्। पृष्टम्। ग्रामें। अस्मिन्। (२१)

अनांतुर्मित्यनां-तुर्म्॥ मृडा। नः। रुद्र। उत। नः। मर्यः। कृिष्। क्षयद्वीरायिति क्षयत्-वीरायः। नर्मसा। विधेमः। ते॥ यत्। शम्। च। योः। च। मर्नुः। आयज इत्यां-यजे। पिता। तत्। अश्यामः। तवं। रुद्र। प्रणीताविति प्र-नीतौ॥ मा। नः। महान्तम्। उत। मा। नः। अर्भकम्। मा। नः। उक्षंन्तम्। उत। मा। नः। उक्षितम्॥ मा। नः। वधीः। पितरम्। मा। उत। मातरम्। प्रियाः। मा। नः। तनुवंः। (२२)

रुद्र। रीरिषः॥ मा। नः। तोके। तनये। मा। नः। आयुंषि। मा। नः। गोषुं। मा। नः। अश्वेषु। रीरिषः॥ वीरान्। मा। नः। रुद्र। भामितः। वधीः। ह्विष्मंन्तः। नमंसा। विधेम्। ते॥ आरात्। ते। गोघ्न इतिं गो-घ्ने। उत। पूरुष्घ्न इतिं पूरुष-घ्ने। क्ष्यद्वीरायेतिं क्षयत्-वीराय। सुम्नम्। अस्मे इतिं। ते। अस्तु॥ रक्षां। च। नः। अधीतिं। च। देव। ब्रूहि। अधां। च। नः। शर्म। यच्छ। द्विबर्हा इति द्वि-बर्हाः॥ स्तुहि। (२३) श्रुतम्। गर्तसदमितिं गर्त-सदम्। युवानम्। मृगम्। न। भीमम्। उपहतुम्। उग्रम्॥ मृडा। जरित्रे। रुद्र। स्तर्वानः। अन्यम्। ते। अस्मत्। नीति। वपन्तु। सेनाः॥ परीति। नः। रुद्रस्यं। हेतिः। वृण्कु। परीतिं। त्वेषस्यं। दुर्मतिरितिं दुः-मतिः। अघायोरित्यंघा-योः॥ अवेतिं। स्थिरा। मघवंद्र्य इति मुघवंत्-भ्यः। तुनुष्व। मीद्धः। तोकार्य। तनयाय। मृडय॥ मीढुंष्टमेति मीढुं-तम। शिवंतमेति शिवं-तम। शिवः। नुः। सुमना इति सु-मनौः। भव॥ परमे। वृक्षे। आयुंधम्। निधायेतिं नि-धायं। कृत्तिम्। वसानः। एतिं। चर। पिनांकम्। (२४)

बिभ्रंत्। एतिं। गृहि॥ विकिरिदेति वि-किरिद्। विलोहितेति वि-लोहित्। नर्मः। ते। अस्तु। भृगव इति भग-वः॥ याः। ते। सहस्रम्। हेतयः। अन्यम्। अस्मत्। नीतिं। वपन्तु। ताः॥ सहस्राणि। सहस्रधेतिं सहस्र-धा। बाहुवोः। तवं। हेतयः॥ तासाँम्। ईशांनः। भगव इति भग-वः। प्राचीनां। मुखां। कृधि॥ (२५)

सहस्रांणि। सहस्रश इतिं सहस्र-शः। ये। रुद्राः। अधीतिं। भूम्याम्॥ तेषाम्। सहस्रयोजन इति सहस्र-योजने। अवेति। धन्वांनि। तन्मसि॥ अस्मिन्। महति। अर्णवे। अन्तरिक्षे। भवाः। अधि॥ नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। शितिकण्ठा इति शिति-कण्ठाः। शर्वाः। अधः। क्षमाचराः॥ नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। शितिकण्ठा इतिं शिति-कण्ठाः। दिवम्। रुद्राः। उपंश्रिता इत्युपं-श्रिताः॥ ये। वृक्षेषुं। सस्पिञ्जंराः। नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। विलोहिता इति वि-लोहिताः॥ ये। भूतानांम्। अधिपतय इत्यधि-पतयः। विशिखास इति वि-शिखासंः। कपर्दिनंः॥ ये। अन्नेषु। विविध्यन्तीतिं वि-विध्यन्ति। पात्रेषु। पिबंतः। जनान्॥ ये। पथाम्। पथिरक्षंय इति पथि-रक्षयः। ऐलबृदाः। यव्युर्धः॥ ये। तीर्थानि। (२६)

प्रचर्न्तीति प्र-चरन्ति। सृकावन्त इति सृका-वन्तः। निषङ्गिण इति नि-सङ्गिनः॥ ये। एतावन्तः। च। भूयार्थसः। च। दिशंः। रुद्राः। वितस्थिर् इति वि-तस्थिरे॥ तेषाँम्। सहस्रयोजन इति सहस्र-योजने। अवेति। धन्वांनि। तन्मसि॥ नमः। रुद्रेभ्यः। ये। पृथिव्याम्। ये। अन्तरिक्षे। ये। दिवि। येषाँम्। अन्नम्ँ। वातः। वर्षम्। इषंवः। तेभ्यः। दशं। प्राचीः। दशं। दक्षेणा। दशं। प्रतिचीः। दशं। उदीचीः। दशं। ऊर्ध्वाः। तेभ्यः। नमः। ते। नः। मृड्यन्तु। ते। यम्। द्विष्मः। यः। च। नः। द्वेष्टिं। तम्। वः। जम्भे। द्धामि॥ (२७)

त्र्यंम्बक्मिति त्रि-अम्बक्म्। यजामहे। सुगन्धिमिति सुगन्धिम्। पुष्टिवर्धनमिति पुष्टि-वर्धनम्॥ उर्वारुकम्। इव।
बन्धनात्। मृत्योः। मुक्षीय। मा। अमृतात्। यो। रुद्रः।
अग्रौ। यः। अप्स्वत्यप्-सु। यः। ओषंधीषु। यः। रुद्रः।
विश्वा। भुवना। आविवेशेत्या-विवेशं। तस्मै। रुद्रायं। नमंः।
अस्तु॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ मन्त्रपुष्पम्॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरेरङ्गैंस्तुष्टुवाः संस्तुनूभिः। व्यशेम देविहेतं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नंः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिंदिधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

योऽपां पुष्पं वेदे। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पंवान् प्रजावान् पशुमान् भंवति। य एवं वेदे। योऽपामायतेनं वेदे। आयतेनवान् भवति। अग्निर्वा अपामायतेनम्। आयतेनवान् भवति। योऽग्नेरायतेनं वेदे॥

आयतंनवान् भवति। आपो वा अग्नेरायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। वायुर्वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यो वायोरायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति॥ आपो वै वायोरायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। असौ वै तपंत्रपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। योऽमुष्य तपंत आयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वा अमुष्य तपंत आयतंनम्॥

आयतनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदे। आयतंनवान् भवति। चन्द्रमा वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यश्चन्द्रमंस आयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै चन्द्रमंस आयतंनम्। आयतंनवान् भवति॥ य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। नक्षंत्राणि वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यो नक्षंत्राणामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै नक्षेत्राणामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं॥८२॥ योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। पर्जन्यो वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यः पर्जन्यस्यऽऽयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै पर्जन्यंस्यऽऽयतेनम्।

आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं॥ आयतंनवान् भवति। संवृत्सरो वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यः संवृत्सरस्यऽऽयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वे संवृत्सरस्यऽऽयतंनम्। आयतंनवान् भवति। आपो वे संवृत्सरस्यऽऽयतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽप्सु नावं प्रतिष्ठितां वेदं। प्रत्येव तिष्ठिति॥

राजाधिराजायं प्रसह्यसाहिनैं। नमीं वयं वैंश्रवणायं कुर्महे। स मे कामान्कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैंश्रवणो दंदातु। कुबेरायं वेश्रवणायं। महाराजाय नमः॥॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः॥

॥ दशशान्तयः ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरेरङ्गैंस्तुष्टुवाः संस्तुनूभिः। व्यशेम देविहेतं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नंः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥१॥

ॐ नमो ब्रह्मणे नमों अस्त्वग्नये नमंः पृथिव्यै नम् ओषंधीभ्यः। नमों वाचे नमों वाचस्पतंये नमो विष्णंवे बृहते करोमि॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥२॥

नमों वाचे या चोंदिता या चानुंदिता तस्यैं वाचे नमो नमों वाचे नमों वाचस्पतये नम् ऋषिंभ्यो मञ्जकुद्धो मञ्जपितभ्यो मा मामृषंयो मञ्जकृतों मञ्जपतंयः परांदुर्माहमृषींन्मञ्जकृतों मञ्जपतीन्परांदां वैश्वदेवीं वाचंमुद्यास शिवामदंस्तां जुष्टां देवेभ्यः शर्म में द्यौः शर्म पृथिवी शर्म विश्वंमिदं जगंत्। शर्म चन्द्रश्च सूर्यश्च शर्म ब्रह्मप्रजापती। भूतं वंदिष्ये भुवंनं विदिष्ये तेजों विदिष्ये यशों विदिष्ये तपों विदिष्ये ब्रह्मं विदिष्ये सत्यं विदिष्ये तस्मां अहमिदमुंप्स्तरंणमुपंस्तृण उपस्तरंणं मे प्रजाये पशूनां भूयादुप्स्तरंणमृहं प्रजाये पशूनां भूयासुं प्राणांपानौ मृत्योर्मा पातं प्राणांपानौ मा मां हासिष्टं मधुं मिष्ये मधुं जिनिष्ये मधुं विद्यामि मधुं विदिष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यास शृश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥३॥

शं नो वार्तः पवतां मात्रिश्वा शं नंस्तपतु सूर्यः। अहांनिशं भंवन्तु नः श रात्रिः प्रतिधीयताम्। शमुषा नो व्यंच्छतु शमांदित्य उदेतु नः। शिवा नः शन्तंमा भव सुमृडीका सरंस्वति। मा ते व्योम सन्दिशे। इडांये वास्त्वंसि वास्तुमद्वांस्तुमन्तो भूयास्म मा वास्तोंश्छित्स्मह्यवास्तुः स भूयाद्योंऽस्मान्द्वेष्टि यं चं व्यं द्विष्मः। प्रतिष्ठासिं प्रतिष्ठावंन्तो भूयास्म मा प्रंतिष्ठायांश्छित्स्मह्यप्रतिष्ठः स भूयाद्योंऽस्मान्द्वेष्टि यं चं व्यं द्विष्मः। आ वांत वाहि भेषुजं वि वांत वाहि यद्रपंः। त्व॰ हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयंसे। द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा पंरावतः॥

दक्षं मे अन्य आवातु परान्यो वांतु यद्रपः। यद्दो वांतते गृहें ऽमृतंस्य निधिर्हितः। ततों नो देहि जीवसे ततों नो धेहि भेषुजम्। ततों नो मह आवंह वातु आवांतु भेषजम्। शम्भूर्मयोभूर्नो हृदे प्र ण आयू ५ षि तारिषत्। इन्द्रेस्य गृहोंऽसि तं त्वा प्रपंद्ये सगुः सार्श्वः। सह यन्मे अस्ति तेनं। भूः प्रपंद्ये भुवः प्रपंद्ये सुवः प्रपंद्ये भूर्भुवः सुवः प्रपंद्ये वायुं प्रपद्येऽनातां देवतां प्रपद्येऽश्मानमाखणं प्रपंदो प्रजापंतेर्ब्रह्मकोशं ब्रह्म प्रपंद्य ओं प्रपंदो। अन्तरिक्षं म उर्वन्तरं बृहद्ग्रयः पर्वताश्च यया वातंः स्वस्त्या स्वंस्तिमान्तयां स्वस्त्या स्वंस्तिमानंसानि। प्राणांपानौ मृत्योर्मा पातं प्राणापानौ मा मा हासिष्टं मियं मेधां मियं प्रजां मय्यग्निस्तेजों दधातु मियं मेधां मियं प्रजां मयीन्द्रं इन्द्रियं दंधातु मियं मेथां मियं प्रजां मिय सूर्यो भ्राजों

दधातु॥

द्युभिर्क्तुभिः परिपातम्स्मानिरेष्टेभिरिश्वना सौभंगेभिः। तन्नों मित्रो वर्रुणो मामहन्तामिदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः। कयां निश्चित्र आ भुंवदूती सदावृधः सखाँ। कया शिचेष्ठया वृता। कस्त्वां सत्यो मदानां मश्हेष्ठो मत्सदन्धंसः। दृढाचिदारुजे वसुं। अभी षु णः सखीनामिवता जीरितृणाम्। शृतं भवास्यूतिभिः। वयः सुपूर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः। अपं ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुंमुमुग्ध्यंस्मान्निधयेव बद्धान्॥

शं नो देवीरिभष्टंय आपो भवन्तु पीतयें। श्योरिभस्रंवन्तु नः। ईशांना वार्याणां क्षयंन्तीश्चर्षणीनाम्। अपो यांचामि भेषजम्। सुमित्रा न आप ओषंधयः सन्तु दुर्मित्रास्तस्में भूयासुर्यौऽस्मान्द्वेष्टि यं चं व्यं द्विष्मः। आपो हि ष्ठा मंयोभुवस्ता नं ऊर्जे दंधातन। महे रणांय चक्षंसे। यो वंः शिवतंमो रसस्तस्यं भाजयतेह नंः। उश्तीरिंव मातरंः।

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ॥

आपों जनयंथा च नः। पृथिवी शान्ता साग्निनां शान्ता सा में शान्ता श्चरे शमयत्। अन्तरिक्षर शान्तं तद्वायुनां शान्तं तन्में शान्त १ शुच १ शमयतु। द्यौः शान्ता सादित्येनं शान्ता सा में शान्ता शुच र शमयतु। पृथिवी शान्तिंरन्तरिंक्षर शान्तिद्यौः शान्तिर्दिशः शान्तिरवान्तरदिशाः शान्तिरग्निः शान्तिर्वायुः शान्तिरादित्यः शान्तिश्चन्द्रमाः शान्तिर्नक्षेत्राणि शान्तिरापः शान्तिरोषंधयः शान्तिर्वनस्पतंयः शान्तिर्गौः शान्तिरजा शान्तिरश्वः शान्तिः पुरुषः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिं ब्राह्मणः शान्तिः शान्तिं रेव शान्तिः शान्तिं में अस्तु शान्तिः। तयाह । शान्त्या संवंशान्त्या मह्यं द्विपदे चतुंष्पदे च शान्तिं करोमि शान्तिंमें अस्तु शान्तिः। एह श्रीश्च ह्रीश्च धृतिश्च तपों मेधा प्रतिष्ठा श्रद्धा सत्यं धर्मश्चेतानि मोत्तिष्ठन्तुमनूत्तिष्ठन्तु मा मा्ड् श्रीश्च हीश्च धृतिश्च तपो मेधा प्रंतिष्ठा श्रद्धा सत्यं धर्मश्चैतानिं मा मा हांसिषुः। उदायुंषा

स्वायुषोदोषंधीना ५ रसेनोत्पर्जन्यंस्य शुष्मेणोदंस्थाममृता ५ अनुं। तचक्षुंर्देवहितं पुरस्तांच्छुऋमुचरंत्। पश्यंम श्ररदंः शतं जीवेम शरदेः शतं नन्दाम शरदेः शतं मोदाम शरदेः श्तं भवाम श्रारदेः श्तर शृणवाम श्ररदेः शतं प्रब्रवाम शरदेः शतमजीताः स्याम शरदेः शतं ज्योक सूर्यं दशे। य उदंगान्महतोऽर्णवाँद्विभ्राजंमानः सरि्रस्य मध्यात्स मां वृषभो लोहिताक्षः सूर्यो विपश्चिन्मनंसा पुनातु। ब्रह्मणश्चोतंन्यसि ब्रह्मण आणी स्थो ब्रह्मण आवर्पनमसि धारितेयं पृंथिवी ब्रह्मणा मही धारितमेनेन महदन्तरिक्षं दिवं दाधार पृथिवी सदेवां यदहं वेद तदहं धारयाणि मा मद्वेदोऽधिविस्नंसत्। मेधामनीषे माविंशता समीचीं भूतस्य भव्यस्यावंरुध्ये सर्वमायुंरयाणि सर्वमायुंरयाणि। आभिर्गीर्भियंदतों न ऊनमाप्यांयय हरिवो वर्धमानः। यदा स्तोतृभ्यो महिं गोत्रा रुजासिं भूयिष्ठभाजो अधं ते स्याम। ब्रह्म प्रावादिष्म तन्नो मा हांसीत्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥४॥

ॐ सन्त्वां सिश्चामि यजुषां प्रजामायुर्धनं च॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥५॥

शं नों मित्रः शं वर्रणः। शं नों भवत्वर्यमा। शं न् इन्द्रो बृह्स्पतिः। शं नो विष्णुंरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मांसि। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मं विदिष्यामि। ऋतं वंदिष्यामि। सृत्यं वंदिष्यामि। तन्मामंवतु। तद्वक्तारंमवतु। अवंतु माम्। अवंतु वृक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥६॥

ॐ तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञपंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ सह नांववत्। सह नौं भुनक्तः। सह वीर्यं करवावहै। तेज्ञस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥८॥ ॐ सह नांववत्। सह नौं भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेज्ञस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥९॥

ॐ सह नांववत्। सह नौं भुनक्ता सह वीर्यं करवावहै। तेज्ञस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥१०॥